वर्ष 2 | अंक 2 | अप्रैल - जून 2012

कामधेनु

जैन विश्व भारती की गृह पत्रिका

सृजनशील सहयात्रा के संगी

जैन विश्व भारती

आध्यात्मिक ऊर्जा से प्राणवान भारत में अनेक धर्म-संप्रदायों का समागम है, जिनमें एक अतिप्राचीन 'जैन धर्म' भी है। जैन धर्म की एक विकसित शाखा श्वेताम्बर तेरापंथ के आद्य-प्रवर्तक थे आचार्य भिक्षु। आध्यात्मिकतायुक्त आधुनिकता में विश्वास रखने वाले तेरापंथ धर्मसंघ की एक केंद्रीय संस्था जैन विश्व भारती है, जिसकी स्थापना सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई थी।

जैन विश्व भारती तेरापंथ के नौवें अधिशास्ता आचार्य तुलसी के दूरदर्शी चिंतन एवं आचार्य महाप्रज्ञ के प्रज्ञामय रश्मिपुंज का साकार रूप है। इस संस्था की हर इकाई मानव कल्याण के लिए समर्पित है। इसके शक्तिशाली स्तंभ हैं जैन धर्म के अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह जैसे मूल सिद्धांत। जैन विश्व भारती एक ऐसी संस्था है जिसके ऊँचे सपने और संकल्प हैं – जैन विद्या और दर्शन का व्यापक प्रचार, विश्व को अहिंसा एवं शांति का पथदर्शन, एक नैतिक राष्ट्र एवं चरित्रवान व्यक्तित्व का विकास। जैन विश्व भारती सरस्वती की विरल क्रीड़ा भूमि है जिस पर सैकड़ों मूर्धन्य विद्वानों ने अपने ज्ञान की गंगा बहाई है।

जैन विश्व भारती में एक तपोभूमि की झांकी दिखाई पड़ती है, जो शुष्क मरुभूमि में मुस्काती हरियाली को अपने आंचल में समेटे हुए है। रमणीय प्राकृतिक छटा, शुद्ध वातावरण, शांत परमाणु, नाचता मयूर और उसका निराला सौंदर्य हर आगंतुक का मन मोहता है।

सपने एवं संकल्पों से समृद्ध इस संस्था के सात सकार – शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, संस्कृति, सेवा और समन्वय इसके विकास के द्वार हैं।

जैन विश्व भारती सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चिंतन के विकास की त्रिवेणी है। प्रत्येक संप्रदाय और प्रत्येक वर्ग को आंतरिक शांति का बोध कराने वाला यह संस्थान मूल्यों के विकास का अनोखा केंद्र है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की ऊर्जा रश्मियों से अभिमंडित यह संस्था वर्तमान अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के निर्देशन में गतिमान है और मानव समाज के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

बढ़े चलें हम रुकें न क्षण भी .....

जैन विश्व भारती में बना बनाया आश्रम

जैन विश्व भारती का यह परिसर बना-बनाया आश्रम है। प्राचीनकाल में आश्रम का वातावरण जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि से पवित्र रहता था। जैन विश्व भारती के परिसर का कण-कण जप-तप से भावित है। भिक्षु विहार में अनवरत जप-तप की तरंगें प्रवाहित होती रहती है। प्रज्ञालोक में अध्यात्म चिंतन और ध्यान के विकिरण सतत संचरित रहते हैं। तुलसी अध्यात्म नीडम का वायब्रेशन उस समूचे भाग को प्रभावित करता है। आगम, शोध व सम्पादन के क्रम में आगमों के पाठ का पारायण होता रहता है। मुझे तो लगता है कि यहां अध्यात्म का वातावरण है। इसलिए यहां आने वाले अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। मेरा एक सुझाव है कि यहां आने वाले ध्याता बनकर आएं और ध्येय के प्रति समर्पित रहें। ऐसा होने पर प्रसन्नता और पवित्रता हर पल आपकी परिक्रमा करती रहेगी।

आचार्य तुलसी

स्मृति का विश्वकोश

जैन विश्व भारती मेरे लिए स्मृतियों का इनसाइक्लोपीडिया है। स्मृति का विश्वकोश है। यहाँ के चप्पे-चप्पे पर हमारी स्मृतियाँ अंकित हैं। यहाँ के किसी भी भूखंड को देखता हूँ तो स्मृतियाँ ताजा हो जाती हैं। जो स्मृतियाँ अनकांशस माइंड में छिपी हुई हैं, यहाँ आते ही वे कांशस माइण्ड में आ जाती हैं, ताजा हो जाती हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ

आशीर्वचन

प्रवेश

जैन विश्व भारती गुरुदेव तुलसी के शब्दों में स्वयं कामधेनु है। उसको दुहने वाला ग्वाला एक्सपर्ट होना चाहिए।

श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया के तीन कार्यकाल अर्थात लगभग छह वर्षों का समय संपन्न होने जा रहा है।

यह संस्था जैन विद्या आदि के प्रसार में अपना योगदान देती रहे, अध्यात्म के प्रसार में अपनी शक्ति का नियोजन करती रहे। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

23 अगस्त 2012
जसोल (राजस्थान)

संजीवन बोल

आचार्यश्री तुलसी की कल्पनाओं को रूपायित करने का एक कैनवास है – जैन विश्व भारती। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सहचिंतन की एक निष्पत्ति है - जैन विश्व भारती। आचार्यश्री महाश्रमण के कुछ सपनों को साकार करने का दायित्व इसी जैन विश्व भारती पर है। तेरापंथ धर्मसंघ के तीन-तीन आचार्यों के विजन को आधार मानकर काम करने वाली एक संस्था है - जैन विश्व भारती। साधना, शिक्षा, साहित्य, शोध, सेवा, समन्वय और संस्कृति - इन सात सकारों को केन्द्र में रखकर इस संस्था ने जो काम किया है, वह अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। आधुनिक सुविधाओं/उपकरणों से सुसज्जित भवनों का विस्तार होने के बावजूद जैन विश्व भारती एक साधना-स्थल या आश्रम के रूप में प्रतिष्ठित रहे, यह इसकी गरिमा को वृद्धिगत रखने के लिए आवश्यक है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्रजी चोरड़िया विगत छह वर्षों से अपनी टीम के साथ संस्था को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। किसी भी अध्यक्ष के लिए इतने लंबे समय तक लगातार संस्था को अपनी सेवाओं से लाभान्वित करना गौरव की बात है।

इस संस्था को आध्यात्मिक संपोषण संघ के आचार्यों से प्राप्त होता है तो इसके भौतिक शरीर के संरक्षण, परिष्कार एवं परिवर्धन का दायित्व नेतृत्व पर रहता है। संस्था दोनों दृष्टियों से संपोषण पा रही है। वर्तमान के पुष्ट आधार पर भावी संभावनाओं को उजागर होने का पर्याप्त अवकाश मिलता रहे, यही मंगल भावना।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

जसोल, 18 अगस्त, 2012

परामर्श
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रकाशक
जितेन्द्र नाहटा, मंत्री
जैन विश्व भारती

संपादक
डॉ. वन्दना कुण्डलिया

संपादन-सहयोग
राजेन्द्र खटेड़

जैन विश्व भारती
पोस्ट बॉक्स नं. 8,
पोस्ट - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर, राजस्थान (भारत)
दूरभाष : +91-1581-222025 / 080
फैक्स : +91-1581-223280
इ-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाइट : www.jvbharati.org

मुद्रक
आकार अक्षर प्रेस प्रा. लि.
158, लेनिन सरणी,
कोलकाता - 700 013
फोन : 09903211215/09830747699

अनुक्रम

आशीर्वचन | आचार्य श्री महाश्रमण	
संजीवन बोल | साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी	
उपोद्घात | शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी	
अध्यक्षीय | सुरेन्द्र चोरड़िया	
परामर्शक की कलम से | डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह	
संपादकीय | डॉ. वन्दना कुण्डलिया	
श्रद्धांजलि	10
सृजनशील सहकर्मी	13
पावन प्रणति	30
प्राक्तन पदाधिकारी	31
समर्थक एवं संरक्षक	36
कार्यालय सहयोगी	59
ऊर्जा का अक्षय स्रोत पूज्यवरों का पावस प्रवास	62
प्रवर्धमान प्रवृत्तियाँ	63
शिक्षा	64
सेवा	67
साधना	68
साहित्य	69
समन्वय	70
छह वर्षों के दौरान उल्लेखनीय अनुदानदाता	72
जैन विश्व भारती : आंकड़ों में	73
सहयोगी संस्थान	74
दस्तावेज	75
आधार स्तंभ	76
नींव के पत्थर	78
दिशा पथ	79
संस्मरण : भीखमचंद पुगलिया	80
The most ideal place for Sadhana in the world : Kamlesh Shah	82
कृती कर्मी	82
एक पाठक के हार्दिक उद्‌गार	83

उपोद्घात

सुंदर कौन? यह प्रश्न मानवीय चेतना को आंदोलित और उद्वेलित करता रहा है। क्या वह सुंदर है, जिसका शरीर सुंदर है, रंग-रूप और आकार-प्रकार सुंदर है? या वह सुंदर है, जिसकी आत्मा सुंदर है?

शरीर नश्वर है इसलिए उसका सौंदर्य भी एक दिन नष्ट हो जाता है। आत्मा अमर है इसलिए उसका सौंदर्य संरक्षित और संवर्धित हो सकता है। प्रश्न यह भी उठता है – व्यक्ति शरीर के सौंदर्य की चिंता ज्यादा करता है या आत्मा के सौंदर्य की?

मैं अभी जैन विश्व भारती के भिक्षु विहार में प्रवास कर रहा हूं। मेरे सामने खुला भू-भाग है, वर्षा हो रही है। चारों ओर हरीतिमा है। वर्षा की बूंदें उसके सौंदर्य को अभिवर्धित कर रही है। निर्मल वातावरण, स्वच्छ पर्यावरण, चेतोहर उपवन, शांत-शीतल पवन, वृक्षावलि से आवेष्टित भवन – जैन विश्व भारती के अभिरूप का साक्षात निदर्शन बन रहे हैं।

मन में विकल्प उठा – क्या इस बाह्य सौंदर्य में आंतरिक सौंदर्य का प्रतिबिंब है? क्या बाह्य सौंदर्य आंतरिक सौंदर्य को पोषण दे रहा है?

जहां केवल बाह्य सौंदर्य होता है, आंतरिक सौंदर्य नहीं होता, वहां शरीर सुंदर होता है, आत्मा सुंदर नहीं होती।

जहां केवल आंतरिक सौंदर्य होता है, बाह्य सौंदर्य नहीं होता, वहां आत्मा सुंदर होती है, शरीर सुंदर नहीं होता।

जहां बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार का सौंदर्य होता है, वहां आत्मा और शरीर दोनों सुंदर होते हैं।

जहां न बाहरी सुंदरता होती है और न आंतरिक, वहां शरीर और आत्मा दोनों असुंदर प्रतीत होते हैं।

सर्वांग सुंदर वह है, जिसका शरीर भी सुंदर हो और आत्मा भी। जिसका बाह्य परिवेश भी सुंदर हो और आंतरिक परिवेश भी।

जैन विश्व भारती अध्यात्ममूलक प्रवृत्तियों के आयोजन, नियोजन, संरक्षण, संवर्धन के लिए संस्थापित संस्थान है। इसकी अध्यात्ममूलक प्रवृत्तियों में उसके आंतरिक सौंदर्य का दर्शन होता है। इसका अध्यात्म-भावित आंतरिक सौंदर्य निरंतर बढ़ता रहे, यह सबका पवित्र मनोरथ और प्रवर संकल्प होना चाहिए। वर्तमान प्रबंध समिति ने इस दिशा में जो कार्य किया है, उसकी अवगति प्रस्तुत अंक में मिल सकेगी। भावी प्रबंध समिति इसके आंतरिक सौंदर्य के प्रति और अधिक जागरूक बने, यह अपेक्षा स्वाभाविक है। अध्यात्ममूलक प्रवृत्तियों को निरंतर गतिशील और प्राणवान बनाकर ही गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के संजोए सपनों को आचार्यश्री महाश्रमण के नेतृत्व में साकार कर सकते हैं, उनमें नए मनोहर रंग भर सकते हैं।

जरूरत है एक अनुत्तर संकल्प की, सत्पुरुषार्थ की और संतुलित विकास की।

'शासन गौरव' मुनि धनंजयकुमार

अध्यक्षीय

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष के रूप में दिनांक 5 अक्टूबर, 2006 को मेरा चयन हुआ। 14 अक्टूबर को परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से भिवानी में मंगलपाठ सुनकर टीम के कुछ सदस्यों के साथ लाडनूं आया और दिनांक 15 अक्टूबर, 2006 को कार्यभार ग्रहण किया। पूज्यश्री का अनन्त आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि प्राप्त हुई। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष के रूप में दायित्व ग्रहण करने के लिए जब जैन विश्व भारती के प्रांगण में कदम रखा तो एक अलग अनुभूति हुई। एक अलग-सा आकर्षण एवं अन्तर्मन में एक संकल्प-सा जागा। मन कह रहा था – गुरुदेव की दृष्टि के अनुरूप अच्छा करेंगे। स्वप्न एवं कल्पनाओं का दौर प्रारंभ हो गया। क्या-क्या काम प्रारंभ करने हैं, एक के बाद एक सामने आने लगे। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के मंगलपाठ के साथ उस दिन से जो दौर प्रारंभ हुआ, वह लगभग साढ़े तीन वर्षों तक श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं उनके पश्चात लगभग ढाई वर्षों से श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन में अनवरत चलता आ रहा है। पूज्यवरों से प्राप्त सतत ऊर्जा, प्रेरणा एवं आशीर्वाद मेरे जीवन की अमूल्य निधि के रूप में सदैव मेरा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष बनने से पूर्व मैंने इस संस्था का केवल बाहरी स्वरूप ही देखा था। संस्था के बारे में अनुभव एवं जानकारी नगण्य-सी थी। लेकिन पूज्य गुरुदेव से मंगलपाठ सुनने के बाद ऐसा लगा मानो संस्था के साथ लंबे समय से मेरा संबंध जुड़ा हुआ है। संस्था के परिसर का हर भाग अपना लगने लगा, अपना घर, अपना कार्यालय, अपना जीवन। यह कथन मात्र नहीं, मेरे जीवन की सच्चाई है।

जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष आदरणीय श्री धरमचंद चोपड़ा की विशिष्टताओं एवं प्रशासनिक शैली से मैं प्रारंभ से ही काफी प्रभावित था। मेरे मन में उनके प्रति अत्यंत आदर का भाव है। जैन विश्व भारती का अध्यक्षीय दायित्व ग्रहण करने के साथ ही उनको मैंने अपना आदर्श माना।

आज जब अपने छह वर्षीय कार्यकाल पर लिख रहा हूं तो सारी बातें स्मृति पटल पर हिलोरें मार रही हैं। एक के बाद एक क्रम, घटनाएँ, कार्य, अनुभव, एक अंतःआनन्द की अनुभूति दिला रहे हैं। संक्षिप्त में कार्यों की समीक्षा करूं तो इन वर्षों में हुए सारे कार्य पूज्य गुरुदेव की दृष्टि के अनुरूप मुझे जो टीम मिली थी उसी के कारण हुए। इस टीम ने संघ एवं समाज के सम्मुख एक सक्षम टीम की पहचान बनाई एवं हर समय मेरे प्रत्येक कार्य में सहभागी रहे। इस टीम के साथ कार्य करके मुझे हर पल काफी कुछ सीखने का अवसर भी मिला। इस टीम ने संघ को बहुत कुछ दिया है। अपनी टीम पर मुझे नाज है एवं हमेशा रहेगा।

टीम की जब बात करता हूं तो मुझे वे पल याद आ रहे हैं जब मैं कार्यभार ग्रहण के समय प्रथम बार आदरास्पद समणी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी से जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति के रूप में मिला। उनका समर्पण, निष्ठा, उत्साह एवं लगन देखी। उस दिन से उनके साथ कार्य करने की यात्रा प्रारंभ हुई, जो अनवरत 5 अक्टूबर, 2010 तक चलती रही। समणी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के साथ कार्य करने का जो अवसर मिला वह जीवन के स्वर्णिम अवसरों में सर्वाधिक जाज्वल्यमान था। दृढ़ विश्वास की अद्भुत अनुभूति रही। जीवन की इस पूंजी को मैं सदैव संजोकर रखने का प्रयास करूंगा।

मेरे इस कार्यकाल की उपलब्धता का एक बड़ा श्रेय हमारे न्यासी मंडल को जाता है जिसका नेतृत्व मुख्य न्यासी के रूप में आदरणीय श्री रणजीतसिंह जी कोठारी कर रहे थे, जिनका साथ होना ही मेरे विश्वास को द्विगुणित कर देता था। जैन विश्व भारती के विकासमूलक कार्यों को अंजाम देने में उनका साथ खड़ा होना ही कार्यों को पूरा कर देने के समान हो जाता था। मेरे मन में उनके प्रति हमेशा आदर भाव रहा है, जो निरंतर प्रगाढ़ होता गया है।

टीम के लिए व्यक्तिशः नामोल्लेख किए बगैर मैं इस बात को दोहराना चाहता हूं कि मेरी टीम के हर सदस्य ने सौंपे गए दायित्वों को जिस निष्ठा और कुशलता के साथ निभाया है, उसका साक्ष्य उनके द्वारा किए गए कार्य हैं, जो समाज के समक्ष मूर्तिमान हैं। संघ एवं समाज इसे अनुभूत करेगा और प्रसन्नता का अनुभव करेगा।

मेरे छह वर्षीय कार्यकाल में संपूर्ण तेरापंथ समाज का उल्लेखनीय योगदान रहा है। समाज के व्यक्तियों और सभी संस्थाओं ने हर कार्य में मुझे पूरा सहयोग दिया, जो सदैव मेरे लिए अविस्मरणीय बना रहेगा।

जैन विश्व भारती की गृह-पत्रिका 'कामधेनु' का प्रकाशन हो, यह मेरे अंतर्मन की कामना थी। इस दायित्व को बखूबी निभाया है इसकी संपादक डॉ. वंदना कुण्डलिया ने। मुझे प्रसन्नता है कि इस पत्रिका के मुख्य सहयोगी के रूप में श्री राजेन्द्र खटेड़ का महत्वपूर्ण भूमिका रही, उनके प्रति भी मेरी मंगलकामना।

क्षमायाचना के दिन यह अध्यक्षीय लिख रहा हूं, अतएव मेरे हर कार्य में सहभागी रहे सभी जनों से अंतःकरण से क्षमायाचना करता हूं।

सुरेन्द्र चोरड़िया

परामर्शक की कलम से ...

'कामधेनु' जैन विश्व भारती के परिकल्पनाकार आचार्य तुलसी की लोक-कल्याणकारी परिकल्पनाओं को फलीभूत करने वाली संस्था जैन विश्व भारती के कार्यों को जग-जाहिर करने वाली ऐसी गृह-पत्रिका सिद्ध हुई है, जिसका लक्ष्य तेरापंथ धर्मसंघ की धार्मिक शुचिता को व्यक्ति एवं समाज में प्रतिष्ठित करना और उसके मस्तिष्क का परिशोधन, परिमार्जन कर विद्यमान युग की विसंगतियों एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अहिंसामूलक चिंतन एवं संवाद के लिए अवकाश पैदा करना है। कामधेनु ने अपने पिछले अंकों में प्रस्तुत सामग्री के माध्यम से इस दिशा में सार्थक पहल की है और मानव के आत्मोन्नयन में सहयोगी बनने का प्रबुद्ध प्रयास किया है।

आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के महान युग-चिंतक और नैतिक-क्रांति के पुरोधा थे। वे मानव हित के प्रबल पैरोकार थे और धर्म, दर्शन, जीवन शैली आदि क्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तन के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि संपूर्ण समाज और उसका हर व्यक्ति अणुव्रत जैसे चारित्रोन्नयन के सूत्रों को अपनाकर आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ इस विश्व को एक नया स्वरूप प्रदान करने के लिए पहल करे।

आचार्य तुलसी ने जैन विश्व भारती के रूप में एक ऐसे संस्थान की परिकल्पना की जो मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने की दिशा में कार्य करे और जैन दर्शन के अहिंसावादी और अनेकांतवादी सिद्धांतों का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार कर मानव समाज को जीवन जीने की उदात्त पद्धति से अवगत कराए एवं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शांति, सद्भाव, सौहार्द और समन्वय जैसे महनीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करे। इसी सोच के तहत उन्होंने शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, साधना, सेवा आदि सप्त सकारों के विकास हेतु जैन विश्व भारती की स्थापना का प्रस्ताव तेरापंथ श्रावक समाज के समक्ष रखा, जिसका सम्मान करते हुए समाज ने जैन विश्व भारती का निर्माण एवं विकास किया। आज जैन विश्व भारती द्वारा किए जा रहे कार्यों की धूम न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में है और उसकी गतिविधियों से जैन ही नहीं, बड़ी संख्या में जैनेतर लोग भी जुड़ते जा रहे हैं। आज वर्तमान युग की अनेक समस्याओं के समाधान में उसकी उल्लेखनीय भूमिका महसूस की जा रही है।

जैन विश्व भारती की परिकल्पनाओं, प्रवृत्तियों, प्रकल्पों, कार्यक्रमों आदि को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक त्रैमासिक गृह-पत्रिका 'कामधेनु' का प्रकाशन वस्तुतः एक सोद्देश्य एवं सराहनीय प्रयास है, जिसके अब तक प्रकाशित छह अंकों ने अनेक महत्वपूर्ण दिशाओं में चिंतन को नया आयाम दिया है और जैन विश्व भारती के नेतृत्व वर्ग द्वारा उक्त क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया है।

कामधेनु ने जैन विश्व भारती के अभीप्सित लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने देश एवं विदेशों में इसके द्वारा संचालित कार्यक्रमों से लोगों को जोड़ने का काम किया है और उसकी परियोजनाओं एवं प्रकल्पों को विस्तार दिया है। पत्रिका में प्रकाशित जानकारियों एवं आलेखों के माध्यम से जैन एवं जैनेतर सभी वर्गों के लोगों में जैन विश्व भारती के प्रति आकर्षण और उत्सुकता उत्पन्न हुई है और उसके द्वारा संचालित क्रियाकलापों से स्वयं को जोड़ने का आग्रह पैदा हुआ है।

कामधेनु ने अपने प्रवेशांक से लेकर अब तक साहित्य, साधना, शोध और संस्कार निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय पहल की है। उसमें प्रकाशित आलेखों से जहाँ जीवन जीने की सही दिशा प्राप्त होती है, वहीं जीवन को सुंदर बनाने का गुरुमंत्र भी मिलता है। विदेशों में इसके द्वारा संचालित कार्यक्रमों में लोगों की बढ़ती रुचि का कारण भी उसकी मानवतावादी सोच के प्रति असीम निष्ठा ही है। इस पत्रिका ने समाज में एक हलचल पैदा की है और हर सोये मन को चैतन्य करने का कार्य किया है।

इस पत्रिका का हृदय जितना सुंदर और उदात्त है, काया भी उतना ही मनोहारी और आकर्षक आभामंडल से युक्त है। पत्रिका अपने सभी उद्देश्यों के प्रति सचेतन रहकर निरंतर गतिशील रही है और पाठकों के लिए अनवरत प्रतीक्षा का हेतु भी।

किसी भी लोक-मंगलकारी संस्था के लिए ऐसी गृह-पत्रिका का होना उसके मंगल का सूचक और उसकी कार्यपद्धति का अनिवार्य अंग होता है। कामधेनु अपने संस्थागत सरोकारों तथा अपनी प्रयोजनीयता को सिद्ध करती है।

डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

संपादकीय

कामधेनु का यह अंक जैन विश्व भारती के उस सृजनशील समुत्थानवादी प्रबंधन तंत्र पर केंद्रित है, जिनकी संघनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और मानव हित कामना ने जैन विश्व भारती को नए क्षितिज की ओर अग्रसर किया है। मानवोन्नयन की भावना से स्थापित जैन विश्व भारती के उद्देश्यों और उसकी मूल कार्य पद्धति के प्रति आस्थावान इसके उच्चस्थ पदाधिकारियों से लेकर जमीनी स्तर तक निष्ठापूर्वक कार्य करने वाले लोगों के सर्वात्म समर्पण की भावना ने ही जैन विश्व भारती को आज वह ऊँचाई प्रदान की है, जिसने संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ के गौरव को बढ़ाया है और शिक्षा, साधना, साहित्य, शोध और संस्कृति के क्षेत्र में न केवल भारत में, बल्कि संपूर्ण विश्व में एक सम्मानीय केन्द्र के रूप में उसे प्रतिष्ठित किया है।

जैन विश्व भारती द्वारा संचालित प्रकल्पों और प्रवृत्तियों की जानकारी जन-जन तक पहुँचाकर उसके प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने और उनसे लाभान्वित कराने में उसकी गृह-पत्रिका कामधेनु ने महनीय कार्य किया है। कामधेनु आज अपने पाठकों के लिए प्रतीक्षा का हेतु बनी हुई है। कामधेनु के प्रारंभ से लेकर अब तक के सफल और सुखद सफर के लिए मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति, जिनका आशीर्वाद सदैव मैंने अपने अंदर महसूस किया, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति, जिनके प्रेरणास्पद वचनों से मैं जैन विश्व भारती से जुड़ी, आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति, जिनकी आध्यात्मिकता मुझे निरंतर प्रेरणा देती रही, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति, जिनका वात्सल्य भाव मुझे सदैव मिलता रहा, मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी, लाडनूं और मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभा जी के प्रति, जिनका मार्गदर्शन मुझे मिलता रहा, और समस्त चारित्रात्माओं के प्रति, जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दिशानिर्देश मुझे 'कामधेनु' की इस यात्रा में मिला।

आभार ज्ञापित करती हूँ जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी चोरड़िया का, जिन्होंने पत्रिका के संपादन जैसे गुरुतर कार्य का दायित्व मुझे दिया और कामधेनु के प्रत्येक अंक में अपने विचारों एवं चिंतनों से मुझे प्रोत्साहित किया। जैन विश्व भारती के सभी पदाधिकारियों के प्रति भी आभार ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मुझे यथापेक्षित मार्गदर्शन दिया। जैन विश्व भारती के सभी सदस्यों के प्रति भी, जिनके बहुमूल्य सुझावों से कामधेनु को समृद्धि मिली, और जैन विश्व भारती परिवार के प्रति, जिन्होंने अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में मुझे अपार स्नेह दिया।

धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ उन सभी साहित्यकारों के प्रति, जिनकी रचनाओं और विचारों से मुझमें लेखन क्षमता का विकास हुआ।

धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ कामधेनु के परामर्शक डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह के प्रति, जिनके साहित्यिक औदात्त ने मेरे संपादन की हर छोटी-बड़ी गलती पर बखूबी आवरण दिया, कामधेनु के संपादन सहयोगी श्री राजेन्द्र खटेड़ के प्रति, जिनके शब्दातीत सहयोग ने मेरे कार्य को सुगम बनाया, कोलकाता स्थित 'आकार अक्षर प्रेस' के प्रति, जिन्होंने सुंदर साज-सज्जा एवं आकर्षक कलेवर से कामधेनु को एक अलग स्वरूप दिया, जैन विश्व भारती के कोलकाता कार्यालय के प्रति, जिसका कामधेनु के विभिन्न संदर्भों में भरपूर सहयोग मिला और जैन विश्व भारती सचिवालय के प्रति, जहाँ की आत्मीयता और अपनेपन ने मेरे उत्साह को निरंतर बढ़ाया।

शुक्रिया उन सभी प्रबुद्ध पाठकों का, जिनकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों ने कामधेनु को प्रयोजनीयता प्रदान की तथा मेरी क्षमता में अभिवृद्धि की। उस प्रत्येक व्यक्ति, विचार और व्यवस्था का, जो कामधेनु के संपादन में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से मेरे सहयोगी बने।

जैन विश्व भारती की वर्तमान टीम के कार्यकाल की परिसंपन्नता पर इस कार्यकाल का कामधेनु का यह अंतिम अंक इस भावना और विश्वास के साथ प्रस्तुत है –

माना कि इस जमीं को गुले गुलजार न कर सके हम
पर कुछ कांटे ही कम कर दिए निकले जिधर से हम।

डॉ. वन्दना कुण्डलिया

गुरु वचनम्

'शासनसेवी' झूमरमलजी बैंगानी धर्मसंघ के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। वे महत्त्वपूर्ण इसलिए थे कि उन्होंने आचार्यों एवं साधु-साध्वियों की चिकित्सा संबंधी बहुत सेवा की। आयुर्वेद के वे जानकार थे। पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के तो वे खास थे। जैन विश्व भारती को उन्होंने वर्षों तक अनेक रूपों में सेवा की। झूमरमलजी बीदासर के मान्य श्रावक थे। ऐसे श्रावक के देहावसान से एक प्रकार की क्षति हुई है।

- आचार्य महाश्रमण

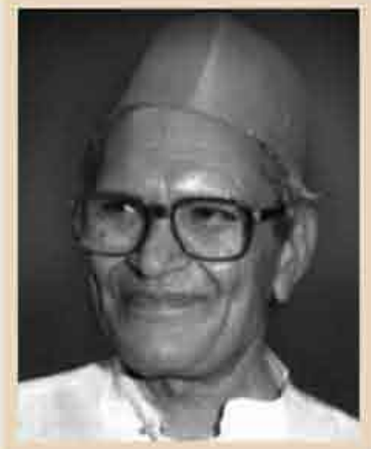

स्व. झूमरमलजी बैंगानी

(1930-2012)

कुलपति, जैन विश्व भारती (2010 - 12)
पूर्व प्रधान न्यासी, सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

हार्दिक श्रद्धांजलि

जैन विश्व भारती एवं सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला परिवार

गुरु वचनम्

स्व. रणजीतसिंहजी बैद बहुत श्रद्धालु, समर्पित और जिम्मेदार श्रावक थे। उन्होंने धार्मिक और सामाजिक-दोनों क्षेत्रों में अच्छी सेवाएं दीं। वे मृदुभाषी, मिलनसार और समझदार श्रावक थे। पूज्य गुरुदेव के लाडनूं प्रवास में उनकी सेवाएं उल्लेखनीय रहीं। उनके स्वर्गवास से एक श्रावक कार्यकर्ता का स्थान रिक्त हो गया।

- आचार्य महाश्रमण

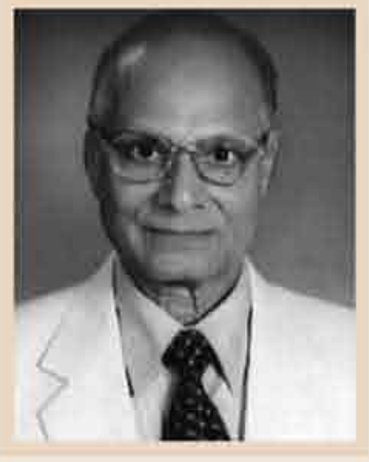

स्व. रणजीतसिंहजी बैद

(1940-2010)

उपाध्यक्ष, जैन विश्व भारती (2006 - 10)

हार्दिक श्रद्धांजलि

जैन विश्व भारती परिवार

..... जिन्होंने क्षितिज को छूने का सपना संजोया

..... उन सृजनशील सहकर्मियों को
समर्पित है 'कामधेनु' का यह अंक!

सृजनशील सहकर्मी

जिनकी एकजुटता ने दी संस्था को सुदृढ़ता

जिनकी चिंतनशीलता ने दी संस्था को बहुरूपता

जिनकी कर्मनिष्ठा ने दिए संस्था को अभिनव आयाम

जिनकी एकात्मता ने दिया गतिशीलता को अनोखा नाम

जिनकी रचनात्मकता ने दिया प्रवृत्तियों को नित नव प्रकाश

जिनके तर्कातीत समर्पण ने दिया संस्था-विकास को नूतन आकाश

अध्यक्ष के हर चिंतन को कार्यान्वित करने वाले
संस्थानिष्ठ सहयात्रियों के प्रति
जैन विश्व भारती का भावोल्लास!

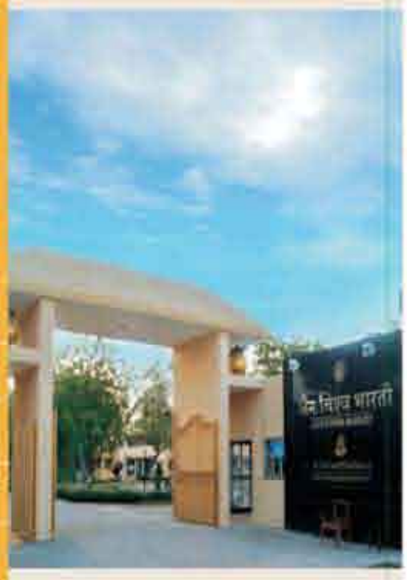

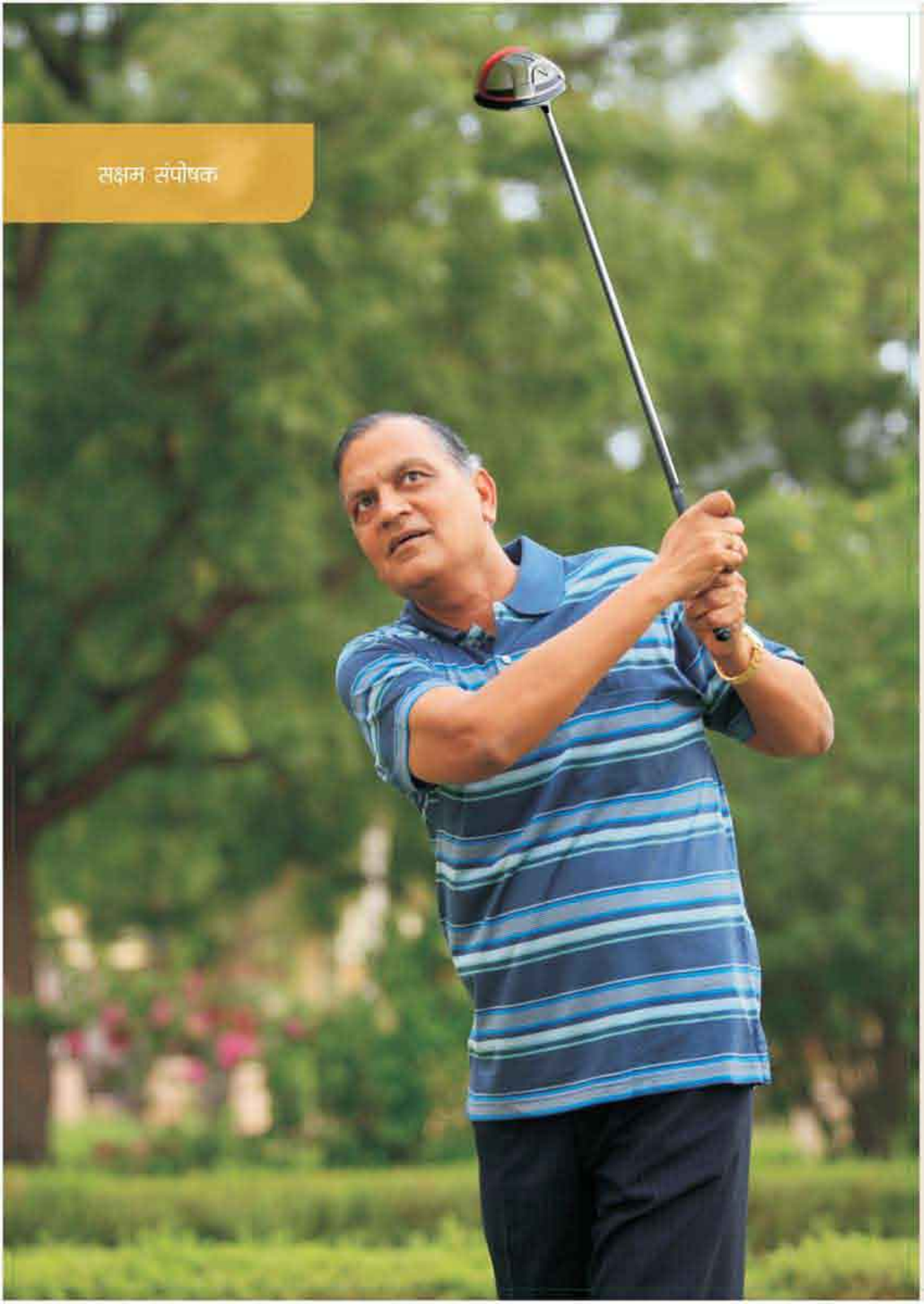

श्री रणजीतसिंह कोठारी
प्रधान न्यासी

प्रधान न्यासी के पद पर रहकर
रचे नया इतिहास
पल्लवित-पुष्पित हुई विश्व भारती
शिक्षा को मिला प्रकाश

प्रवृत्तियों को पंख लगे नव
रंजित हुआ दिगंत
पाकर नित संवर्धन संपोषण
खुली दिशाएँ अनन्त

आपके उदारमना स्वभाव और कार्यशैली से -

जैन विश्व भारती की पूरी टीम के मुख्य सहयोगी एवं मार्गदर्शक रहे।

जैन विश्व भारती को विभिन्न रूपों में आर्थिक सुदृढ़ीकरण मिला।

जैन विश्व भारती का ट्रस्ट बोर्ड अधिक सक्रियता से उभर कर सामने आया।

जैन विश्व भारती के संयुक्त प्रधान न्यासी का मनोनयन कर आपने ट्रस्ट बोर्ड को अधिक प्रभावी बनाया।

आपके संस्था के प्रति उदार चिंतन से अक्षय कोष योजना का प्रारंभ हुआ।

जैन विश्व भारती परिसर में 'अहिंसा भवन' का निर्माण आपने संपूर्ण आर्थिक सहयोग से करवाकर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा की उपलब्धियों को चिरस्थायी बनाने का महनीय कार्य किया।

जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के विद्यालय भवन में महत्वपूर्ण सहयोग किया और इस भवन के निर्माण की संपूर्ण जिम्मेदारी लेते हुए कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन कर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक सुविधाओं के विकास के स्वप्न को साकार करने की दिशा में एक सार्थक पहल की।

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के प्रबंधन समिति के चेयरमैन के रूप में विद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाई।

जैन विश्व भारती परिसर में एवं अधीन संचालित अन्य प्रकल्पों के लिए भूमि क्रय करने व भू-स्वामित्व जैन विश्व भारती के पक्ष में करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जैन विश्व भारती परिसर में विभिन्न निर्माण कार्यों में तन, मन, धन एवं चिंतन से सक्रिय सहयोग दिया।

जैन विश्व भारती के नाम से विदेश स्थित लंदन सेंटर में पूर्व में आए गतिरोध को दूर करने के प्रयासों में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

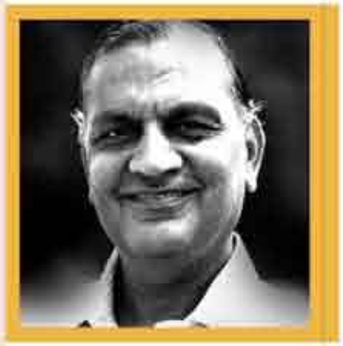

सुयोग्य संवाहक

श्री जितेन्द्र गाहड़ा
मंत्री

संवाही बन रहे संभालते
गतिविधियाँ संस्था की सारी
कुशल संचालन प्रबंधकीय पटुता
संवहन क्षमता थी न्यारी

देकर नव नव मंत्र सदा
अद्भुत **मंत्रित्व** निभाया
बन ***जितेन्द्र*** भुवन भारती के
संस्था को शिखर चढ़ाया

संस्था के प्रति निष्ठा, सहयोग और समर्पण की भावना से आपने –

जैन विश्व भारती के प्रशासनिक कार्यों का कुशल निर्देशन किया।

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों के संचालन हेतु यथायोग्य मार्गदर्शन रहा।

जैन विश्व भारती सचिवालय से निरंतर संपर्क एवं अपेक्षित निर्देशन रहा।

जैन विश्व भारती की वार्षिक साधारण सभा, संचालिका समिति, ट्रस्ट बोर्ड, उपसमितियों व विभागों आदि की नियमानुसार बैठकें आयोजित कर उनका कुशल संचालन किया।

विभिन्न संघीय एवं संस्थागत आयोजनों में जैन विश्व भारती का सक्षम प्रतिनिधित्व किया।

जैन विश्व भारती के दैनंदिन कार्यों से सक्रियतापूर्वक जुड़े रहे एवं यथायोग्य मार्गदर्शन रहा।

समाज के साथ व्यापक संपर्क कर जैन विश्व भारती की गतिविधियों व योजनाओं को विस्तार दिया।

जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय के निर्माण संबंधी कार्यों में विशेष सहयोग रहा।

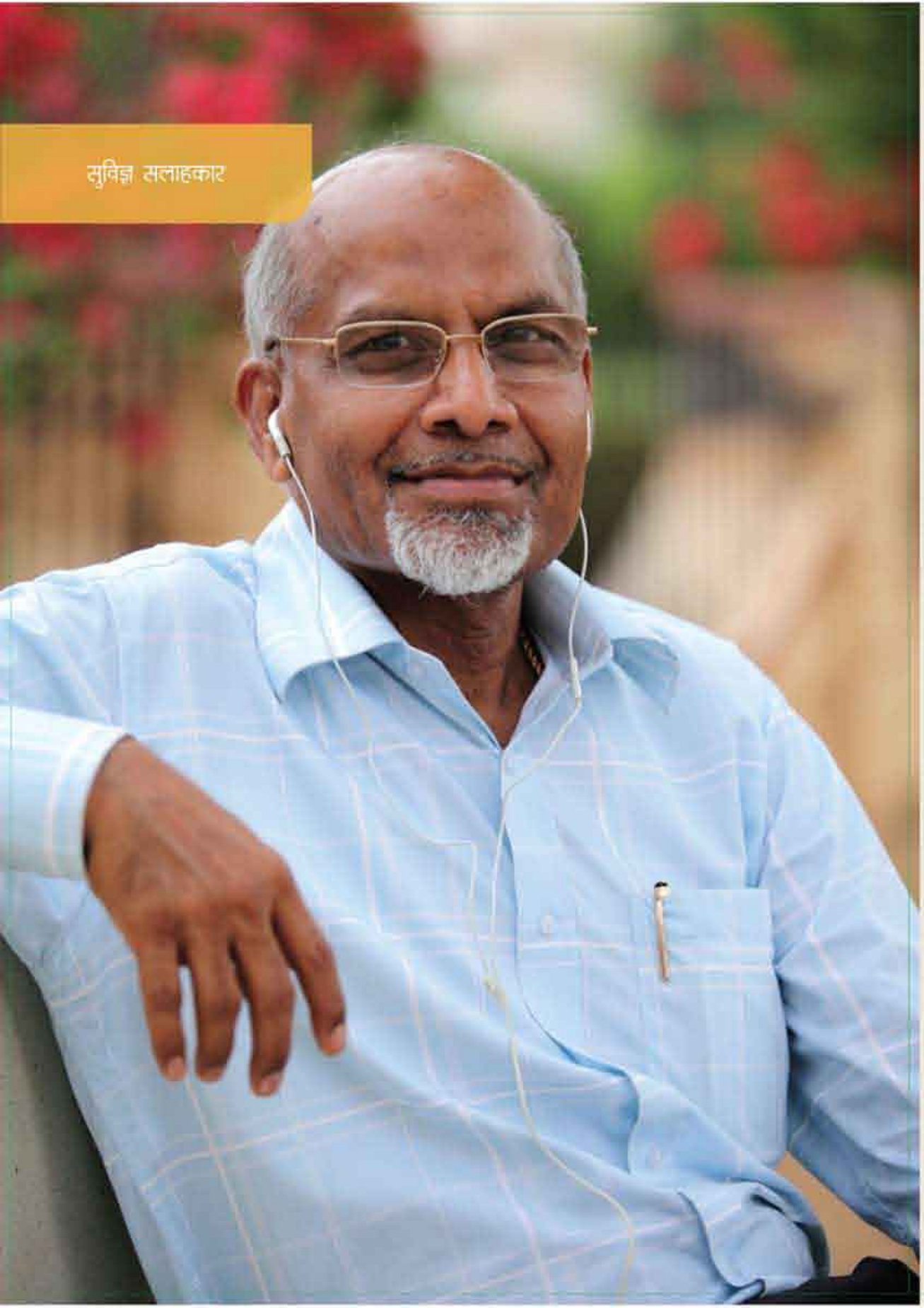

सुविज्ञ सलाहकार

श्री सुमेरमल सुराणा
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

विधिवेत्ता बन विश्व भारती के
किए संशोधित संविधान
प्रलेखीकरण को नव रूप देकर
बढ़ाया संस्था का मान

अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर
बने **वरिष्ठ उपाध्यक्ष** द्युतिमान
उठे ***सुमेर-तें*** भारती के हित में
संस्था को दिया सुलाम

आपके विधिज्ञ ज्ञान, पैनी नजर, कुशल निर्देशन में –

जैन विश्व भारती को प्रत्येक गतिविधि को किसी न किसी रूप में सहयोग मिला।

वर्तमान अपेक्षाओं के अनरूप जैन विश्व भारती के संविधान का संशोधन हुआ।

जैन विश्व भारती के भूमि, भवनों एवं कानूनी व वैधानिक प्रलेखीकरण का कार्य हुआ।

जैन विश्व भारती परिसर में स्थित विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं के भवनों के उपयोग संबंधी अनुबंध हुए।

जैन विश्व भारती परिसर में विभिन्न अनुदानदाताओं के सहयोग से निर्मित भवनों/फ्लेटों के उपयोग संबंधी अनुबंधों में अपेक्षित संशोधन हुए।

जैन विश्व भारती के समस्त भवनों की कीमत का पुर्नमूल्यांकन कार्य आपके निर्देशन में हुआ।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार मातृ संस्था के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में वित्त समिति एवं शिष्ट परिषद् के रूप में आपका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

मथारू एसोसिएशन बनाम जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का मामला सुलझाने का सघन प्रयास हुआ।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में प्रलेखीकरण का कार्य नए स्वरूप में हुआ।

जैन विश्व भारती के नाम से विदेशों में संचालित केन्द्रों में लंदन सेन्टर में प्रथम पदाधिकारी के रूप में आपका दौरा हुआ।

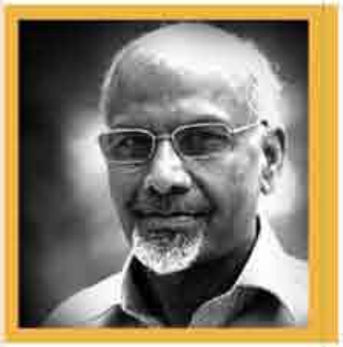

सक्रिय सृजनकर्ता

श्री बसंतकुमार पारख
उपाध्यक्ष

बनकर संस्था के **उपाध्यक्ष**
करते रहे अनुपम योगदान
ध्यान-साधना के विकास हित
सदा रहे गतिमान

परामर्शी प्रशासन सेवा के
चलाए नव नव अभियान
बनकर **बसंत** भारती प्रांगण के
खिलाए सुमन द्युतिमान

संस्था के के कार्यनिष्पादन में तत्परता, दूरंदेशी दृष्टि और प्रबुद्ध चिंतन से -

आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर के निर्माण संबंधी संपूर्ण कार्य में कुशल निर्देशन एवं सहयोग रहा।

जैन विश्व भारती के विभिन्न निर्माण कार्यों में अपेक्षित मार्गदर्शन रहा।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास कार्यों में अपेक्षित परामर्श व सहयोग रहा।

जैन विश्व भारती के मानव संसाधन संबंधी कार्यों में मार्गदर्शन व निर्देशन रहा।

जैन विश्व भारती के प्रशासनिक कार्यों में परामर्श एवं सहयोग रहा।

जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय की विभिन्न विकास योजनाओं के चिंतन व विचार-विमर्श में विशेष सहभागिता रही।

चिंतन की स्पष्टता, समय प्रबंधन, कार्यनिष्पादन में प्रवीणता आदि विशिष्टताओं के कारण एक नए कार्यकर्ता के रूप में सामने आकर कुशलतापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया।

प्रेक्षाध्यान मासिक पत्रिका के विशेष संपोषक रहे।

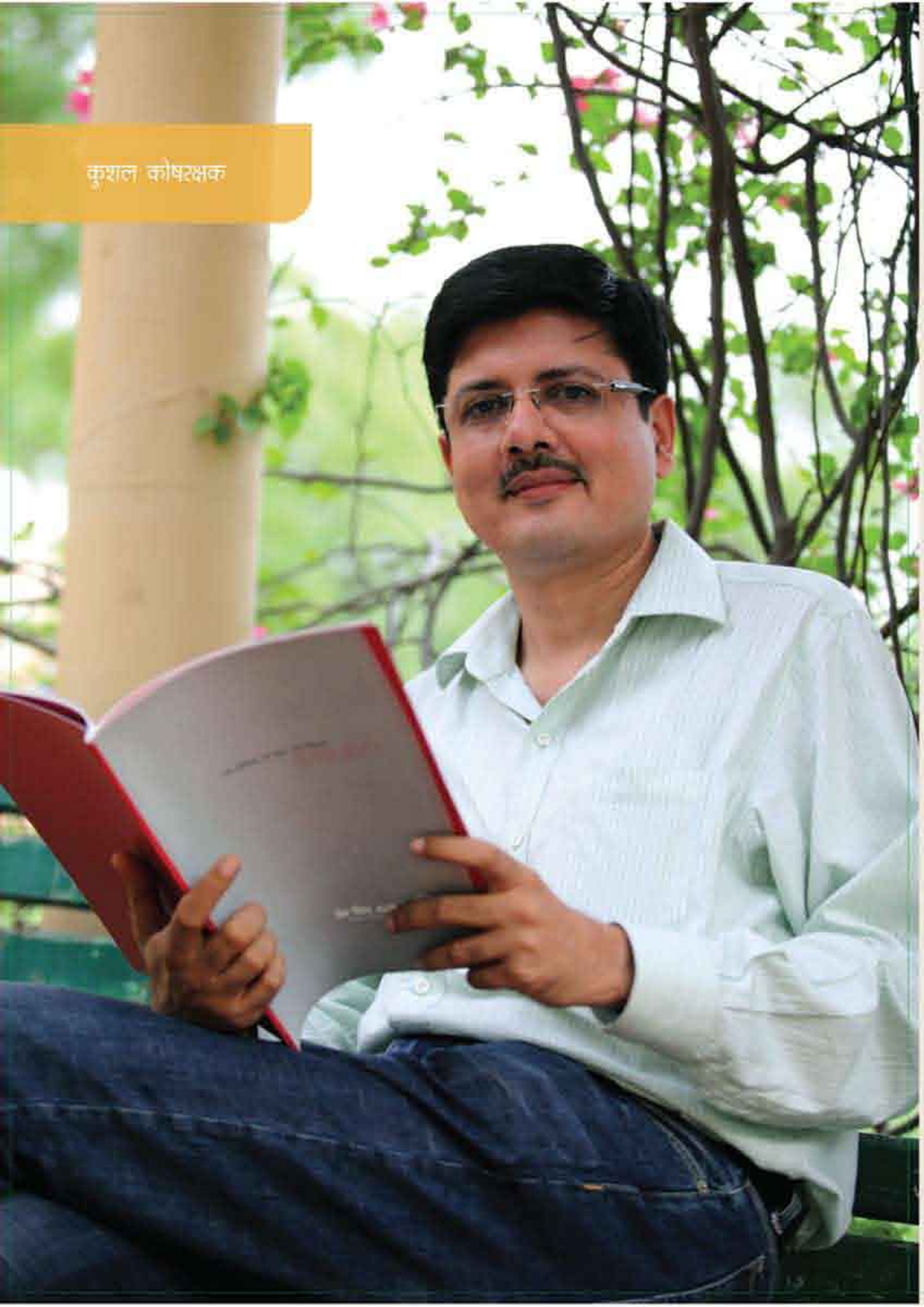

कुशल कोषरक्षक

श्री पारस बोहरा
कोषाध्यक्ष

दायित्व बोध के अनुपम मिसाल बन
बढ़ाया **कोषाध्यक्ष** पद का सम्मान
छह वर्षों तक कोष सम्भाला
निधि पर रखा नित ध्यान

अर्थागम अधिगम के रक्षक
लेखा कौशल का अभिज्ञान
पारस मणि सा स्वभाव आपका
संस्था का करते रहे अभ्युत्थान

आपके खाता - बही, लेखा ज्ञान से –

लेखा पुस्तकों एवं लेखा विभाग में स्पष्टता व पारदर्शिता बढ़ी।

जैन विश्व भारती में आंतरिक अंकेक्षण का कार्य प्रारम्भ हुआ।

प्रत्येक वित्तीय वर्ष की परिसम्पन्नता के साथ ही जैन विश्व भारती के आय-व्यय संबंधित समस्त खाते तैयार।

यथासमय अंकेक्षण का कार्य संपन्न।

जैन विश्व भारती का लेखा विभाग अधिक सक्रिय व प्रभावी बना।

संबुद्ध समन्वयक

श्री विजयसिंह चोरड़िया
संयुक्त मंत्री

संयुक्त मंत्री के पद पर रहकर
समन्वय साकार बना था
संस्था के हित अम का सीकर
गिरता सदा घना था

सहज सौम्य सुमधुर स्वभावी
हर जन उनका अपना था
विजय विभूषित भाल भारती के
सृजन का सुंदर सपना था।

संस्था के प्रति निष्ठा, सहयोग और समर्पण की भावना से आप –

जैन विश्व भारती के सभी निर्माण कार्यों की देख-रेख के मुख्य सहयोगी रहे।

जैन विश्व भारती के सभी प्रमुख आयोजनों की व्यवस्थाओं के मुख्य सूत्रधार रहे।

जैन विश्व भारती के प्रशासनिक कार्यों में सहयोगी रहे।

जैन विश्व भारती एवं केन्द्र के साथ संपर्क सूत्रों के मध्यस्थ की भूमिका का निर्वहन किया।

जैन विश्व भारती के सभी आयोजनों एवं गतिविधियों के सक्रिय सहभागी रहे।

समाज के साथ आपके व्यापक संबंधों से संस्था लाभान्वित हुई।

समाज को जैन विश्व भारती की गतिविधियों के साथ जोड़ने में प्रेरक की भूमिका रही।

जैन विश्व भारती की प्रत्येक गतिविधि में समन्वयक व सहयोगी के रूप में सक्रिय भूमिका रही।

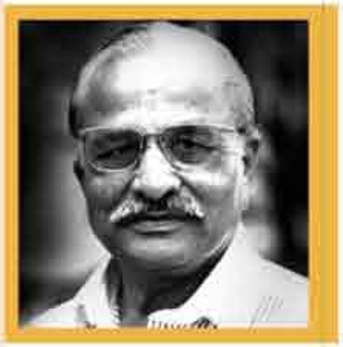

श्री अरविंद गोठी
संयुक्त मंत्री

प्रेक्षाध्यान की हर गतिविधि में
रहा सक्रिय सहयोग
कुशल प्रबंधन और व्यवस्था हित
दायित्वपूर्ण अनुयोग

सहज-शांत विमल व्यक्तित्व को
अरविंद-सम बुद्धि का योग
प्रेक्षा फाउण्डेशन के प्रकल्प में
प्रखर प्रतिभा का प्रयोग

प्रबंधकीय कौशल और कार्य-संपादन में प्रवीणता से –

जैन विश्व भारती की प्रेक्षाध्यान संबंधित विभिन्न गतिविधियों का कुशलतापूर्वक निर्देशन।

प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार एवं विकास-विस्तार में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही।

प्रेक्षाध्यान के विदेशी साधकों एवं जिज्ञासुओं को प्रेक्षाध्यान के समुचित प्रशिक्षण व उनकी अन्य व्यवस्थाओं के नियोजन में आपका विशेष सहयोग रहा।

देश भर में प्रेक्षाध्यान के शिविरों व कार्यशालाओं की आयोजना, व्यवस्थाओं आदि में आपका विशेष सहयोग तथा प्रेरणा रही।

विभिन्न टूर ऑपरेटर्स (यात्रा परिचालकों) से संपर्क कर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार का सघन प्रयास किया।

स्थानीय स्तर पर प्रेक्षावाहिनी के गठन व संचालन में मुख्य प्रेरक की भूमिका रही।

प्रेक्षाध्यान पत्रिका के प्रबंधन पक्ष के दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

संस्था की अन्य गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता कर अपना योगदान दिया।

साहित्य के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय सहयोग रहा।

श्री प्रमोद बैद
वित्त सलाहकार
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

विश्व भारती के अन्यतम सहयोगी
वित्त के कुशल सलाहकार
संस्था समुत्थान के प्रबुद्ध प्रयोगी
किया चिंतन का विस्तार

श्रद्धा भाव से कर्मरत रहकर
अनवरत प्रकल्पों का प्रसार
प्रमोद सहित संस्था की सेवा
गतिविधियों के हितपोषक उदार

आप अपने सक्रिय सहयोग एवं प्रबुद्ध चिंतन से –

जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकासात्मक कार्यों को गति प्रदान करते रहे।

जैन विश्व भारती की विभिन्न योजनाओं एवं प्रवृत्तियों के विकास हेतु चिंतन में सहयोगी रहे।

जैन विश्व भारती की विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यक्रमों आदि में सक्रिय सहभागिता की।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में मातृ संस्था की ओर से मनोनीत वित्त सलाहकार के रूप में उल्लेखनीय सेवाएँ दीं।

विश्वविद्यालय के विकास में यथायोग्य परामर्श दिया।

समय-समय पर विश्वविद्यालय का सक्षम प्रतिनिधित्व किया।

पावन प्रणति

तेरापंथ धर्मसंघ की विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के व्यापक विकास और विस्तार में यद्यपि संस्था के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं की महनीय भूमिका होती है, परंतु इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्राणदायिनी शक्ति होती है आचार्यों और चारित्रात्माओं की आध्यात्मिक दिशानिर्देशना, जो संस्थाओं की नींव को मजबूत कर दीर्घकालीन विकास के मार्ग को प्रशस्त करती है।

जैन विश्व भारती ने विगत छह वर्षों में जो कुछ भी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, जो भी उल्लेखनीय कार्य किए हैं, उसका मूल आधार परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी और आचार्य श्री महाश्रमणजी का पावन सान्निध्य और आध्यात्मिक निर्देशना रही है।

जैन विश्व भारती का नेतृत्व-वर्ग एवं संपूर्ण संचालक तंत्र परमपूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के प्रति पावन प्रणति निवेदित करता है, जिनके प्रेरणास्पद वचनों एवं असीम ऊर्जा ने जैन विश्व भारती की टीम में अत्यंत उत्साह का निरंतर प्रवाह किया।

पूरी टीम आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति अनंत आस्था एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिनकी आध्यात्मिक अनुशासना और सान्निध्य में जैन विश्व भारती ने विकास के कदम बढ़ाए।

यह टीम साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति हार्दिक श्रद्धा भाव और कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिनकी प्रेरणा दिशाबोध बन कार्य करती रही। 'मंत्री मुनि' श्री सुमेरमल 'लाडनूं' और मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभा जी के प्रति अंतर्भाव से आदर और कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिनके प्रेरक मार्गदर्शन ने इन छह वर्षों की यात्रा में उसे जैन विश्व भारती के विकास हित सदैव जागरूक बनाए रखा।

प्रभारी संतों के रूप में 'प्रेक्षा प्राध्यापक प्रोफेसर मुनि महेन्द्रकुमारजी एवं मुनि कीर्तिकुमारजी का दिशानिर्देश जैन विश्व भारती की गतिविधियों का प्रेरक बना। इस हेतु मुनिद्वय के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जैन विश्व भारती के इस छह वर्ष के कार्यकाल में विभिन्न प्रवृत्तियों और संकायों के प्रभारी संतों-समण संस्कृति संकाय हेतु 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' एवं मुनिश्री जयन्त कुमारजी, प्रेक्षाध्यान प्रकल्प हेतु मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, जीवन विज्ञान हेतु 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलालजी, तुलसी कला दीर्घा के संबंध में 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन', मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयन्तकुमारजी, साहित्य संबंधी मार्गदर्शन हेतु साहित्य समिति के मुनिश्री विजयकुमारजी, मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी, साध्वीश्री जिनप्रभाजी, साध्वीश्री मुदितयशाजी एवं साध्वीश्री शुभ्रयशाजी आदि का मार्गदर्शन एवं दिशानिर्देश स्मरणीय रहा।

जैन विश्व भारती के इस छह वर्षीय कार्यकाल में संतों, साध्वियों और समणीवृंद का अनवरत आध्यात्मिक दिशानिर्देश और मार्गदर्शन मिलता रहा, जिसके लिए जैन विश्व भारती की टीम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित कर भविष्य में भी चारित्रात्माओं के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के योगक्षेम की मंगलकामना करती है।

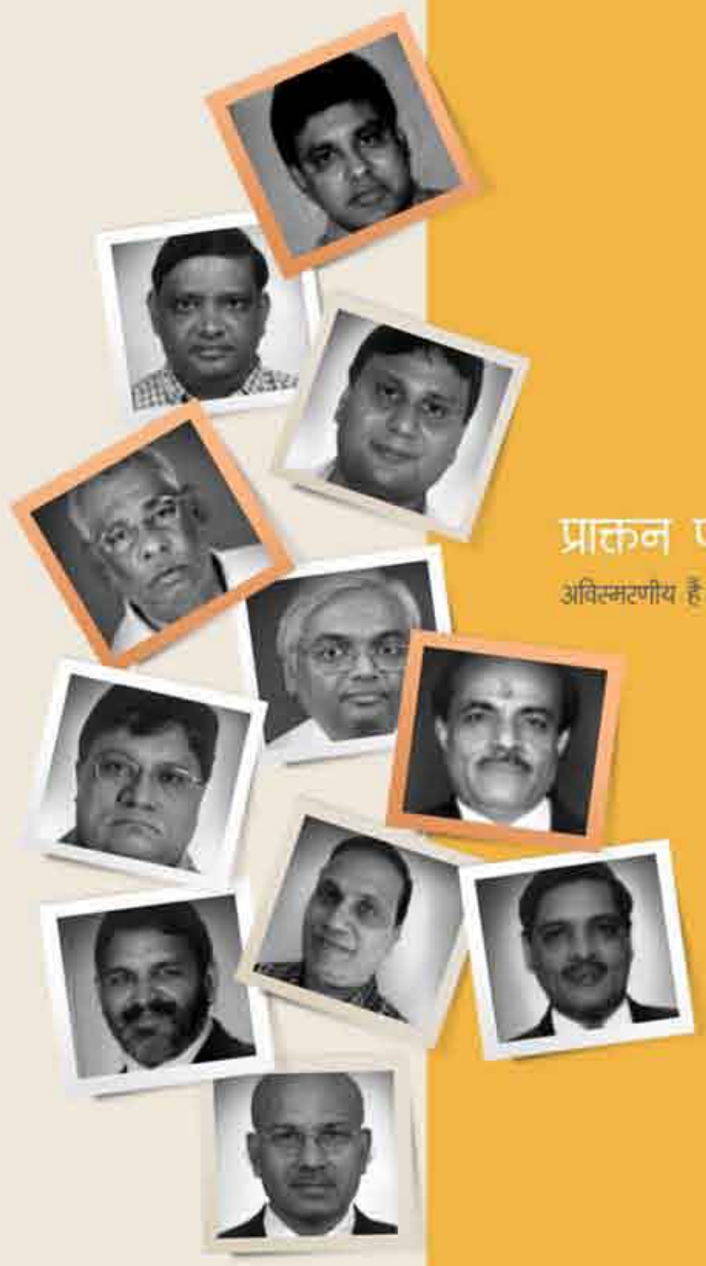

प्राक्तन पदाधिकारी

अविस्मरणीय हैं वे प्राक्तन पल।

श्री रमेश कुमार धाकड़

न्यासी : 2006-08
संयुक्त प्रधान न्यासी : 2008-10, 2010-12

धार्मिक एवं सामाजिक उन्नयन के प्रति समर्पित व्यक्तित्व का नाम है श्री रमेश कुमार धाकड़। आप संघ एवं संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित श्रावक हैं। अनेक संघीय एवं सामाजिक संस्थाओं में उच्चस्थ पदों पर आप अपनी विशिष्ट सेवाएं व सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

जैन विश्व भारती के न्यासी और संयुक्त प्रधान न्यासी के रूप में संस्था की विभिन्न गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहा है। प्रधान न्यासी के मुख्य सहयोगी बनकर आपने जैन विश्व भारती के ट्रस्ट बोर्ड को सक्रिय बनाया है। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं में आपका निरंतर आर्थिक सहयोग रहा तथा सक्रिय सहभागिता रही। जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित 'जय भिक्षु निलयम' के अन्तर्गत मुम्बई भवन के निर्माण में आपने मुख्य प्रेरक और सहयोगी की भूमिका निभाई। आपके प्रयासों से अनेक अनुदानदाता मुम्बई भवन के निर्माण में सहयोगी बने।

श्री बजरंगलाल बोथरा

उपाध्यक्ष : 2010-12

आपका व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं से विभूषित है। आचार की सरलता, व्यवहार की मधुरता और विचार की प्रबुद्धता के गुणों ने आपके व्यक्तित्व की विशिष्टता को रेखांकित किया है। नित नयी संभावनाओं ने आपके व्यक्तित्व और कर्तृत्व की अर्हताओं को वर्धापित किया है। तेरापंथ धर्मसंघ की विविध जनोपयोगी गतिविधियों में आपकी सहभागिता आपके समर्पण भाव की परिचायक है।

जैन विश्व भारती की प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों के संचालन में आपका सहयोग सदैव विभिन्न रूपों में मिलता रहा है। समय-समय पर विविध प्रवृत्तियों के संचालन में आपने जैन विश्व भारती को आर्थिक रूप से भी सहयोग प्रदान किया है। जैन विश्व भारती के दिल्ली में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, बैठकों आदि की व्यवस्थाओं के नियोजन तथा स्थानीय श्रावक समाज से संपर्क के द्वारा आपने उल्लेखनीय सहयोग किया है। अपने पद-दायित्व का सजगता से निर्वहन कर आपने जैन विश्व भारती की विकास यात्रा में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

श्री इंदरचंद दुधेड़िया

उपाध्यक्ष : 2010-12 (मार्च 2012 तक)

विद्वता और शालीनता का संगम आपके व्यक्तित्व की विलक्षणता है। आपका व्यवहार सदैव सरलता और सौम्यता से आपुरित रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति आपका समर्पण भाव प्रशंसनीय है।

दक्षिण भारत में जैन विश्व भारती की गतिविधियों के प्रचार-प्रसार एवं आयोजना में आपने उल्लेखनीय कार्य किया है। जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित आचार्य तुलसी इंन्टरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर के निर्माण में आपका परिवार प्रथम और मुख्य सहयोगी बना। फरवरी 2012 में बैंगलोर में आयोजित जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय विकास संबंधी चिंतन गोष्ठी की सफलता में आपकी महनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों में आपने सक्रिय व वांछनीय सहयोग प्रदान कर कुशलतापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया है।

श्री भीकमचंद नाहटा

उपाध्यक्ष : 2010-12

हसमुख चेहरा एवं मिलनसारिता की मिसाल है – श्री भीकमचंद नाहटा। एक युवा कार्यकर्ता के रूप में समाज में आपकी एक विशिष्ट पहचान है। कुशल नेतृत्व क्षमता एवं विलक्षण कार्यशैली से आपने धर्मसंघ की अनेक योजनाओं को क्रियान्विति तक पहुंचाया है।

जैन विश्व भारती को विभिन्न रूपों में आपका सहयोग प्राप्त हुआ है। समाज की अनेक नयी प्रतिभाओं को आपने जैन विश्व भारती से जोड़ा है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रदत्त दायित्व का आपने कुशलतापूर्वक निर्वहन किया है।

श्री धनपतसिंह दूगड़

उपाध्यक्ष : 2010-12 (मार्च 2012 से)

श्रमशीलता, कर्मठता और जागरुकता के गुणों ने आपको एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। धर्मसंघ एवं समाज की विभिन्न योजनाओं में आप सक्रिय सहयोग प्रदान करते रहते हैं।

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपने उदारमना भाव से सहयोग दिया है। जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत भी आपका सहयोग रहा है। पूर्व में जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका जुड़ाव संस्था से रहा। वर्तमान में मार्च 2012 से जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष एवं जुलाई 2012 से सेवाभावी रसायनशाला के ट्रस्टी के रूप में संस्था आपके व्यक्तित्व और कर्तृत्व से लाभान्वित हो रही है। जैन विश्व भारती की गतिविधियों के संचालन में आपकी निरन्तर सक्रिय सहभागिता रही है।

श्री राकेश कठोतिया

उपाध्यक्ष : 2006-08
कुलपति : 2008-10

सौम्य व्यक्तित्व, मृदु व्यवहार और गंभीर प्रवृत्ति के गुणों से संपन्न श्री राकेश कठोतिया तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट कार्यकर्त्ता है। एक सक्रिय युवा कार्यकर्त्ता के रूप में आप निरन्तर क्रियाशील हैं और आपकी यह क्रियाशीलता अन्य कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत भी है।

जैन विश्व भारती के सत्र 2008-10 के कार्यकाल में आपने संस्था के सर्वोच्च संवैधानिक 'कुलपति' के पद को सुशोभित किया एवं संस्था के विकास में अपना अमूल्य मार्गदर्शन व सहयोग प्रदान किया। अपने उदात्त एवं दूरदर्शी चिंतन तथा संघ व संघपति के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव के कारण आप जैन विश्व भारती के सबसे कम उम्र के कुलपति बने। इससे पूर्व उपाध्यक्ष के रूप में भी आपकी उल्लेखनीय सेवाएं व सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के अंतर्गत संचालित विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल प्रबंधन समिति के चेयरमैन और मुख्य संयोजक के रूप में आपने संस्था की शिक्षा प्रवृत्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में प्रबंध मण्डल में मातृ संस्था के सक्षम प्रतिनिधि के रूप में भी आपका विश्वविद्यालय के विकास में चिंतन प्राप्त होता रहा। आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशन में निर्मित 'जैन विद्वान परियोजना' के आप मुख्य सूत्रधार रहे। जैन विश्व भारती की विविधआयामी गतिविधियों के संचालन में आपका विशिष्ट योगदान सदैव मिलता रहा है।

श्री भीखमचंद पुगलिया

मंत्री : 2006-08, 2008-10

विनम्र स्वभाव, पुरुषार्थी कर्तृत्व और समर्पित व्यक्तित्व का रूप है – श्री भीखमचंद पुगलिया। मौन रहकर कार्य करना आपके व्यक्तित्व का विलक्षण गुण है। समय-समय आयी नवीन संभावनाओं ने आपके व्यक्तित्व की अर्हताओं को वर्धापित किया है।

चार वर्षों तक मंत्री के रूप में जैन विश्व भारती के विभिन्न क्रियाकलापों में आपने समर्पण व सक्रियता के साथ योगदान दिया है। संस्था के सभी प्रशासनिक कार्यों में आपका यथायोग्य मार्गदर्शन मिलता रहा। समय-समय पर आपने विभिन्न स्थानों एवं विभिन्न आयोजनों में जैन विश्व भारती का समुचित प्रतिनिधित्व किया है। संस्था के संचालित विविध प्रकल्पों में आपने समय-समय पर अपेक्षानुसार आर्थिक संपोषण भी दिया है। तेरापंथ धर्मसंघ के विशद श्रावक समाज से सम्पर्क करके आपने जैन विश्व भारती की विविधोन्मुखी गतिविधियों को विस्तार दिया है तथा अपने दायित्व का कुशलता से निर्वहन कर संस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्री विनोद बैद

उपाध्यक्ष : 2006-08

वरिष्ठ उपाध्यक्ष : 2008-10

दूरदर्शी सोच और उर्वर चिंतन की विशिष्टता के गुणों का प्रतिरूप है – श्री विनोद बैद। अपनी प्रखर बुद्धि और गहन चिंतन से अनेक विशिष्ट संघीय व संस्थागत कार्यों को संपादित किया है। कार्यशैली की विभिन्नता आपके व्यक्तित्व की विशेषता रही है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के वेब-बेस्ड लर्निंग प्रोजेक्ट एवं मैचिंग ग्राण्ट तथा मथारु एसोसिएट्स के मामले में आपने सक्रिय सहयोग देकर मातृ संस्था के दायित्व को कुशलता से निभाया। जीवन विज्ञान की प्रवृत्ति से संबंधित विभिन्न कार्यों - जीवन विज्ञान प्रारूप निर्माण, प्रचार-प्रसार सामग्री निर्माण आदि में आपका विशेष योगदान रहा। आपके निर्देशन में जीवन विज्ञान अकादमी का सक्रिय स्वरूप सामने आया। आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर तथा जय भिक्षु निलयम की योजना के निर्माण में आपकी मुख्य भूमिका रही। जय भिक्षु निलयम की महत्वपूर्ण परियोजना आपके कार्यकाल में ही संपन्न हुई एवं उसमें आपका उल्लेखनीय सहयोग रहा। जैन विश्व भारती के मास्टर प्लान के निर्माण के अतिरिक्त आपने संस्था के चर्तुदिक विकास में सर्वात्मना भाव से सक्रिय सहयोग दिया। एक जागरूक कार्यकर्ता के रूप में आपने अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए जैन विश्व भारती की प्रवृत्तियों व गतिविधियों में समय-समय पर तन-मन-धन से सहयोग दिया।

श्री बुधसिंह सेठिया

उपाध्यक्ष : 2008-10

आपका व्यक्तित्व उदात्त एवं स्वभाव शांत एवं सहज है। आप बिना नाम एवं पद के काम करने में विश्वास रखते हैं। शिक्षा के विकास के प्रति आपकी रुचि आरंभ से ही रही है। जैन विश्व भारती की शिक्षा प्रवृत्ति के मुख्य आधार जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय को आपका समुचित मार्गदर्शन और सहयोग मिला है।

आपने विभिन्न मुद्दों के संबंध में विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बीच आपने सशक्त संपर्क सूत्र का कार्य कर मातृ संस्था के दायित्व निर्वहन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। विश्वविद्यालय की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में आपका विशेष मार्गदर्शन रहा है। इसके अतिरिक्त जैन विश्व भारती की प्रवृत्तियों के संचालन में आपने समय-समय पर वांछित सहयोग दिया है। सत्र 2010-12 में जैन विश्व भारती के प्रभारी के रूप में भी आपका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन संस्था के सर्वांगीण विकास हेतु प्राप्त हुआ।

श्री प्रकाशचंद मुथा

उपाध्यक्ष : 2008-10

सहयोगी भाव, कर्त्तव्यनिष्ठा और दायित्व जागरूकता का संगम आपके व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है। संघ और संघपति के प्रति आपका निष्ठा भाव धर्मसंघ में आपकी सक्रिय भूमिका से स्पष्ट होता है। आपके व्यक्तित्व में अनेक प्रशंसनीय विशिष्टताएं हैं।

दक्षिण भारत में जैन विश्व भारती की गतिविधियों को बढ़ाने और प्रचार-प्रसार करने में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों के संचालन में समय-समय पर आपका आर्थिक सहयोग मिला है साथ ही साथ जैन विश्व भारती परिसर स्थित जय भिक्षु निलयम के अन्तर्गत निर्मित तमिलनाडु भवन के निर्माण में आपने मुख्य प्रेरक और सहयोगी की भूमिका निभाई है। चेन्नई में आयोजित जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय चिंतन गोष्ठी की आयोजना में भी आपने सहयोग कर अपने दायित्व की जागरूकता का परिचय दिया है। जैन विश्व भारती की विकास यात्रा में आपने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

श्री भूरामल श्यामसुखा

संयुक्त मंत्री : 2006-08, 2008-10

शांत, गंभीर और सरल स्वभाव के धनी श्री भूरामल श्यामसुखा धर्मसंघ के एक मूक कार्यकर्ता हैं। संघ व संघपति के प्रति आपका निष्ठाभाव प्रशंसनीय है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अहिंसा यात्रा के दौरान आपने लम्बे समय तक रास्ते की विशिष्ट सेवा कर संघ व संघपति के प्रति सेवा भावना का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। आपकी सेवाओं के मूल्यांकन स्वरूप आपको जैन विश्व भारती द्वारा 'संघ सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया।

आपने जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्रदान किया तथा सक्रिय सहभागिता से संस्था की गतिविधियों को गति प्रदान करने में योगदान दिया। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित आगम मंथन प्रतियोगिता एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। आपने अपने प्रभाव और सम्पर्कों से जैन विश्व भारती से नए व्यक्तियों और नए अनुदानदाताओं को जोड़कर संस्था के विकास व विस्तार के द्वार उद्घाटित किए। अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर आपने जैन विश्व भारती की विकास यात्रा में विशिष्ट भूमिका निभाई है।

समर्थक एवं संरक्षक

जिनके सर्वात्म समर्थन एवं सर्वविध संरक्षण से
प्रोज्ज्वल रहा छह-वर्षीय यात्रा-पथ।

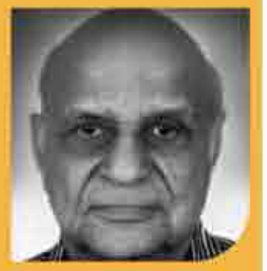

श्री गोविन्दलाल सरावगी

शासन भक्त सरावगी परिवार के वरिष्ठ सदस्य 'शासनसेवी' श्री गोविन्दलाल सरावगी अपनी गौरवशाली पारिवारिक परंपरा का निर्वहन करते हुए धर्मसंघ की विशिष्ट सेवा कर रहे हैं। जैन विश्व भारती को प्रारंभ से ही आपका विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। आप समय-समय पर स्वप्रेरणा से संस्था को सहयोग देते रहते हैं। जैन विश्व भारती के अंतर्गत आपके प्रायोजकीय सहयोग से चार पुरस्कार संचालित हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं को प्रतिवर्ष प्रदान किए जाते हैं। हाल ही में आपने इन पुरस्कारों के आजीवन सुव्यवस्थित संचालन की दृष्टि से जैन विश्व भारती के अंतर्गत 51 लाख रुपये के अनुदान से 'एम.जी. सरावगी स्मृति कोष' की स्थापना की है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित वार्षिक पंचांग 'जय तिथि पत्रक' में लंबे समय से निरंतर आपका सहयोग प्राप्त हो रहा है। जैन विश्व भारती की किसी भी योजना के लिए एक निवेदन पर आपका सहयोग उपलब्ध रहता है। समय-समय पर आप जैन विश्व भारती एवं अन्य संघीय गतिविधियों के लिए अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रदान करते रहते हैं। आपकी जागरूकता, सहयोग एवं समन्वय भावना तथा संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा उल्लेखनीय एवं प्रेरणास्पद है।

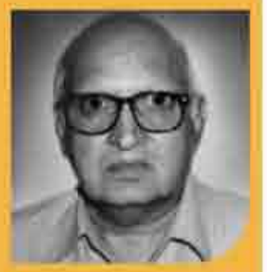

श्री नांगीलाल सेठिया

जैन विश्व भारती के परामर्शक मण्डल में एक प्रबुद्ध परामर्शदाता के रूप में संस्था आपके चिन्तन और विचारों से सदैव लाभान्वित होती रही है। राजनैतिक स्तर पर आपके प्रगाढ़ और व्यापक संपर्कों तथा संबंधों का जैन विश्व भारती को लाभ विभिन्न रूपों में मिलता रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य को अन्तरराष्ट्रीय स्तर के प्रकाशनों से प्रकाशित करवाने में आपकी विशिष्ट भूमिका रही है जिससे आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान मिली है। मई 2009 में पेंग्विन बुक्स इण्डिया द्वारा प्रकाशित आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृति "Sun will rise again" के दिल्ली सरकार की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा हुए लोकार्पण समारोह तथा नवम्बर 2011 में राजधानी दिल्ली में हॉपर कॉलिन्स पब्लिशर्स इण्डिया लि. द्वारा प्रकाशित आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृति "Transform Your Self" के मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा हुए लोकार्पण समारोह की सम्पूर्ण आयोजना की पृष्ठभूमि एवं व्यवस्थाओं के नियोजन में आपका सक्रिय योगदान रहा है। समय-समय पर जैन विश्व भारती को आपका समुचित मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता रहा है। संस्था की विभिन्न गतिविधियों में आपका आर्थिक सहयोग भी प्राप्त होता रहा।

श्री लालचंद दिंधी

तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च नियामक संस्था 'तेरापंथ विकास परिषद' के संयोजक के रूप में जैन विश्व भारती की विविधोन्मुखी गतिविधियों में आपका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन एवं परामर्श निरंतर उपलब्ध रहा है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में आपने विश्वविद्यालय को अपने कुशल निर्देशन से विकास के पथ पर अग्रसर किया। प्रशासनिक क्षेत्र में उच्चस्थ पदों पर आपके कार्यानुभवों का लाभ जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय को विभिन्न रूपों में प्राप्त हुआ। सत्र 2006-08 में जैन विश्व भारती के अंतर्गत विद्वत् परिषद के सदस्य के रूप में भी संस्था को आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई। प्रशासनिक सेवा में उच्च पद पर कार्यरत होने के कारण अत्यंत व्यस्तता के बावजूद संस्था की अपेक्षानुसार आपकी सेवाएँ एवं सहयोग सदैव उपलब्ध रहा।

श्री कन्हैयालाल छाजेड़

तेरापंथ धर्मसंघ से लम्बी अवधि से जुड़े होने के कारण आपके अनुभवों तथा परामर्श से जैन विश्व भारती सदैव लाभान्वित होती रही है। जैन विश्व भारती को गत छह वर्षों से परामर्शक के रूप में आपका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहा है तथा आपने समुचित परामर्श और मार्गदर्शन के द्वारा संस्था को विकास के मार्ग पर प्रशस्त किया है। जैन विश्व भारती की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति शोध के अन्तर्गत हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग में निदेशक के रूप में आपका विशेष सहयोग मिला है। वर्धमान ग्रंथागार में संरक्षित जैन शासन की अमूल्य धरोहर-हस्तलिखित ग्रंथों एवं पाण्डुलिपियों की सुरक्षा व संरक्षण हेतु अनेक कार्यकारी प्रयास आपकी कुशल निर्देशना में किए गए। जैन विश्व भारती को जब भी आपके मार्गदर्शन की अपेक्षा हुई आपने संस्था हितैषी बनकर समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया है और अपनी सहभागिता दर्ज की है। सन् 2009 में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जैन विश्व भारती में चातुर्मास के दौरान आपका विशेष सहयोग एवं सेवाएँ प्राप्त हुई। एक जागरूक प्रहरी के रूप में आप समय-समय पर हमें सजग करते रहे हैं।

श्री जंवरीलाल बैंगानी

जैन विश्व भारती को गत छह वर्षों के दौरान जब भी आपके परामर्श की अपेक्षा हुई, आपने संस्था के हित में समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया। वर्ष 2008 में जैन विश्व भारती की इकाई 'श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र' बीदासर की भूमि की रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से करवाने में आपकी उल्लेखनीय भूमिका एवं सहयोग रहा। सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के लिए भी समय-समय पर आपका चिंतन एवं सुझाव प्राप्त होते रहे। सत्र 2006-08 में अमृत कोष आय नियोजन समिति के सदस्य के रूप में भी आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई।

श्री बनेचंद मालू

धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावक के रूप में आपके समुचित परामर्श का लाभ संस्था को प्राप्त हुआ है। जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 में परामर्शक के रूप में आपका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती की शोध एवं साहित्य प्रवृत्ति के लिए आपका उल्लेखनीय आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। समय-समय पर जैन विश्व भारती के विभिन्न कार्यक्रमों एवं आयोजनों में आपकी सहभागिता रही। संस्था के विकास हेतु आपका स्वस्थ चिंतन सदैव उपलब्ध रहा।

श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी

जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 एवं 2008-10 में ट्रस्टी तथा 2010-12 में परामर्शक के रूप में आपकी सेवाएँ व सहयोग प्राप्त हुआ। ट्रस्ट बोर्ड में सक्रिय ट्रस्टी के रूप में आपकी भूमिका रही। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों एवं योजनाओं हेतु आपका समुचित परामर्श एवं चिंतन निरंतर उपलब्ध रहा। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल में सदस्य के रूप में आपने मातृ संस्था का सक्षम प्रतिनिधित्व किया। जैन विश्व भारती परिसर में आपके परिवार के आर्थिक सौजन्य से निर्मित 'सुमेरु' अतिथि गृह का संस्था के साथ उपयोग संबंधी अनुबंध का कार्य आपके सहयोग से हो सका। 'सुमेरु' अतिथि गृह के ऊपर प्रथम तल के निर्माण को भी आपके द्वारा स्वीकृति प्राप्त है। इस प्रकार संस्था को विभिन्न रूपों में आपका सहयोग प्राप्त रहा।

श्री सुमतिचंद गोठी

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु आपका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साहित्य प्रकाशन हेतु आपका विशेष सहयोग रहा। जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत मुंबई भवन के निर्माण में आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाश्रमणजी के वर्ष 2010 के सरदारशहर चातुर्मास में जैन विश्व भारती की विभिन्न एवं कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग उपलब्ध रहा। सत्र 2006-08 में जैन विश्व भारती के विद्वत् परिषद के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई।

श्री टोडरमल लालानी

जैन विश्व भारती को विभिन्न रूपों में आपकी सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुआ। सत्र 2006-08 में विद्वत् परिषद के सदस्य, सत्र 2008-10 में परामर्शक मंडल के सदस्य एवं सत्र 2010-12 में बोर्ड ऑफ आर्बीट्रेटर के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई। वर्तमान में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल में मातृ संस्था के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। जैन विश्व भारती को विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु आपका मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त हो रहा है। समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, बैठकों आदि में भी आपकी सक्रिय सहभागिता रही।

श्री ताराचंद रामपुरिया

तेरापंथ धर्मसंघ के एक वरिष्ठ श्रावक के रूप में आपके चिंतन से जैन विश्व भारती को सदैव लाभ मिलता रहा है। जैन विश्व भारती से आपका जुड़ाव लम्बे समय से रहा है एवं संस्था को आपने उच्चस्थ पदों पर अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की हैं। तुलसी कला दीर्घा के निदेशक एवं जैन विश्व भारती द्वारा संचालित पुरस्कारों के लिए गठित पुरस्कार नियोजन उप समिति के सदस्य के रूप में आपका मार्गदर्शन और सहयोग संस्था को सतत रूप से मिला है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के वित्त सलाहकार के रूप में भी आपकी महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई हैं। जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों में समय-समय पर आपका परामर्श संस्था के हित के लिए मिलता रहा है। अधिकांश समय जैन विश्व भारती परिसर में ही प्रवासित होने के कारण संस्था की अनेक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय सहभागिता प्राप्त होती है।

श्री सिद्धराज भंडारी

कुशाग्र बुद्धि, सही समझ एवं तीव्रधारक क्षमता जैसी विलक्षण विशेषताएँ आपके व्यक्तित्व को परिचायक हैं। प्रशासन के क्षेत्र में आपकी गहरी पैठ रही है। विद्या वैभव से संपन्न एवं कुशल प्रशासक के साथ-साथ आप एक संघनिष्ठ श्रावक भी हैं। तेरापंथ धर्मसंघ की विविध गतिविधियों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है। सत्र 2006-08 में जैन विश्व भारती के कुलपति के रूप में आपके प्रबुद्ध चिंतन और गहन विचारों से संस्था को लाभ मिला है। इससे पूर्व आपने जैन विश्व भारती को अध्यक्ष के रूप में सक्षम नेतृत्व प्रदान किया है। विश्व प्रतिष्ठित व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के साथ आपके कार्य अनुभवों का संस्था के विकास और विस्तार में योगदान रहा है। जैन विश्व भारती की गतिविधियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने की योजनाओं में आपकी महनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती की अनेक गतिविधियों के लिए आपने उदारमना भाव से सहयोग दिया है।

श्री राजेन्द्र कुमार डाबड़ीवाल

संघ भक्त डाबड़ीवाल परिवार के सदस्य श्री राजेन्द्र कुमार डाबड़ीवाल जैन विश्व भारती के विशेष सहयोगी रहे हैं। सत्र 2006-08 में अमृत निधि कोष आय नियोजन समिति एवं सत्र 2010-12 में बोर्ड ऑफ आर्बीट्रेटर के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के विकास में डाबड़ीवाल परिवार का योगदान उल्लेखनीय है।

श्री मूलचंद बोथरा

जैन विश्व भारती के साथ आपका जुड़ाव लंबे समय से रहा है। सत्र 2000-02 में आपने जैन विश्व भारती को अध्यक्ष के रूप में कुशल नेतृत्व प्रदान किया। संस्था को समय-समय पर विभिन्न रूपों में आपका सहयोग एवं सेवाएँ प्राप्त होती रहती हैं। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय को भी आपसे निरंतर आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहता है। विगत छह वर्षों में संस्था की विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु आपका कुशल मार्गदर्शन एवं अपेक्षित सहयोग उपलब्ध रहा।

श्री पन्नालाल बैद

जैन विश्व भारती को द्विवर्षीय लगातार तीन कार्यकाल सत्र 2006-12 में ट्रस्टी के रूप में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुआ। ट्रस्ट बोर्ड में सक्रिय ट्रस्टी के रूप में आपकी भूमिका रही। जैन विश्व भारती की विभिन्न निर्माण योजनाओं जैसे महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, दमकोर, आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर, जय भिक्षु निलयम आदि में आपका उल्लेखनीय आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में कंप्यूटर लैब के निर्माण में भी आपकी मुख्य भूमिका रही। जैन विश्व भारती की किसी भी प्रवृत्ति के लिए आपका अपेक्षित सहयोग एवं सहभागिता सदैव उपलब्ध रही।

श्री ख्यालीलाल तातेड़

जैन विश्व भारती की अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन में आपने उदारमना भाव से योगदान दिया है। जैन विश्व भारती परिसर स्थित जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत निर्मित मुंबई भवन के निर्माण में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। मुंबई के श्रावक समाज को अधिकाधिक रूप में जैन विश्व भारती की गतिविधियों से जोड़ने में आपने एक प्रेरक की भूमिका निभाई है। सत्र 2006-08 में आपने अमृत निधि कोष आय नियोजन समिति के सदस्य के रूप में संस्था में अपनी सहभागिता दर्ज की।

जैन विश्व भारती के मुंबई में आयोजित कार्यक्रमों, बैठकों आदि की आयोजना में आपका विशेष सहयोग रहा।

श्री जसकरन चौपड़ा

आप जैन विश्व भारती के विशेष सहयोगी रहे हैं। सन् 2006-08 में जैन विश्व भारती के अंतर्गत अमृत कोष आय नियोजन समिति के सदस्य के रूप में संस्था को आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सत्र 2008-10 में अध्यक्ष के रूप में जैन विश्व भारती को आपका विशेष सहयोग एवं सेवाएँ प्राप्त हुई। संस्था के विकास में आपका समुचित परामर्श सदैव उपलब्ध रहा।

श्री शार्दूलसिंह जैन

जैन विश्व भारती के द्विवर्षीय तीन कार्यकाल के दौरान सत्र 2006-12 में परामर्शक के रूप में आपकी सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के विकास हेतु आपका स्वस्थ चिंतन एवं मार्गदर्शन निरंतर उपलब्ध रहा। वर्ष 2007 में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के समीप की भूतोड़िया परिवार की भूमि जैन विश्व भारती को दिलवाने में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही। आपके सद्प्रयासों से यह कार्य सुगमतापूर्वक हो पाया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सन् 2009 में लाडनूं चातुर्मास के दौरान जैन विश्व भारती को आपका विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

श्रीमती तारा सुराणा

विगत छह वर्षों से जैन विश्व भारती से विभिन्न रूपों में आपका सक्रिय जुड़ाव रहा है। सत्र 2006-08 एवं सत्र 2010-12 में ट्रस्टी तथा सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ संस्था को प्राप्त हुई। जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत कोलकाता भवन के निर्माण में आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य एवं जय तिथि पत्रक में भी निरंतर आपका सहयोग प्राप्त होता रहा। संस्था की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही।

श्री बच्छराज नाहटा

विगत छह वर्षों से निरंतर जागरूक और सक्रिय संचालिका समिति सदस्य के रूप में जैन विश्व भारती को आपके सुझावों का लाभ सदैव मिलता रहा है। जैन विश्व भारती के साथ लंबे समय से आपका जुड़ाव है, जो निरंतर सक्रियता के साथ आज भी बना हुआ है। आपने विभिन्न पदों पर कार्य कर जैन विश्व भारती के सर्वांगीण विकास में अपना उल्लेखनीय योगदान किया है। लाडनूं में जैन विश्व भारती परिसर संबंधी, जमीन संबंधी एवं अन्य सभी प्रशासनिक कार्यों में आपका सहयोग तत्परता से मिलता रहता है। विश्वविद्यालय के समीप अवस्थित भूतोड़िया परिवार की भूमि जैन विश्व भारती को दिलवाने तथा उसके रजिस्ट्री आदि कार्यों में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। उसी भूमि पर वर्तमान में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय का विशाल भवन निर्मित है। संस्था की प्रायः सभी गतिविधियों में यथावसर आपकी सक्रिय सहभागिता रहती है। आपके समुचित मार्गदर्शन से संस्था समय-समय पर लाभान्वित हुई है।

श्री के. सी. जैन

भारतीय प्राशासनिक सेवा से जुड़े होने के कारण आपके प्रशासनिक ज्ञान और अनुभवों से जैन विश्व भारती लाभान्वित हुई है। जैन विश्व भारती के संविधान संशोधन जैसे विविध वैधानिक कार्यों में आपका परामर्श एवं सहयोग रहा है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रबंध मण्डल में मातु संस्था का सक्षम प्रतिनिधित्व कर आपने विश्वविद्यालय के विकास में भी अपना उर्वर चिंतन दिया है। जैन विश्व भारती को आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35(1)(iii) के अधीन प्राप्त छूट के वर्ष 2010 में हुए नवीनीकरण के कार्य में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही। इसके अतिरिक्त जीवन विज्ञान अकादमी के दिल्ली कार्यालय को कुशलतापूर्वक निर्देशन देने के साथ-साथ आपने जीवन विज्ञान की विभिन्न गतिविधियों को आगे बढ़ाने में अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया है। जैन विश्व भारती व विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में आपका बहुमूल्य परामर्श निरंतर प्राप्त होता रहा है।

श्री राजकरण सिरोहिया

तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सत्र 2006-08 में अध्यक्ष के रूप में जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपका परामर्श, सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त होती रही है। आपने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में महासभा भवन में जैन विश्व भारती के कार्यालय के लिए स्थान उपलब्ध करवाकर महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया, जिससे संस्था की गतिविधियों एवं योजनाओं को विस्तार मिला। उसके पश्चात भी आपका मार्गदर्शन निरंतर उपलब्ध रहा।

श्री रतनलाल पारख

जैन विश्व भारती को सत्र 2008-10 में बोर्ड ऑफ आर्बीट्रेटर के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएं प्राप्त हुई हैं। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु आपका समुचित परामर्श सदैव उपलब्ध रहा। प्रेक्षाध्यान प्रवृत्ति के विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु आपका विशेष योगदान रहा। प्रेक्षाध्यान को आपने अपनी जीवन शैली का अंग बनाकर उससे होने वाले लाभ को महसूस किया है एवं अपने जीवन को रूपान्तरित किया है। समय-समय पर आप प्रेक्षाध्यान शिविरों में भाग लेते रहे हैं। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' के आप सहयोगी रहे हैं। संघीय साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी आपका उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

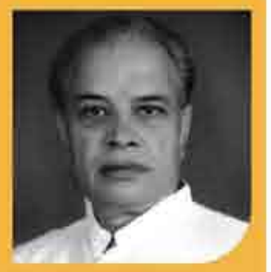

श्री नौरतनमल दूगड़

तेरापंथ धर्मसंघ में प्रबुद्ध व्यक्तित्व के रूप में आपकी अलग पहचान है। उच्च शैक्षणिक योग्यता एवं बौद्धिक क्षमता के कारण देश के प्रतिष्ठित व्यावसायिक संस्थान 'इंडियन एक्सप्रेस समूह' में आपने उच्चस्थ पद पर दीर्घकाल तक अपनी सेवाएं दी है। देश के शीर्षस्थ राजनेताओं एवं प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके व्यक्तिगत संबंध रहे हैं। संघीय स्तर पर भी आपकी विशिष्टताओं, कार्यानुभवों एवं संपर्कों का लाभ प्राप्त हुआ है। जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों के विकास हेतु आपका उर्वर एवं सटीक चिंतन समय-समय पर प्राप्त होता रहा। संघीय साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार हेतु आपके समयोचित एवं उपयोगी सुझाव प्राप्त हुए।

श्री विनोद घोड़ावत

जैन विश्व भारती को आपका एवं आपके परिवार का विशिष्ट सहयोग प्राप्त है। सत्र 2008-10 में जैन विश्व भारती को परामर्शक मंडल के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएं एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के परिसर को प्रदूषण मुक्त रखने की पहल की दिशा में वर्ष 2009 में आपने जैन विश्व भारती को बैटरी से चलने वाली एक प्रदूषण रहित गाड़ी अनुदान स्वरूप प्रदान की। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता निरंतर प्राप्त होती

श्री कैलाशचंद गोयल

आपका एवं आपके परिवार का धर्मसंघ को विशिष्ट सहयोग प्राप्त है। जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में एवं सत्र 2010-12 में बोर्ड ऑफ आर्बीट्रेटर के सदस्य के रूप में आपकी विशिष्ट सेवाएं प्राप्त हुईं। संघीय साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपका विशेष योगदान रहता है। जैन एवं जैनेतर समाज तक साहित्य पहुंचाने में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती के संविधान संशोधन के कार्य में आपका मार्गदर्शन एवं परामर्श रहा। समय-समय पर संस्था की विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु जागरूक श्रावक के रूप में आपका स्वस्थ चिंतन प्राप्त होता रहा।

श्री स्वरूपचंद बरड़िया

जैन विश्व भारती की अनेक गतिविधियों और आयोजनों में आपका सहयोग एक सक्रिय संचालिका समिति सदस्य के रूप में मिलता रहा है। दिल्ली में जब भी संस्था की कोई संगोष्ठी या कार्यक्रम का आयोजन हुआ, उसमें आपकी सदैव उल्लेखनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती की प्रवृत्तियों के लिए समय-समय पर आपने आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया है। जैन विश्व भारती को जब भी आपकी सेवाओं और सहयोग की अपेक्षा हुई, आप सदैव उसके लिए उपलब्ध रहे।

श्री सुमेरमल डागा

विगत छह वर्षों से जैन विश्व भारती के कोलकाता कार्यालय के लेखा-खातों के मानद अंकेक्षक के रूप में आपका विशेष सहयोग मिला है। संस्था के लेखा संबंधी कार्यों में भी आपका समुचित मार्गदर्शन समय-समय पर मिलता रहा है। जैन विश्व भारती के लेखा विभाग की जागरूकता वृद्धि में आपका विशेष योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त एक जागरूक श्रावक के रूप में आपकी सेवाएं प्राप्त हुई है।

श्री कन्हैयालाल डुंगरवाल

विगत छह वर्षों से निरंतर जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। जैन विश्व भारती के प्रमुख आयोजनों, गतिविधियों, बैठकों आदि में आपका सदैव सक्रिय सहयोग व सहभागिता रहती है। संचालिका समिति में आपकी एक सक्रिय सदस्य के रूप में पहचान है। नवंबर, 2011 में जैन विश्व भारती की गुवाहाटी में आयोजित चिंतन गोष्ठी और संचालिका समिति की बैठक की आयोजना एवं व्यवस्थाओं आदि के नियोजन में आपका उल्लेखनीय सहयोग रहा। जैन विश्व भारती को यथासमय अपेक्षानुसार आपका सहयोग और सहभागिता निरंतर मिलती

श्री चैनरूप सिंढायिया

विगत छह वर्षों में संस्था की अनेक योजनाओं और प्रवृत्तियों में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका विशिष्ट सहयोग रहा है। जैन विश्व भारती के कोलकाता में आयोजित विविध कार्यक्रमों एवं आयोजनों आदि में आप सदैव सक्रिय रहे हैं। पूर्व में महासभा के अध्यक्ष के रूप में भी आपने जैन विश्व भारती को पूर्ण सहयोग दिया है। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के निवेदन पर महासभा में आपके अध्यक्षीय कार्यकाल में आपके निर्देशन में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अंतर्गत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तीन खंडों में विभक्त विशाल भवन के निर्माण का विशिष्ट कार्य संपन्न हुआ। धर्मसंघ के इतिहास में संभवतः यह प्रथम अवसर था कि किसी एक केन्द्रीय संस्था ने दायित्व के साथ दूसरी केंद्रीय संस्था को इस प्रकार का सहयोग किया है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' में लंबे समय से निरंतर आपका सहयोग प्राप्त हो

श्री सुखराज लेठिया

सत्र 2006 से 2012 तक तीन द्विवर्षीय कार्यकाल में निरंतर संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती को विभिन्न गतिविधियों में आपका निरंतर सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त होती रही है। जैन विश्व भारती के दिल्ली में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, बैठकों, संगोष्ठियों आदि की व्यवस्थाओं के नियोजन एवं दिल्ली के स्थानीय समाज की इन आयोजनों में सहभागिता सुनिश्चित करने में आपकी विशेष भूमिका रही।

श्रीमती सायर बैंगानी

विगत छह वर्षों से जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल में मातृ संस्था द्वारा मनोनीत सदस्य के रूप में आपकी विशेष सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त होते रहे है। जैन विश्व भारती की गतिविधियों के विकास हेतु आपका स्वस्थ चिंतन एवं सुझाव समय-समय पर प्राप्त होते रहते हैं।

श्री नवरत्नमल बच्छावत

जैन विश्व भारती के आप विशेष सहयोगी रहे हैं। सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सदस्य तथा सत्र 2010-12 में ट्रस्टी के रूप में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुए। वर्ष 2009 में आपने जैन विद्या के विकास हेतु 75 लाख रु. की राशि का फंड बनाकर और जैन विश्व भारती को अनुदान स्वरूप प्रदान कर जैन विद्या के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण सहयोग किया है। आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर, जय भिक्षु निलयम आदि निर्माण योजनाओं में भी आपका महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं योजनाओं में आपकी सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग रहा। फरवरी, 2012 में बैंगलोर में आयोजित चिंतन गोष्ठी की आयोजना में भी आपका विशेष सहयोग रहा।

श्री सुरिन्दर मित्तल

जैन विश्व भारती के सत्र 2006-08 में संचालिका समिति के सदस्य तथा सत्र 2008-10 में ट्रस्टी के रूप में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुए। जैन विश्व भारती के विभिन्न निर्माण कार्यों में सामग्री की आपूर्ति आदि के क्षेत्र में आपका सहयोग प्राप्त हुआ। अनेक प्रवृत्तियों एवं योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। वर्ष 2008 में जैन विश्व भारती परिसर में स्थित पंजाब भवन के नवीनीकरण के कार्य में आपकी मुख्य भूमिका एवं सहयोग रहा।

श्री प्रदीप चौपड़ा

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी विशेषज्ञता का लाभ जैन विश्व भारती को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास संबंधी चिंतन में मिला है। मातृ संस्था की ओर से विश्वविद्यालय के प्रबंध मण्डल के सदस्य के रूप में आपने विश्वविद्यालय की भावी विकास योजनाओं में मार्गदर्शन दिया है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विजन -2020 के निर्माण और क्रियान्वयन में आपकी अहम भूमिका रही है। इसके साथ ही आपने संस्थान में I-Leed में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के विकास में भी योगदान दिया है।

श्री अंबरलाल सिंघी

आप तेरापंथ धर्मसंघ में सदाबहार संयोजक के रूप में प्रतिष्ठित है। आपकी कुशल संयोजन शैली का लाभ जैन विश्व भारती को समय-समय पर प्राप्त हुआ है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सत्र 2010-12 में महामंत्री के रूप में जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपका सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त आपका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन हमारे लिए प्रेरणास्पद रहा।

श्री चंपक भाई मेहता

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों एवं योजनाओं में सक्रिय सहयोग मिला। सत्र 2006-08 में ट्रस्टी तथा सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। जैन विश्व भारती को जब भी आपके सहयोग की अपेक्षा हुई, आपका सक्रिय सहयोग हमेशा उपलब्ध होता रहा। संस्था की विभिन्न गतिविधियों में आपकी सहभागिता भी निरंतर प्राप्त होती रही।

श्री मदनलाल तातेड़

जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 में ट्रस्टी तथा सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई। जैन विश्व भारती संविधान संशोधन के कार्य तथा आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35 (1) (iii) के अधीन संस्था को प्राप्त छूट के नवीनीकरण में आपका विशेष सहयोग रहा। विश्वविद्यालय की गतिविधियों में भी आपका सक्रिय योगदान रहा। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय भवन के निर्माण की प्रारंभिक योजना में अर्थ संग्रह का दायित्व आपको दिया गया था, जिसे आपने कुशलतापूर्वक निभाया।

श्री शांतिलाल बरमेचा

सत्र 2006-08 में तथा सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका सहयोग प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सन् 2009 में जैन विश्व भारती चातुर्मास के दौरान प्रवास व्यवस्था समिति, लाडनूं के अध्यक्ष के रूप में आपका उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ एवं जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता रही। वर्तमान में जैन विश्व भारती में संचालित सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के प्रधान न्यासी के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हो रही है।

श्री पदमचंद पटावरी

तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावक के रूप में जैन विश्व भारती को आपके समुचित परामर्श का लाभ समय-समय पर प्राप्त हुआ है। संस्था की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है। संघ एवं संस्था के हित में अपने सुझाव प्रदान कर आपने हमेशा एक जागरूक श्रावक के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन किया है। आपकी कुशल लेखनी से आपने अनेक समसामयिक विषयों पर सटीक भाषा में अपनी कलम चलाई है। उन्हीं में से चुनिन्दा विषयों पर आधारित आपके आलेखों की दो पुस्तकें 'रास्ते रोशनी के' एवं 'पहरेदारी' जैन विश्व भारती को वर्ष 2010 में प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री बजरंग जैन

जैन विश्व भारती के साथ आप लंबे समय से जुड़े हुए हैं। जैन विश्व भारती के साथ सत्र 2006-08 में विद्वत् वरिषद के सदस्य के रूप में आपका जुड़ाव रहा। सत्र 2008-10 में जैन विश्व भारती के विकास परिषद द्वारा मनोनीत प्रभारी के रूप में आपका संस्था के सर्वांगीण विकास हेतु चिंतन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के शिष्ट परिषद के सदस्य के रूप में भी आपकी सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों, जैसे जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, जैन विद्या, साहित्य, शोध आदि के विकास हेतु समय-समय पर आपके सुझाव प्राप्त होते रहे एवं सहयोग मिलता रहा। अपनी प्रबुद्धता एवं शैक्षणिक योग्यता से धर्मसंघ के अनेक साधु-साध्वियों तथा समणियों को आप अध्यापन भी करवाते हैं।

श्री नरपतसिंह धोकड़िया

जैन विश्व भारती के ट्रस्टी के रूप में आपका सहयोग और सहभागिता विगत दो वर्षों से संस्था को प्राप्त हो रही है। जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों के विकास तथा अनेक निर्माण योजनाओं में आपने उदारमना भाव से सहयोग दिया है। विश्वविद्यालय के विकास कार्यों में आपकी सहभागिता रही है। फरवरी, 2012 में बैंगलोर में जैन विश्व भारती व जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास के संबंध में आयोजित चिन्तन गोष्ठी को सफल बनाने में भी आपने उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

श्री राजेन्द्र भूतोड़िया

लाडनूं का भूतोड़िया परिवार जैन विश्व भारती का विशिष्ट सहयोगी परिवार रहा है। जैन विश्व भारती के भूमि अनुदानदाताओं की श्रेणी में आपके परिवार का विशेष सहयोग रहा है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय जिस भूमि पर अवस्थित है, वह आपके परिवार द्वारा अनुदानित है। विश्वविद्यालय के अंतर्गत नवनिर्मित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय का भव्य भवन जिस भूमि पर निर्मित है, उस भूमि को आपके परिवार द्वारा वर्ष 2007 में सुलभ मूल्य पर जैन विश्व भारती को उपलब्ध करवाने में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सदस्य के रूप में भी आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई हैं।

स्व. पृथ्वीराजजी कच्छारा

आप जैन विश्व भारती के सतत सहयोगी थे। जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत मुंबई भवन के निर्माण में आपका विशेष सहयोग रहा तथा आपकी प्रेरणा से मुंबई में अनेक अनुदानदाता इस परियोजना से जुड़े। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपका विशेष सहयोग रहा और आपने काफी सेवाएँ दीं। सत्र 2006-08 में अमृत निधि कोष आय नियोजन समिति के सदस्य के रूप में जैन विश्व भारती के साथ आपका जुड़ाव रहा।

श्री रतनलाल चौपड़ा

केन्द्र और जैन विश्व भारती के बीच सूचनाओं और संवादों के आदान-प्रदान में आपका महनीय योगदान रहा है। जैन विश्व भारती की बहुआयामी गतिविधियों को आपका समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन मिला है। साथ ही तेरापंथ समाज के अनुदानदाताओं को अधिकाधिक रूप में जैन विश्व भारती की योजनाओं से जोड़ने में आपकी विशिष्ट भूमिका रही है। समण संस्कृति संकाय में विभागाध्यक्ष के रूप में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ एवं मार्गदर्शन विगत कई वर्षों से मिल रहा है। संस्था द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित 'जय तिथि पत्रक' के प्रकाशन हेतु विज्ञापन एवं व्यवस्था के संबंध में अर्थ संग्रह हेतु आपकी सदैव सक्रिय भूमिका रही है। आगम मंथन प्रतियोगिता की प्रारंभिक पृष्ठभूमि के निर्माण एवं कालांतर में इसके प्रचार-प्रसार में अनवरत आपने सहयोग दिया है।

श्री कमलेश भाई शाह

जैन विश्व भारती की गतिविधियाँ अंतरराष्ट्रीय स्तर तक फैली हुई हैं। जैन विश्व भारती के नाम से विदेशों में तीन केन्द्र संचालित हैं। अधिकांश समय वहाँ समणीवृंद का प्रवास रहता है और वहीं के स्थानीय जैन समुदाय का इन केन्द्रों के संचालन में विशेष सहयोग रहता है। ओरलैंडो सेंटर में चेयरमैन के रूप में आपकी महत्वपूर्ण सेवाएँ एवं सहयोग लंबे समय से प्राप्त हो रहा है। समणीवृंद को वहाँ लाने-पहुँचाने तथा वहाँ विभिन्न गतिविधियों के संचालन में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रहती है। जैन विश्व भारती की गतिविधियों के विकास हेतु आपका आर्थिक सहयोग भी समय-समय पर प्राप्त होता रहता है। आप स्वयं प्रेक्षाध्यान के एक साधक हैं। अभी हाल ही में आपने जैन विश्व भारती, लाडनूं में लगभग एक माह तक प्रेक्षाध्यान का अभ्यास किया है। विदेश में रहकर भी आपकी संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा एवं समर्पण प्रेरणास्पद तथा उल्लेखनीय है।

श्री राजेन्द्र बच्छावत

बच्छावत परिवार का लंबे समय से जैन विश्व भारती को विभिन्न रूपों में सहयोग प्राप्त हो रहा है। जैन विश्व भारती परिसर में आपके परिवार के सहयोग से 'संवाद' अतिथि गृह निर्मित है। आपकी उदार भावना से वर्तमान में इस अतिथि गृह का उपयोग जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के उपयोग हेतु हो रहा है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सत्र 2010-12 में प्रधान न्यासी के रूप में जैन विश्व भारती को आपका काफी सहयोग मिला। महासभा में आपके कार्यकाल में विश्वविद्यालय के अंतर्गत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय का विशाल भवन बनकर तैयार हुआ। इस महत्वपूर्ण कार्य में आपकी उल्लेखनीय भूमिका एवं सहयोग रहा।

श्री बी. सी. आलावत

विगत छह वर्षों से आप जैन विश्व भारती के सक्रिय सहयोगी रहे हैं। जैन विश्व भारती में निर्मित जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत मुंबई भवन के निर्माण में आपका सहयोग एवं प्रेरणा उल्लेखनीय रही है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य प्रबुद्ध वर्ग तक पहुँचाने में आपकी विशेष भूमिका रही है। जैन विश्व भारती को अपेक्षानुसार आपका सहयोग एवं सहभागिता सदैव उपलब्ध रही है।

श्रीमती शांता पुलगिया

जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 एवं 2008-10 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुईं। समय-समय पर जैन विश्व भारती के विभिन्न कार्यक्रमों, संगोष्ठियों आदि में आपकी सक्रिय सहभागिता संस्था द्वारा प्रदत्त दायित्व के प्रति आपकी जागरूकता को दर्शाती है। जैन विश्व भारती के कुछ कार्यक्रमों का आपने कुशलतापूर्वक संयोजन भी किया है। समय-समय पर प्रदत्त आपके सुझाव भी संस्था लिए उपयोगी रहे।

श्री बाबूलाल सैखानी

जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 एवं 2008-10 के द्विवर्षीय कार्यकाल में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में विभिन्न गतिविधियों में आपका सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त हुई। वर्ष 2008 में जैन विश्व भारती के अंतर्गत संचालित श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर भी भूमि की रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से करवाने में आपकी अहम भूमिका रही। आपने श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र को सक्रिय बनाने में भी प्रयास किए। सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के उत्पादों के प्रचार-प्रसार एवं इस प्रवृत्ति के विकास हेतु आपकी विशेष प्रेरणा निरंतर रही। वर्ष 2011 में जैन विश्व भारती के अंतर्गत गठित गुजराती साहित्य विभाग के सदस्य के रूप में आपका सहयोग प्राप्त हुआ। गुजराती साहित्य को रखने हेतु प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा, अहमदाबाद में स्थान उपलब्ध करवाने में आपका विशेष योगदान रहा। साहित्य प्रकाशन में भी आपका आर्थिक सहयोग रहा।

श्री बाबूलाल बोथरा

जैन विश्व भारती को सत्र 2008-10 के द्विवर्षीय कार्यकाल में ट्रस्टी के रूप में आपका सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। आचार्यश्री महाश्रमणजी के वर्ष 2010 में सरदारशहर चातुर्मास के दौरान जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों एवं आयोजनों में आपका विशेष सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त हुई। संस्था की अनेक योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।

श्री आनंदचंद बरड़िया

एक मूक कार्यकर्ता के रूप में जैन विश्व भारती आपके चिंतन एवं कार्यों से सदैव लाभान्वित रही है। जैन विश्व भारती के विभिन्न आयोजनों और समारोहों की आयोजना पक्ष के दायित्व को आपने अनेक बार बखूबी निभाया है। संस्था के जमीन-जायदाद की खरीद, रजिस्ट्री आदि के कार्य के संबंध में आपका विशेष सहयोग रहा है। लाडनूं में प्रवासरत होने के कारण भी आपके सहयोग और सहभागिता से जैन विश्व भारती सदैव लाभान्वित होती रही है। गत छह वर्षों से निरंतर संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई।

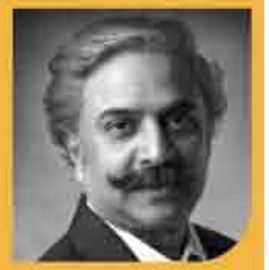

श्री अजय चौपड़ा

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय दोनों को ही आपके नवीन और युगानुकूल विचारों से लाभ मिला है। विश्वविद्यालय के शिष्ट परिषद के सदस्य के रूप में आपके चिंतन और विचारों से संस्था लाभान्वित हुई है। इसके अतिरिक्त आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के देवलोकगमन पर एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी के पदाभिषेक समारोह के अवसर को मीडिया में व्यापक स्तर पर प्रचारित करवाने के लिए राजस्थान पत्रिका और दैनिक भास्कर में अभिवंदना स्वरूप प्रकाशित विशेष पृष्ठों के प्रकाशन हेतु जैन विश्व भारती एवं धरम सज्जन ट्रस्ट के समन्वित सहयोग से आपने उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

श्री सुरेन्द्र बोरड़ (पटावरी)

जैन विश्व भारती की विविध गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में आपका सदैव सक्रिय सहयोग रहा है। विदेश स्थित जैन विश्व भारती के नाम से संचालित विभिन्न केन्द्रों की गतिविधियों में आपका विशेष सहयोग एवं सहभागिता रहती है। जैन विश्व भारती एवं धर्मसंघ की गतिविधियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु आप निरंतर प्रयास करते रहते हैं। संस्था को जब कभी आपके सहयोग और सहभागिता की अपेक्षा महसूस हुई आपने सदैव तत्परता से अपना सहयोग दिया है।

श्री मोहराज लूणावत

दक्षिण भारत में जैन विश्व भारती की गतिविधियों को व्यापकता देने में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 एवं 2008-10 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित जय भिक्षु निलयम के अन्तर्गत तमिलनाडु भवन के निर्माण में विशेष प्रेरक और सहयोगी के रूप में जैन विश्व भारती को आपका सहयोग मिला है। फरवरी 2012 में चेन्नई में जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास हेतु आयोजित चिंतन गोष्ठी में आपकी सक्रिय भूमिका रही।

श्री धरमचंद लूंकड़

सत्र 2010-12 से आप जैन विश्व भारती से ट्रस्टी के रूप में जुड़े और सक्रियता से संस्था की गतिविधियों में सहयोग देते रहे हैं। जैन विश्व भारती की विभिन्न योजनाओं एवं प्रवृत्तियों में आपने आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। प्रेक्षाध्यान पत्रिका में विशेष सहयोग दिया है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास हेतु आपने उल्लेखनीय प्रयास किए हैं तथा दक्षिण भारत के अनेक लोगों को प्रेरित कर विश्वविद्यालय के विकास में सहयोगी बनाया है। दक्षिण भारत के मुख्यतः चेन्नई क्षेत्र में अनेक लोगों को जैन विश्व भारती की सदस्यता के लिए प्रेरित करके संस्था परिवार को प्रवर्धित करने में योगदान दिया है। फरवरी, 2012 में चेन्नई में आयोजित ट्रस्ट बोर्ड की बैठक तथा जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विकास के संबंध में आयोजित चिंतन गोष्ठी की सफलता में आपका विशेष सहयोग और भूमिका रही है।

श्री मनोज लूनिया

गत छह वर्षों से निरन्तर जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में संस्था की विभिन्न गतिविधियों में आपका विशेष सहयोग एवं सहभागिता रही है। जैन विश्व भारती की विगत वर्षों की महत्वपूर्ण बृहद निर्माण योजनाओं – महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर, जय भिक्षु निलयम, आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर आदि के निर्माण में आपका महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित तुलसी वाङ्मय प्रवचनमाला के तीस खण्डों के प्रकाशन सहयोगी बनकर आपने साहित्य की गतिविधि में भी अपना योगदान दिया है। जैन विश्व भारती के अनन्य सहयोगी के रूप में आपने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

श्री अवरलाल कर्णावट

जैन विश्व भारती को सत्र 2006-08 में संचालिका समिति के सदस्य एवं 2008-10 में ट्रस्टी के रूप में आपका सहयोग एवं सेवाएँ प्राप्त हुईं। जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत 'मुंबई भवन' के निर्माण में आपकी सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग रहा। मुंबई के श्रावकों को जय भिक्षु निलयम की योजना से जोड़ने में आपकी विशेष प्रेरणा रही। मुंबई में आयोजित जैन विश्व भारती की बैठकों, कार्यक्रमों आदि की सफलता में आपका विशेष योग रहा। तेरापंथी सभा, मुंबई के अध्यक्षीय कार्यकाल में आपने सभा के माध्यम से जैन विश्व भारती के साहित्य का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार कर सहयोग प्रदान किया।

श्री माणिक सिंघी

प्रशासनिक सेवा में उच्चस्थ पदों पर आपके कार्यों के अनुभवों का लाभ जैन विश्व भारती को भी प्राप्त हुआ है। जैन विश्व भारती के विभिन्न विधि-वैधानिक कार्यों में आपका समुचित परामर्श एवं कुशल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। समय-समय पर विश्वविद्यालय को भी आपका परामर्श प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित विशेष संगोष्ठियों आदि में आपकी विशिष्ट सहभागिता रही। आपकी विशिष्टताओं को दृष्टिगत रखते हुए आपको जैन विश्व भारती के मानद सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।

श्री अभय जैन

जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित विमल विद्या विहार सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के बहुमुखी विकास में आपने अहम योगदान दिया है। विद्यालय को सी.बी.एस.ई. से मान्यता दिलवाने में आपने विशेष प्रयास किए। विद्यालय भवन के प्रथम तल के निर्माण में आपका सहयोग रहा एवं विद्यालय की बारह कक्षाओं को स्मार्ट क्लास के रूप में अपग्रेड करने में संपूर्ण आर्थिक सहयोग आपका रहा। शैक्षिक क्षेत्र में आपके अनुभव और गहरी पैठ से जैन विश्व भारती का यह शैक्षिक प्रकल्प अनेक रूपों में आपकी सेवाओं से लाभान्वित हुआ है। इसके अतिरिक्त जैन विश्व भारती की चारदीवारी के समीप के मार्ग को मेगा हाइवे से जोड़ने हेतु सड़क निर्माण की योजना की क्रियान्विति के लिए संबंधित सरकारी विभागों से सम्पर्क करने में भी आपकी विशिष्ट भूमिका रही है। आपके प्रयासों के फलस्वरूप हालही में उस सड़क का निर्माण भी सम्पन्न हो चुका है।

श्री सुरेन्द्र जैन

जैन विश्व भारती के सत्र 2006-08 तथा सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका सहयोग एवं सेवाएँ प्राप्त हुईं। जैन विश्व भारती के संविधान संशोधन के कार्य में संविधान संशोधन उप समिति के सदस्य के रूप में आपका सहयोग प्राप्त हुआ। संपूर्ण हरियाणा क्षेत्र में आप जैन विश्व भारती का प्रभावी प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों को अपने क्षेत्र में आगे बढ़ाने हेतु आप सदैव प्रयासरत रहते हैं।

श्री रमेश कोठारी

जैन विश्व भारती के सत्र 2006-08 तथा सत्र 2010-12 में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुईं। सत्र 2006-08 में प्रेक्षाध्यान विभाग के समन्वयक के रूप में भी आपने सेवाएँ दीं। 'प्रेक्षाध्यान' प्रवृत्ति के प्रचार-प्रसार व विकास हेतु आपका उल्लेखनीय सहयोग रहा। प्रेक्षाध्यान से संबंधित विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यक्रमों आदि में आपकी सक्रिय सहभागिता रही। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

श्री विवेक कठोतिया

जैन विश्व भारती के सत्र 2008-10 में परिसर विकास समिति के संयोजक के रूप में आपकी विशेष सेवाएँ एवं सहयोग प्राप्त हुए। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अंतर्गत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के भवन निर्माण की प्रारंभिक योजना में आपका निर्देशन एवं सहयोग रहा। जैन विश्व भारती की अन्य निर्माण योजनाओं में भी समय-समय पर आपका महत्वपूर्ण परामर्श तथा सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री विमलराज सिंघवी

जैन विश्व भारती के सत्र 2006-08 में संचालिका समिति के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुईं। जैन विश्व भारती को प्राप्त आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35 (1) (iii) के अधीन छूट के वर्ष 2010 में हुए नवीनीकरण के कार्य में आपकी विशिष्ट भूमिका रही। अपेक्षानुसार संस्था को आपका सहयोग एवं सेवाएँ हमेशा उपलब्ध रहीं।

श्री प्रकाश बैद

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों एवं योजनाओं में आप चिंतन से सहभागी रहे हैं। टीम के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका निरंतर सहयोग प्राप्त हुआ। विगत छह वर्षों के दौरान पूज्यवरों के लाडनूं प्रवास में जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों में आपका विशेष सहयोग रहा। संस्था के विभिन्न कार्यक्रमों तथा आयोजनों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही।

श्री बाबूलाल कच्छारा

एक श्रावक कार्यकर्ता के रूप में आपकी धर्मसंघ में विशिष्ट पहचान है। आप जैन विश्व भारती के सक्रिय सहयोगी रहे हैं। विभिन्न गतिविधियों एवं योजनाओं में आपकी सक्रिय सहभागिता तथा सहयोग रहा है। जैन विश्व भारती के अंतर्गत संचालित विमल विद्या विहार उच्च माध्यमिक विद्यालय को आपने एक स्कूल बस अनुदान स्वरूप प्रदान कर सहयोग किया है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपका विशेष सहयोग रहा। जय तिथि पत्रक के प्रकाशन में प्रायः प्रतिवर्ष आपका आर्थिक सहयोग रहा। पूज्यप्रवरों की रास्ते की सेवा में आपका आतिथ्य सत्कार सभी के लिए अविस्मरणीय एवं प्रेरणास्पद है।

श्री विनोद कुमार बांठिया

जैन विश्व भारती को सत्र 2008-10 में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपकी सहभागिता एवं सहयोग प्राप्त हुआ। जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत आपका सहयोग प्राप्त हुआ तथा अनेक अनुदानदाता आपकी प्रेरणा से इस योजना से जुड़े। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही।

मुमुक्षु डॉ. शांता जैन

लंबे समय से जैन विश्व भारती में प्रवासित होने के कारण जैन विश्व भारती के साथ आपका अंतरंग संबंध रहा है। जैन विश्व भारती की प्रवृत्तियों के विकास एवं विस्तार के लिए आपका प्रेरक चिंतन एवं सुझाव निरंतर प्राप्त होते रहते हैं। आपकी विशिष्टताओं को दृष्टिगत रखते हुए आपको सत्र 2010-12 के लिए जैन विश्व भारती के मानद सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया। आपकी विशेषज्ञताओं एवं विशिष्टताओं का लाभ संस्था की गतिविधियों के विकास हेतु निरंतर प्राप्त होता रहा। समय-समय पर जैन विश्व भारती के विभिन्न आयोजनों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है।

श्री निर्मल अंसाली

जैन विश्व भारती को समय-समय पर आपका सहयोग प्राप्त होता रहा है। दिल्ली से संबंधित विभिन्न कार्यों में संस्था की अपेक्षानुसार तत्परता से आपका सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों आदि में आपकी सक्रिय सहभागिता रही। संस्था को आवश्यकतानुसार आपको जब भी याद किया गया, आपका सहयोग सदैव उपलब्ध रहा।

श्री हंसराज डागा

जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों के संचालन और विकास में समय-समय पर आपका विशेष सहयोग मिलता है। जैन विश्व भारती को सत्र 2008-10 एवं 2010-12 में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई हैं। समय-समय पर आपने संस्था के विकास में योगदान दिया है। जैन विश्व भारती के विभिन्न निर्माण कार्यों में प्रयुक्त सामग्री की आपूर्ति आदि के कार्य में आपका उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

श्री पन्नालाल बैद, जयपुर

सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में आप सदैव जैन विश्व भारती की गतिविधियों में सहभागी रहे हैं। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर की प्रबंधन समिति के चेयरमैन के रूप में विद्यालय के विकास में आपकी अहम भूमिका रही है। विद्यालय को सी.बी.एस.ई. मान्यता, विद्यालय भवन के सामने खेल के मैदान के निर्माण आदि कार्यों में आपके प्रयास सराहनीय रहे हैं। संस्था के जयपुर से संबंधित सभी प्रकार के कार्यों में आपके सहयोग ने निश्चितता प्रदान की है। जब कभी आपके सहयोग की अपेक्षा हुई, आपने हमेशा अपनेपन के साथ संस्था को सहयोग दिया।

श्री प्रकाशचंद बैद

जैन विश्व भारती की गतिविधियों, योजनाओं तथा विकास कार्यों के चिंतन एवं क्रियान्विति में आप सतत सहयोगी के रूप में सदैव जुड़े रहे हैं। विगत दो वर्षों से विमल विद्या विहार स्कूल की प्रबंधन समिति के चेयरमैन के रूप में विद्यालय के विकास में आपका विशेष योगदान रहा है। वर्ष 2009 में पूज्यप्रवरों के लाडनूं चातुर्मास के दौरान जैन विश्व भारती को आपका विभिन्न रूपों में सहयोग मिला और संस्था की गतिविधियों में आपकी सहभागिता प्राप्त हुई।

श्री मूलचंद नाहर

जैन विश्व भारती की प्रमुख प्रवृत्ति 'जीवन विज्ञान' के प्रचार-प्रसार एवं विकास और विस्तार में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती में 'जीवन विज्ञान इंटरनेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट' के निर्माणाधीन भवन में आप मुख्य आर्थिक सहयोगी रहे हैं। आपकी प्रेरणा एवं प्रयासों से श्री दिलीप सुराणा, बैंगलोर का भी इस परियोजना में महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। आपने बैंगलोर में अपने निजी आवास में भी जीवन विज्ञान संबंधी गतिविधियों के संचालन के लिए एक हॉल का निर्माण करवाया है। जय भिक्षु निलयम में लिफ्ट आपके सहयोग से लगा है। 'जीवन विज्ञान इंटरनेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट' के निर्माण को समयबद्ध पूरा करवाने हेतु आप पूर्ण मनोयोग एवं निष्ठा से लगे हुए हैं।

श्री अरुण संचेती

जैन विश्व भारती की विभिन्न निर्माण योजनाओं में आपका चिंतन, परामर्श एवं सहयोग प्राप्त हुआ। वर्ष 2010 में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा विश्वविद्यालय के अंतर्गत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के भवन निर्माण कार्य में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही। इससे पूर्व जय भिक्षु निलयम एवं आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर की परियोजनाओं के निर्माण की प्रारंभिक भूमिका में आपका परामर्श एवं सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री प्रमोद नाहटा

विगत छह वर्षों से निरंतर संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका सहयोग जैन विश्व भारती को मिल रहा है। इन छह वर्षों में जैन विश्व भारती की अनेक निर्माण योजनाओं के चिंतन में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। जैन विश्व भारती परिसर में एकरूपता और सौंदर्य वृद्धि हेतु लगाए गए साइन बोर्डों के निर्माण कार्यों में आपका विशिष्ट योगदान रहा है। अपने स्पष्ट चिंतन से संस्था के विकास में आपने समय-समय पर समुचित सुझाव प्रस्तुत किए हैं।

श्री हंसराज बेताला

नेपाल बिहार क्षेत्र के एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में आपने जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में सहयोग एवं सहभागिता प्रदान की है तथा इस क्षेत्र को सक्रियता से संस्था की गतिविधियों के साथ जोड़ा है। नेपाल बिहार जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अंतर्गत जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित जय भिक्षु निलयम के नेपाल-बिहार भवन के 17 फ्लैटों के ब्लॉक निर्माण में आपकी विशिष्ट भूमिका रही है तथा इस भवन निर्माण में विभिन्न अनुदानदाताओं को जोड़ने में भी आपका बहुत सहयोग रहा है। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अन्तर्गत जैन विश्व भारती द्वारा ज्ञानाचार की आराधना में संपादित साहित्य संबंधी योजना के क्रियान्वयन में नेपाल-बिहार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आपने आचार्यप्रवर द्वारा रचित साहित्य का व्यापक प्रचार-प्रसार कर विशिष्ट योगदान दिया है।

डॉ. सुरजमल सुराणा

जीवन विज्ञान संबंधी गतिविधियों के विकास में आपका कुशल निर्देशन एवं सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती के सत्र 2010-12 में केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक के रूप में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही। जीवन विज्ञान अकादमी का दिल्ली में कार्यालय प्रारंभ करने एवं उसके संचालन में आपकी प्रमुख भूमिका रही। जीवन विज्ञान संबंधी अनेक कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों में आपने सक्रिय सहभागिता कर जीवन विज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं विकास व विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपके कुशल निर्देशन में जीवन विज्ञान की गतिविधियों का काफी विकास हुआ।

सुश्री दीपाली सिंघी

जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की भावी विकास योजनाओं में आपके शैक्षिक ज्ञान और जानकारी का महत्वपूर्ण लाभ मिला। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के विजन-2020 परियोजना तथा कोलकाता में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की आयोजना में आपका महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। विश्वविद्यालय के विकास हेतु समय-समय पर आपने समुचित सुझाव प्रस्तुत किए हैं।

श्री केवलचंद जैन

जैन विश्व भारती को सत्र 2008-10 एवं 2010-12 में संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपकी सेवाएँ प्राप्त हुई। संस्था की विभिन्न परियोजनाओं एवं गतिविधियों में आपका सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती द्वारा भूमि की खरीद, नवनिर्माण आदि कार्यों में आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। जय भिक्षु निलयम के अंतर्गत आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। संस्था द्वारा संचालित आगम मंथन प्रतियोगिता - VI में आपका प्रायोजकीय सहयोग रहा। जैन विश्व भारती के साहित्य प्रकाशन में भी आपका सहयोग रहा। संस्था की अपेक्षानुसार विभिन्न गतिविधियों में आपका सहयोग एवं सहभागिता सदैव उपलब्ध रही।

श्री बाबूलाल राठौड़

सत्र 2010-12 में आप जैन विश्व भारती से संचालिका समिति के सदस्य के रूप में जुड़े। संस्था के साथ प्रथम बार जुड़ते ही आपने सक्रियता के साथ इसकी गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया। अनेक गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों के संचालन में आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती की गतिविधियों के सुव्यवस्थित संचालन हेतु आपने एक जावलो गाड़ी संस्था को अनुदानस्वरूप प्रदान की। इसके अतिरिक्त साहित्य प्रकाशन, जय तिथि पत्रक आदि में भी आपका सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री निर्मल सुराणा

जैन विश्व भारती को सत्र 2008-10 में संचालिक समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में आपका सहयोग मिला। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों में आपका आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार आपके परिवार के प्रायोजकीय सहयोग से संचालित है। संस्था की विभिन्न योजनाओं में अपेक्षानुसार आपका सहयोग सदैव उपलब्ध रहा।

श्री हसमुख भाई मेहता

गत छह वर्षों से निरंतर जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में संस्था की समस्त गतिविधियों में आपका सहयोग मिलता रहा है। जैन विश्व भारती की विविधोन्मुखी गतिविधियों में आपने एक प्रेरक के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ के अनेक श्रावकों को जोड़ने में महनीय भूमिका निभाई है। आपकी प्रेरणा से समाज के अनेक नए लोग जैन विश्व भारती की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं योजनाओं में सहयोग हेतु आगे आए हैं। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित आगम मंथन प्रतियोगिता तथा प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपकी विशिष्ट भूमिका रही है।

श्री करणीसिंह बठेड़िया

जैन विश्व भारती को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में आपका सहयोग प्राप्त हुआ है। संस्था की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं योजनाओं में समय-समय पर आपकी सहभागिता एवं सेवाएँ प्राप्त हुई हैं। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपकी विशेष भूमिका रही है। जैन विश्व भारती को अपेक्षानुसार एक सक्रिय कार्यकर्ता एवं संस्था हितैषी के रूप में आपको सदैव उपलब्ध पाया।

श्री जब्बर चिडालिया

युवा कार्यकर्ता के रूप में आपकी एक अलग पहचान है। जैन विश्व भारती को आपका विभिन्न रूपों में सहयोग मिला है। जैन विश्व भारती के अंतर्गत जयपुर में संचालित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के विकास में आपका विशेष सहयोग रहा। विद्यालय की भूमि की रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से करवाने में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही। राजनैतिक स्तर पर आपके प्रभाव एवं संपर्क का लाभ भी संस्था को समय-समय पर प्राप्त हुआ।

कार्यालय सहयोगी

जैन विश्व भारती की प्रत्येक गतिविधि, योजना और प्रकल्प को क्रियान्वित करने का मुख्य केन्द्र है - सचिवालय। वास्तव में जो भी इस संस्था के द्वारा किया गया, उसके मूल में सचिवालय की ही भूमिका रही है। यद्यपि सचिवालय में कार्यरत प्रत्येक कर्मचारी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से संस्था की इस छह वर्षीय विकास यात्रा में योगभूत बना है तथापि कुछ कर्मियों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

श्री राजेन्द्र खटेड़
निदेशक, जैन विश्व भारती

श्री राजेन्द्र खटेड़ ने जैन विश्व भारती के निदेशक के रूप में जनवरी, 2010 में कार्यग्रहण किया और तब से संस्था के सचिवालय में अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी कुशलता, सजगता एवं तत्परता के साथ कर रहे हैं। उन्होंने अपने प्रशासनिक कौशल, प्रबंधकीय पटुता और कार्यों को सुचारु ढंग से संपादित करने की आहता के फलस्वरूप संस्था को प्रशासनिक सुदृढ़ता एवं सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है एवं पूरी संस्था में एक श्रेष्ठ कार्य-संस्कृति (वर्क कल्चर) को बढ़ावा दिया है। उन्होंने संस्था के सर्वोच्च पदाधिकारियों और अधीनस्थ कार्मिकों के बीच मध्यस्थ कड़ी के रूप में परस्पर संवाद-सूत्र को जिस स्पष्ट संप्रेषणीयता के साथ जोड़ा है वह उनके कार्यपालकीय सक्षमता का परिचायक है।

जैन विश्व भारती में विगत छह वर्षों के दौरान विभिन्न प्रवृत्तियों, परियोजनाओं एवं प्रशासनिक कार्यों को गंतव्य तक पहुँचाने में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। निदेशक के रूप में उनके द्वारा किए गए कार्यों की श्रृंखला में विशेष रूप से उल्लेखनीय है सचिवालय के प्रलेखीकरण के कार्य को व्यवस्थित करना, जैन विश्व भारती को आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35 (1)(iii) के अंतर्गत प्राप्त छूट के नवीकरण में सहयोग करना, जैन विश्व भारती में कार्यरत कार्मिकों को पहचान-पत्र जारी करवाना, परिसर की सुरक्षा एवं सौंदर्यीकरण को व्यवस्थित करना, परिसर स्थित विभिन्न उद्यानों एवं भवनों के नवीकरण तथा पुनरुद्धार के कार्य की देखरेख करना तथा जैन विश्व भारती को विभिन्न इकाइयों तथा जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के बीच समन्वय स्थापित कर गतिविधियों के विकास में योगदान करना।

श्री राजेन्द्र खटेड़ ने अपनी सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक सुरुचि-संपन्नता के फलस्वरूप संपूर्ण संस्था के बीच सांस्कृतिक परिवेश के विकास हेतु भी सराहनीय कार्य किए हैं, जिनमें विशिष्ट पर्वों, त्योहारों एवं आयोजनों पर आपसी सौहार्द को बढ़ाने हेतु किए गए कार्यक्रम, जैसे होली स्नेह मिलन, आचार्य तुलसी स्मृति भजन संध्या तथा पर्यावरण दिवस आदि प्रमुख हैं।

जैन विश्व भारती में निदेशक के रूप में कार्यग्रहण के पूर्व श्री खटेड़ जैन विश्व भारती के कोलकाता कार्यालय तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा में प्रभारी के रूप में कुल दस वर्षों की सराहनीय सेवाएँ प्रदान की है।

जैन विश्व भारती ऐसे समर्पित और कार्यकुशल अधिकारी को पाकर आत्मतोष का अनुभव करती है और उनके भावी जीवन विकास की मंगलकामना करती है।

डॉ. विजयश्री शर्मा
प्रमुख, विधिक व मानव संसाधन, जैन विश्व भारती

जैन विश्व भारती सचिवालय में मानव संसाधन प्रमुख के रूप में बहुत कम समय में आपने सचिवालय के स्वरूप में निखार लाया है। कम उम्र और कम अनुभव के बाद भी आपने जिस कुशलता से सचिवालय के मानव संसाधन संबंधित समस्त कार्यों को संपादित किया है, वह प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। आपके विधि संबंधी शैक्षणिक अर्हता से संस्था की अनेक वैधानिक समस्याओं को समाधान मिला है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर एवं जैन विश्व भारती के विभिन्न प्रकल्पों में आपका यथापेक्षित सहयोग रहा है। शोध के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जैन विश्व भारती के सर्टिफिकेट के नवीनीकरण के कार्य में आपने सक्रियता से अपना योगदान दिया है। संस्था अनेक दैनन्दिन कार्यों की सुचारु व्यवस्था में आपका चिंतन रहा है। ऐसी युवा प्रतिभा और विधिक जानकार को मानव संसाधन प्रमुख के रूप में पाकर जैन विश्व भारती परिवार गौरवान्वित है।

श्री दिनेश सोनी
प्रमुख, लेखा विभाग, जैन विश्व भारती

सन् 2003 से जैन विश्व भारती के सचिवालय में कनिष्ठ लेखाकार के रूप में अपना कैरियर प्रारंभ करने वाले श्री दिनेश सोनी ने अपनी कार्यकुशलता को सिद्ध कर प्रोन्नति प्राप्त की और वर्तमान में वे जैन विश्व भारती के सचिवालय में लेखा विभाग के प्रमुख के रूप में कार्यरत है। जैन विश्व भारती की वर्तमान टीम के कार्य संचालन में उन्होंने पर्याप्त सहयोग किया है। विगत छह वर्षों से इस टीम के साथ कुशलतापूर्वक कार्य करते हुए उन्होंने अपने दायित्वों का बखूबी निर्वाह किया है। इस दौरान संस्था के लेखा विभाग को कंप्यूटरीकृत कर दिया गया है, जिससे लेखा विभाग की कार्यकुशलता, समय प्रबंधन एवं कार्य की गति में वृद्धि हुई। जैन विश्व भारती को आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35 (1)(iii) के अंतर्गत प्राप्त छूट के नवीकरण के कार्य में भी उन्होंने निष्ठापूर्वक श्रम किया।

ऊर्जा का अक्षय स्रोत
पूज्यवरों का पावस प्रवास

पूज्यवरों का आध्यात्मिक निर्देशन और आध्यात्मिक सान्निध्य सदैव ऊर्जादायी होता ही है, किंतु उनका पावस प्रवास ऊर्जा के अक्षय स्रोत के रूप में निरंतर संस्था में ऊर्जा की धारा प्रवाहित करता है।

जैन विश्व भारती की पिछले छह वर्ष की यात्रा में पूज्यप्रवरों के जैन विश्व भारती में किए गए प्रवास ने संस्था और उसके सदस्यों में ऊर्जा के अक्षय स्रोत का संचार किया है। जैन विश्व भारती में इन छह वर्षों में सन् 2007 में आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण का सप्तदिवसीय प्रवास, 2009 में आचार्य महाप्रज्ञ का चातुर्मासिक प्रवास और आचार्य महाश्रमण का आचार्य पदाभिषेक के बाद प्रथम बार सन् 2011 में त्रिदिवसीय प्रवास पावनता का प्रसून बन सर्वत्र अपनी सुगंध संप्रसारित करता रहा। पूज्यवरों के इन प्रवासों से जैन विश्व भारती को जो विशेष सान्निध्य और ऊर्जा प्राप्त हुई वह अद्वितीय थी। इन पावस प्रवासों में वर्ष 2009 में हुआ आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी और युवाचार्य श्री महाश्रमण जी का धवल सेना के साथ हुआ चातुर्मास चिरकाल तक लोगों के स्मृति पटल पर अंकित रहेगा।

इस प्रवास के दौरान आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा था – 'जैन विद्या के विकास की पहली संस्था जैन विश्व भारती है। जैनों के प्रथम विश्वविद्यालय का गौरव लाडनूं को प्राप्त है। जैन विश्व भारती का ग्रंथागार भी बहुत समृद्ध है। यहाँ कुछ दुर्लभ पुस्तकें हैं।'

आचार्यप्रवर ने जैन विश्व भारती की विद्यमानता से लाडनूं की हुई प्रतिष्ठा का उल्लेख करते हुए कहा था कि इस स्थान का वही महत्व है जो इसाई धर्म में वैटिकन सिटी का है। यहाँ स्थित पारमार्थिक शिक्षण संस्थान, समण श्रेणी केंद्र, सेवा केंद्र आदि इसके वैशिष्ट्य को उद्घाटित करते हैं। वर्ष 2011 में आचार्य महाश्रमण ने लाडनूं को तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी घोषित करते हुए इसे पुण्य भूमि की आख्या दी थी। उन्होंने वर्ष 2009 के प्रवास के समय कहा था कि जैन विश्व भारती का प्रवास विशेष है, क्योंकि यहाँ की व्यवस्थाएँ कार्य की दृष्टि से अनुकूल हैं। जैन विश्व भारती को छोड़कर जाने का मतलब है कार्य को छोड़कर जाना। अतः यह लंबा प्रवास जैन विश्व भारती के उन्नयन एवं विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इस स्थान पर शिक्षा, संस्कार पल्लवन और सर्वांगीण मानव के निर्माण की दृष्टि से जो कार्य जैन विश्व भारती के माध्यम से हो रहे हैं वे अतुलनीय हैं और जैन ही नहीं जैनेतर समाज के लिए भी धार्मिक एवं सामाजिक इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं।

पूज्यप्रवर के इस अविस्मरणीय प्रवास ने जहाँ एक ओर जैन विश्व भारती की समस्त गतिविधियों में ऊर्जा का संचार किया, वहीं पूज्यप्रवरों के आशीर्वाद ने जैन विश्व भारती के कार्यदल में अतिरेक उत्साह का संचार किया। आचार्यप्रवर के इस प्रवास में शिक्षा, शोध, सेवा, साधना, साहित्य, समन्वय और संस्कृति की विविधोन्मुखी गतिविधियों को नया स्वरूप मिला, वहीं अनेक विशिष्ट आयोजनों, कार्यक्रमों, संगोष्ठियों और समारोहों ने जैन विश्व भारती को एक अलग पहचान दी।

पूज्यप्रवर के इस प्रवास में जैन विश्व भारती में निर्माणात्मक, आयोजनात्मक आदि सभी दृष्टियों से विशेष उल्लेखनीय कार्य हुए। इनमें जय भिक्षु निलयम का उद्घाटन, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के अंतरराष्ट्रीय केन्द्रों का शिलान्यास आदि प्रमुख थे। अहिंसा के प्रायोगिक पक्ष के विशेष प्रचार-प्रसार के लिए अहिंसा भवन का निर्माण हुआ। आयोजनात्मक दृष्टि से हॉपर कॉलिन्सन द्वारा प्रकाशित 'दि हैप्पी एंड हॉमोनियस फैमिली' नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के मुख्य आतिथ्य में आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिवस का आयोजन आदि कार्यक्रम महान प्रेरक और जीवन को दिशा देने वाले सिद्ध हुए।

आचार्यप्रवर के इस चातुर्मासिक प्रवास में जैन विश्व भारती में अनेक विशिष्ट महानुभावों का आगमन हुआ, जिनमें राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सुभाष महरिया, राजस्थान के कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क, भारतीय स्टेट बैंक के अध्यक्ष श्री ओ.पी. भट्ट, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत, बौद्ध धर्मगुरु महंत राहुल बोधिजी, ईसाई धर्मगुरु, फादर माईकल रोजारियो, मुस्लिम धर्मगुरु मुहम्मद असलम गाजी, चूरू के सांसद श्री रामसिंह कस्वां, पश्चिम बंगाल के विधायक श्री तापस राय एवं अन्य विभिन्न क्षेत्रों के सांसद एवं विधायक, देश के अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपति, श्री कृष्ण चौपड़ा, हॉपर कॉलिन्स पब्लिशर्स आदि प्रमुख थे।

आचार्य महाप्रज्ञ के इस प्रवास में जैन विश्व भारती को टीम को अनेक बार पूज्यप्रवरों की कृपादृष्टि प्राप्त हुई, प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ और वात्सल्य भाव मिला। पूज्यप्रवरों की अनुकंपा से इस चातुर्मास ने जैन विश्व भारती की गतिविधियों, कार्यक्रमों और योजनाओं को नया आयाम दिया, विकासोन्मुख कार्यों के लिए भूमि तैयार की और विशेष आध्यात्मिक दिशानिर्देश के फलस्वरूप संस्था के विकास के लिए संभावनाओं के अभिनव आकाश उद्घाटित हुए।

प्रवर्धमान प्रवृत्तियाँ

शिक्षा

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय

- जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय के संबंधों में प्रगाढ़ता।
- विश्वविद्यालय के विकासमूलक कार्यों में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन एवं इस हेतु वांछित संसाधनों की पूर्ति।
- लगभग 7 करोड़ की लागत से जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा निर्मित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के भवन निर्माण हेतु अर्थ संग्रह का दायित्व निर्वहन।
- विश्वविद्यालय की गतिविधियों के संचालन हेतु लगभग 40 लाख रुपये की लागत के भूखंड का क्रय।
- आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के लिए फर्नीचर के आयात में महत्वपूर्ण भूमिका।
- लगभग 20 लाख रुपये की लागत से कंप्यूटर लैब का निर्माण।
- वेब-बेस्ड लर्निंग प्रोजेक्ट एवं मैचिंग ग्रांट संबंधी सहायता।
- जैन विश्व भारती के अंतर्गत 21 लाख रु. के छात्रवृत्ति कोष का निर्माण।
- विश्वविद्यालय के वैधानिक मामलों में यथायोग्य परामर्श एवं सहयोग।
- बृहद श्रावक समाज को विश्वविद्यालय की गतिविधियों से जोड़ने की दृष्टि से देश के विभिन्न प्रमुख शहरों में विकास संगोष्ठियों का आयोजन।
- लगभग 6050001 रु. की वित्तीय सहायता।

विनत सिंघी विहार सीनियर सेकेंडरी स्कूल

- वर्ष 2008 में विद्यालय को सी.बी.एस.ई. से मान्यता प्राप्त हुई एवं इसके साथ ही विद्यालय को लाडनूं नगर एवं आसपास के 30 कि.मी. परिधि क्षेत्र के प्रथम सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त विद्यालय बनने का गौरव प्राप्त हुआ।
- विद्यालय के शैक्षणिक स्तर में क्रमशः सुधार।
- शिक्षण की नवीन तकनीक आई.सी.टी. कक्षाओं का प्रारंभ। विद्यालय की 12 कक्षाएँ स्मार्ट क्लास के रूप में विकसित।
- दो कंप्यूटर लैब, एक गणित लैब, पुस्तकालय एवं प्रदर्शनी कक्ष की स्थापना।
- आसपास के विद्यार्थियों के आवागमन के सुविधार्थ तीन नई बसों की व्यवस्था।
- लगभग 1 करोड़ की लागत से विद्यालय भवन का नवीनीकरण एवं विस्तारीकरण, जिसके अंतर्गत 10 कमरे, एक हॉल, एक लैब का निर्माण।
- गत छह वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या में क्रमशः वृद्धि -

वर्ष	विद्यार्थी
2006-07	592
2007-08	599
2008-09	679
2009-10	701
2010-11	715
2011-12	750
2012-13	900

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

- विद्यालय को जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा आवंटित 6 हजार गज भूमि की रजिस्ट्री का कार्य संपन्न, जिसका वर्तमान बाजार मूल्य लगभग 10 करोड़ रुपये।
- विद्यालय भवन के सामने की 1728 वर्ग फीट भूमि पर लगभग 17 लाख रु. की लागत से खेल मैदान का निर्माण।
- शैक्षणिक सत्र 2006-07 से कक्षा 5 से प्रति वर्ष कक्षाओं में क्रमोन्नति एवं वर्तमान में विद्यालय कक्षा 10 तक क्रमोन्नत।
- वर्ष 2012 में विद्यालय को सी.बी.सी.ई. मान्यता प्राप्त।
- प्री-प्राइमरी सेक्शन एवं संगीत विभाग का उन्नयन।
- शिक्षण की नवीन तकनीकों का समावेश।
- कंप्यूटर लैब, इंग्लिश लैब, एक्टिविटी लैब, पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना।
- दो नई स्कूल वैन की व्यवस्था।
- गत छह वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या -

वर्ष	विद्यार्थी
2006-07	81
2007-08	151
2008-09	162
2009-10	175
2010-11	193
2011-12	189
2012-13	185

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर

- शैक्षणिक सत्र 2009-10 से जैन विश्व भारती की इकाई के रूप में संचालित।
- आचार्य महाप्रज्ञ के स्वप्न के अनुरूप ग्रामीण क्षेत्र में स्तरीय शिक्षा की सुविधा की पहल।
- लगभग 3 करोड़ रु. की लागत से विद्यालय भवन का नव-निर्माण।
- लगभग 40 जरूरतमंद विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षण, पाठ्य-पुस्तकों, गणवेश आदि की सुविधा प्रदत्त।
- गत तीन वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या -

वर्ष	विद्यार्थी
2009-10	450
2010-11	428
2011-12	485
2012-13	550

समण संस्कृति संकाय

वर्ष	आवेदन	चयनित	चयनित प्रतिशत	चयनित केन्द्र
2006-07	7862	4932	85.58	178
2007-08	10828	6084	82.87	234
2008-09	9188	5472	86.18	233
2009-10	9625	5809	85.75	233
2010-11	9324	5355	89.80	232
2011-12	8466	5652	88.29	239

- वर्ष 2007 से प्रतिवर्ष आंचलिक संयोजक प्रशिक्षण कार्यशाला के आयोजन का क्रम प्रारंभ।
- वर्ष 2009 से समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संयुक्त रूप से जैन विद्या कार्यशाला का प्रतिवर्ष आयोजन।
- केन्द्र व्यवस्थापक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन।
- केंद्रीय संस्थाओं से समन्वय हेतु **समन्वय समिति** का गठन।
- जैन विद्या परीक्षाओं के पाठ्यक्रम एवं प्रश्न-पत्र के पैटर्न में संशोधन तथा जैन विद्या प्रशिक्षक पाठ्यक्रम का निर्माण।
- जैन विद्या परीक्षाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं समण संस्कृति संकाय की गतिविधियों से अवगत करवाने की दृष्टि से समण संस्कृति के नाम से न्यूज बुलेटिन का वर्ष 2011 से प्रकाशन प्रारंभ।
- समण संस्कृति संकाय के 33 वर्षों के गौरवशाली इतिहास की स्वर्णिम यात्रा को समाहित करने वाली स्मारिका 'समण संस्कृति' का प्रकाशन।

जीवन विज्ञान अकादमी

- जीवन विज्ञान का संपूर्ण प्रारूप तैयार किया गया और उसके अनुसार जीवन विज्ञान संबंधी गतिविधियों को गति प्रदान की गई।
- जीवन विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ शोध एवं परियोजनाओं के सुगम संचालन तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार की दृष्टि से जैन विश्व भारती में जीवन विज्ञान इंटरनेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट के नाम से भवन का निर्माण।
- जीवन विज्ञान संबंधी गतिविधियों के सुव्यवस्थित संचालन हेतु अनुदेश पुस्तिका (मैनुअल) का निर्माण।
- जीवन विज्ञान संबंधी गतिविधियों की पहचान हेतु नए लोगो (प्रतीक चिह्न) का निर्माण।
- जीवन विज्ञान के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अत्याधुनिक ऑडियो विजुअल सामग्री, परिचयात्मक हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में सी.डी., परिचयात्मक फोल्डर एवं अन्य प्रचार सामग्री का निर्माण।
- जीवन विज्ञान को पाठ्य पुस्तकों में अपेक्षित संशोधन।
- जीवन विज्ञान की गतिविधियों से अधिकाधिक लोगों को अवगत करवाने की दृष्टि से वर्ष 2011 से मासिक ई-न्यूज लेटर का प्रारंभ।
- भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संचालित उपक्रम राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीन शिक्षा संस्थान (एनआईओएस), नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2006 में जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम और पत्राचार पाठ्य सामग्री स्वीकृत एवं जीवन विज्ञान प्रमाणपत्र परीक्षा हेतु प्रतिवर्ष पूरे भारत में केन्द्र स्थापित। 10 + 2 उत्तीर्ण कोई भी विद्यार्थी पत्राचार के माध्यम से इस छह महीने के पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु पात्र है।
- वर्ष 2007 से प्रतिवर्ष जीवन विज्ञान दिवस समारोह के राष्ट्रव्यापी आयोजन का क्रम प्रारंभ।
- जीवन विज्ञान के प्रति रुचि एवं जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से जीवन विज्ञान लेख एवं भाषण प्रतियोगिता तथा संस्कार निर्माण प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- तेरापंथ समाज द्वारा संचालित देश भर के विद्यालयों में जीवन विज्ञान लागू करवाने की दृष्टि से वर्ष 2008 से प्रतिवर्ष पूज्य प्रवर के सान्निध्य में 'तेरापंथी शिक्षण संस्थान प्रतिनिधि सम्मेलन' के आयोजन की शुरुआत।
- वर्ष 2010 में पूज्य प्रवर के सान्निध्य में सरदारशहर में जीवन विज्ञान इंटरनेशनल कैंप का प्रथम बार समायोजन। प्रतिवर्ष आयोजित शिविरों/कार्यशालाओं एवं संभागियों की संख्या का विवरण

वर्ष	आयोजित शिविर/कार्यशालाएँ	शिक्षक	विद्यार्थी	कुल संभागी
2006-07	17	--	--	1730
2007-08	22	--	--	1717
2008-09	08	820	1248	2068
2009-10	23	299	8835	9134
2010-11	33	358	11959	12317
2011-12	58	1621	13403	15024

सेवा

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला उल्लेखनीय तथ्य

- रसायनशाला के ट्रस्ट बोर्ड को सक्रिय स्वरूप प्रदान किया गया।
- रसायनशाला के मुख्य न्यासी पद पर श्री शांतिलाल बरमेचा का मनोनयन।
- रसायनशाला के ट्रस्ट बोर्ड में नए सदस्यों का मनोनयन।
- आयुर्वेद विभाग, राजस्थान द्वारा अजमेर में आयोजित विशाल आरोग्य मेले – आयुष्य 2008 में रसायनशाला द्वारा स्टॉल लगाकर सहभागिता।

वर्ष	लाभान्वित रोगियों की संख्या	निःशुल्क वितरित औषधियों की राशि	औषधियों की विक्रय राशि
2006-07	77120	569762	1583342
2007-08	67689	651983	1691290
2008-09	32873	364620	1202838
2009-10	31374	314676	1471786
2010-11	14631	409323	1155115
2011-12	12605	338120	1316984

श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र उल्लेखनीय तथ्य

- वर्ष 2007 में तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र की भूमि की रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से कराई गई एवं भूमि एवं भवन का पूर्ण स्वामित्व जैन विश्व भारती को प्राप्त।
- वर्ष 2007 में पूज्यवरों के केन्द्र में पदार्पण के साथ केन्द्र का नाम 'तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र' के स्थान पर 'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र' किया गया।
- तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र पर चल रहा मामला उप पंजीयक, बीदासर बनाम जैन विश्व भारती लाडनूं प्रकरण संख्या 582/97 सरकार द्वारा दिनांक 27.4.2007 को निरस्त।
- वर्ष 2008 से बीदासर में प्रवासित चारित्रात्माओं के स्वास्थ्य लाभ हेतु मनोत भवन में प्रत्येक रविवार को होम्योपैथिक चिकित्सा सुविधा का क्रम प्रारंभ।

  प्रतिवर्ष केन्द्र में श्री कुंदनमल चोरड़िया के सहयोग से निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन। बीदासर एवं आसपास के क्षेत्रों के हजारों व्यक्ति लाभान्वित।

वर्ष	लाभान्वित रोगियों की संख्या
2006-07	21741
2007-08	14135
2008-09	6654
2009-10	8567
2010-11	8350
2011-12	7534

सेवा की अन्य इकाइयाँ

- फरवरी, 2011 में परिसर स्थित आरोग्यम् भवन में विद्युत चुंबकीय चिकित्सा केन्द्र का प्रारंभ।
- नवंबर, 2011 में बीदासर में स्व. मनोहरी देवी दुगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र का प्रारंभ।

साधना

प्रेक्षाध्यान उल्लेखनीय तथ्य

- तुलसी अध्यात्म नीडम् को मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित करने का प्रयास एवं इस दृष्टि से नीडम् के तत्वावधान में जून 2007 से प्रतिमाह नियमित रूप से पंचदिवसीय /अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन।
- तुलसी अध्यात्म नीडम् के 15 कमरों में प्रसाधन सुविधा का समावेश एवं सभी कमरों, हॉल एवं पूरे भवन का नवीनीकरण।
- तुलसी अध्यात्म नीडम् एवं इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 05 से 11 अप्रैल, 2009 को बहराइच (उत्तर प्रदेश) में प्रेक्षाध्यान एवं योग-साधना शिविर का आयोजन। शिविर में 31 डॉक्टरों आदि बुद्धिजीवियों के साथ-साथ कुल 75 शिविरार्थियों की सहभागिता।
- पूर्व एवं वर्तमान सभी प्रेक्षा प्रशिक्षकों के लिए वर्ष 2009 से प्रेक्षा प्रशिक्षक अधिवेशन का प्रतिवर्ष आयोजन। नए प्रशिक्षकों के निर्माण की दृष्टि से प्रेक्षाध्यान का एक समग्र पाठ्यक्रम तैयार किया एवं लिखित तथा प्रायोगिक परीक्षाओं का क्रम प्रारंभ।
- प्रेक्षाध्यान प्रवृत्ति के विकास एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से वर्ष 2009 में जैन विश्व भारती के अन्तर्गत प्रेक्षा फाउण्डेशन के नाम से प्रेक्षाध्यान की समग्र गतिविधियों की नियामक संस्था का गठन।
- प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वाले साधकों को समूह के रूप में बांधने की दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के अन्तर्गत स्थानीय प्रेक्षावाहिनियों का गठन।
- प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षकों से सम्पर्क एवं उनकी सेवाएं अपेक्षानुसार क्षेत्रों में उपलब्ध करवाने की दृष्टि से वर्ष 2009 में प्रेक्षा प्रशिक्षण उपसमिति का गठन।
- प्रेक्षाध्यान के व्यापक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से प्रेक्षाध्यान की वेबसाइट www.preksha.com का नया वर्जन प्रारंभ एवं Preksha Meditation के नाम से नई मोबाइल ऐप्लीकेशन का प्रारंभ।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रेक्षाध्यान के विकास, विस्तार एवं संवर्धन के उद्देश्य से जैन विश्व भारती में लगभग रु. 3 करोड़ की लागत से आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर का निर्माण प्रारंभ।

प्रेक्षाध्यान पत्रिका

- जनवरी से दिसम्बर 2008 तक प्रेक्षाध्यान के पूर्व माह के अंकों पर आधारित प्रश्न-प्रतियोगिता का आयोजन।
- पत्रिका के मुद्रण व गेटअप में अपेक्षित परिवर्तन।
- समय-समय पर विभिन्न अवसरों पर विशेषांकों का प्रकाशन।
- मार्च 2010 से पत्रिका की www.terapanthinfo.com एवं www.jvbharati.org पर ऑनलाईन उपलब्धता।
- आर्थिक दृष्टि से पत्रिका आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर।

प्रेक्षाध्यान शिविर

विवरण	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12
शिविर	28	29	25	13	4	10
शिविरार्थी	2995	2671	869	276	56	125

साहित्य

- अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रकाशकों यथा हार्पर कॉलिन्स पब्लिसर्स इण्डिया लि., पेंग्विन बुक्स इण्डिया, प्रभात प्रकाशन, राजपाल एण्ड सन्स आदि के साथ सम्पर्क एवं उनके द्वारा अनेक पुस्तकों का प्रकाशन।
- आचार्य महाप्रज्ञ एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की बहुप्रतिक्षित संयुक्त कृति The Family & The Nation का अंग्रेजी, तेलगु, तमिल, मलयालम एवं आसामी भाषाओं में हॉपर कॉलिन्स पब्लिसर्स इण्डिया द्वारा प्रकाशन, प्रभात प्रकाशन द्वारा हिंदी संस्करण का प्रकाशन। पुस्तक का कॉपीराईट जैन विश्व भारती के पास।
- साहित्य प्रकाशन एवं वितरण व्यवस्था में आवश्यक संशोधन तथा साहित्य के मुद्रण व गुणवत्ता में आवश्यक सुधार।
- वर्ष 2009 से पुज्यवर के साथ केन्द्र में जैन विश्व भारती के निजी साहित्य विक्रय केन्द्र का प्रारम्भ।
- वर्ष 2010 से देश के प्रमुख क्षेत्रों में साहित्य की उपलब्धता सुनिश्चित।
- वर्ष 2011 से साहित्य विभाग के लेखा संबंधी सम्पूर्ण कार्यों का कम्प्यूटराईजेशन।
- संघीय साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पुस्तक मेलों, सेमिनारों आदि में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य का स्टॉल लगाकर प्रदर्शन व विक्रय की व्यवस्था।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी की कुछ चुनिन्दा पुस्तकें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों, विभिन्न राजनेताओं, उद्योगपतियों एवं प्रबुद्ध वर्ग को प्रेषित।
- आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पुज्यप्रवर का साहित्य एकरूपता की दृष्टि से नए एवं आकर्षक कलेवर में प्रस्तुत। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी की विभिन्न शीर्षकों पर आधारित लगभग 90,000 प्रतियों का जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशन।
- धर्मसंघ के गुजराती भाषा में प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से गुजराती साहित्य विभाग का गठन एवं लगभग रु. 8 लाख मूल्य की 53 प्रकार की 13480 प्रतियां जैन विश्व भारती द्वारा क्रय।
- साहित्य विभाग को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से वर्ष 2011 में साहित्य संपोषण योजना का प्रारंभ।
- आगम सम्पादन के क्रम में 7 नवीन आगमों का प्रकाशन तथा 8 आगमों का पुनर्प्रकाशन।
- आगम मंथन प्रतियोगिता 2,3,4,5, व 6 तथा इतिहास मंथन प्रतियोगिता - द्वितीय का आयोजन। पांच प्रतियोगिताओं में कुल मिलाकर लगभग 10000 प्रतियोगियों की सहभागिता।

वितरण

विवरण	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	20011-12
आगम प्रकाशन	02	04	01	04	2	3
नवीन प्रकाशन	16	17	12	35	43	39
पुनर्मुद्रण	36	35	40	55	52	41
प्रकाशित प्रतियां	128250	97580	119500	175900	209750	186834
प्रकाशन खर्च	28,44,445/-	48,11,777	57,42,128/-	47,91,230/-	8403166/-	9730552/-
साहित्य विक्रय	30,72,129/-	29,90,007/-	50,79,172/-	38,70,485/-	5673063/-	6111190/-
साहित्य स्टॉक	91,90,420/-	84,00,961/-	90,70,950/-	95,65,198/-	11073609/-	11883086/-

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान

- पुरस्कारों के सुव्यवस्थित संचालन की दृष्टि से जैन विश्व भारती के अंतर्गत पुरस्कार नियोजन उपसमिति का गठन।
- सभी पुरस्कारों के एकरूप संचालन एवं पारदर्शिता की दृष्टि से पुरस्कार संचालन नीति का निर्माण एवं प्रत्येक पुरस्कार के लिए एक आचार संहिता का निर्धारण। आचार संहिता के आधार पर पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता के आवेदन आमंत्रित। निर्धारित आचार संहिता के आधार पर प्राप्त आवेदनों में से पुरस्कार नियोजन उपसमिति द्वारा योग्य पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता का निर्धारण।
- पुरस्कारों की पुरस्कार राशि में प्रायोजकों द्वारा वृद्धि।
- एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन द्वारा प्रायोजित चार पुरस्कारों के आजीवन सुव्यवस्थित संचालन हेतु एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन द्वारा जैन विश्व भारती में 'एम.जी. सरावगी स्मृति कोष' के नाम से रु. 51 लाख के कोष की स्थापना। कोष से प्राप्त ब्याज की आय से प्रतिवर्ष चारों पुरस्कारों के संचालन का निर्णय।

अहिंसा समवाय

- अहिंसक शक्तियों को एकजुट करने के उद्देश्य से 'अहिंसा समवाय' मंच का गठन एवं वर्ष 2008 से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत तिरुवनतपुरम, मदुरै, जयपुर, राजसमन्द एवं दिल्ली में अहिंसा समवाय केन्द्रों की स्थापना।
- तिरुवन्तपुरम केन्द्र के अन्तर्गत प्रथम वर्ष 2008 में 38 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित जिनमें 3522 व्यक्तियों की सहभागिता।
- मदुरै केन्द्र के अन्तर्गत प्रतिमाह तीन दिवसीय आवासीय कार्यक्रम आयोजित जिसमें दो वर्ष में लगभग 600 व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त।
- जयपुर एवंराजसमन्द केन्द्र तथा अणुविभा के संयुक्त तत्वावधान में पूज्यवरों के सान्निध्य में शांति एवं अहिंसा पर 7 वें अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन। राजस्थान के राज्यपाल श्री एस. के. सिंह, ग्लोबल यूनिवर्सिटी, लंदन के रेक्टर डॉ. टॉमस डार्फन, संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रतिनिधि सुश्री विरकन अनवर, प्रख्यात अपराध अन्वेषक श्री डी. आर. कार्तिकेयन, गांधी शांति प्रतिष्ठान की अध्यक्ष श्रीमती राधा भट्ट सहित विश्व के दस देशों के 25 प्रतिनिधियों व 35 भारतीय बुद्धिजीवियों की सहभागिता।
- राजसमन्द केन्द्र द्वारा आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों के अर्न्तगत लगभग 275 व्यक्तियों को तथा लगभग 9000 हजार विद्यार्थियों को अहिंसा का प्रशिक्षण।
- जयपुर एवं राजसमन्द केन्द्र द्वारा पूज्यवरों के पावन सान्निध्य में राजसमन्द में प्रथम अंतरांष्ट्रीय अहिंसा नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। दस देशों से 25 एवं भारत के विभिन्न प्रांतों से 60 प्रतिनिधियों की सहभागिता।

विदेशों में केन्द्र

- जैन विश्व भारती के नाम से संचालित विदेश के केन्द्रों से संपर्क सूत्रों का विस्तार।
- जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण का ह्यूस्टन एवं लंदन सेंटर का प्रथम बार औपचारिक दौरा।
- चारों सेंटर के पदाधिकारीगण एवं वहां प्रवासित समणीवृंद की ह्यूस्टन सेंटर में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष के साथ समन्वित रूप से प्रथम बार औपचारिक बैठक आयोजित।

अन्य उल्लेखनीय कार्य

- कोलकाता में जैन विश्व भारती के शाखा कार्यालय का प्रारम्भ।
- जैन विश्व भारती को आई.एस.ओ. 9001-2000 प्रमाण पत्र प्राप्त।
- जैन विश्व भारती की आजीवन सदस्यता सूची का अपडेशन एवं सदस्यों को पहचान कार्ड जारी।
- जैन विश्व भारती के नियमोपनियम में संशोधन।
- परिसर स्थित समस्त भवनों का पुनर्मूल्यांकन एवं वित्तीय 2007-08 की लेखा पुस्तकों राशि की प्रविष्टि।
- परिसर में पानी की सुलभता हेतु नए डीप ट्यूबवेल हेतु सरकार द्वारा भूमि आवंटित एवं नलकूप की खुदाई।
- आयकर अधिनियम 1961 की धारा 35(1)(iii) के अन्तर्गत जैन विश्व भारती को प्राप्त मान्यता का नवीनीकरण।
- जैन विश्व भारती की वेबसाईट का निर्माण।
- जैन विश्व भारती के चार दशकों के गौरवशाली इतिहास का लेखन।
- वर्ष 2011 से 'कामधेनु' के नाम से जैन विश्व भारती त्रैमासिक गृह पत्रिका का प्रारंभ।
- जैन विश्व भारती को भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्राप्त Recognition of Scientific and Industrial Research Organisations (SIROs) की मान्यता का नवीनीकरण।

महत्वपूर्ण आयोजन एवं कार्यक्रम

- जैन विश्व भारती में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं युवाचार्यश्री महाश्रमणजी का मार्च 2007 में सप्त दिवसीय प्रवास।
- पूज्यवरों का वर्ष 2009 का चातुर्मास जैन विश्व भारती, लाडनूं में। पूज्यवरों के सान्निध्य में अनेक कार्यक्रमों की समायोजना।
- फरवरी 2011 में आचार्यश्री महाश्रमणजी का जैन विश्व भारती के अनुशास्ता एवं आचार्य के रूप में प्रथम बार पदार्पण और जैन विश्व भारती में त्रिदिवसीय प्रवास।
- कोलकाता, हैदराबाद, गुवाहाटी, चेन्नई, बैंगलोर एवं सिलीगुड़ी में जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की विकास संगोष्ठियां आयोजित।
- जैन विश्व भारती परिसर में गीताई मिशन, वर्धा द्वारा 8 दिवसीय 'गीता चेतना राष्ट्रीय युवा सम्मेलन' का आयोजन, जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों के लगभग 1500 संभागियों की उपस्थिति। इस अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान की परिचयात्मक प्रदर्शनी तथा संघीय साहित्य का स्टॉल लगाया गया।
- दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फिलॉसफी के 22वें गोलमेज सम्मेलन में 'दर्शन जगत में नवाचार हेतु जैन दर्शन की भूमिका' विषय पर जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित चर्चा-परिचर्चा का सम्पूर्ण प्रायोजकीय सहयोग जैन विश्व भारती द्वारा किया गया।
- अक्टूबर 2008 में जैन विश्व भारती एवं के. जे. सोमैया सेन्टर फॉर स्टडीज इन जैनिज्म द्वारा संयुक्त रूप से सोमैया विद्या विहार कैम्पस, मुंबई में 'स्पेक्ट्रम ऑफ जैनिज्म इन साउदर्न इण्डिया' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन।
- नवम्बर 2008 में जैन विश्व भारती एवं आई. सी. ई. एन. एस., उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जयपुर में पूज्यवरों के पावन सान्निध्य में 'अहिंसा एवं सापेक्ष अर्थशास्त्र' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन। असम के राज्यपाल महामहिम श्री शिवचरण माथुर की विशेष रूप से सहभागिता।
- फरवरी 2009 में जैन विश्व भारती एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संयुक्त रूप से कोलकाता में 'समाज भूषण श्रीचंद रामपुरिया जन्म शताब्दी समारोह' का आयोजन।
- अगस्त 2009 में जैन विश्व भारती के कल्पनाकार समाजभूषण स्व. भंवरलालजी दूगड़ एवं जैन विश्व भारती के अनन्य सहयोगी 'समाज भूषण' स्व. प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल के चित्रों की जैन विश्व भारती में स्थापना एवं उनका अनावरण समारोह पूज्यप्रवरों के सान्निध्य में आयोजित।
- जैन विश्व भारती स्थित आचार्य तुलसी स्मारक पर आचार्य तुलसी की वार्षिक पुण्य तिथि के अवसर पर वर्ष 2010 से प्रतिवर्ष रात्रि में भजन संध्या के आयोजन का क्रम प्रारंभ।
- जुलाई 2011 में महाराष्ट्र के उत्पाद शुल्क, कामगार एवं पर्यावरण मंत्री श्री गणेश नाईक को आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में केलवा में अणुव्रत मित्र पुरस्कार प्रदत्त।

नवनिर्माण एवं नवीनीकरण कार्य

- जय भिक्षु निलयम के अन्तर्गत कोलकाता भवन, मुम्बई भवन, तमिलनाडु भवन एवं नेपाल बिहार भवन के तहत एक कमरे के स्टूडियो टाईप 96 फ्लेटों का निर्माण।
- अहिंसा भवन का निर्माण।
- टमकोर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल का निर्माण।
- जैन विश्व भारती स्थित केन्द्रीय सचिवालय का पुर्ननिर्माण तथा युगानुकूल सुविधाओं का समावेश।
- कॉन्फ्रेन्स हॉल का पुर्ननिर्माण।
- परिसर स्थित 'शुभम' एवं 'सागर' गेस्ट हाऊसों का आधुनिक सुविधाओं से युक्त उच्च स्तरीय आवास सुविधा के साथ नवीनीकरण।
- शुभम गेस्ट हाऊस में रेस्टोरेंट के माध्यम से अल्पाहार की व्यवस्था का प्रारम्भ।
- सुधर्मा सभा (प्रवचन पंडाल) का नवीनीकरण।
- तुलसी अध्यात्म नीडम् का नवीनीकरण।
- पंजाब भवन का नवीनीकरण।
- वर्षा संजय सदन में संचालित भोजनशाला का पूर्णतः नवीनीकरण एवं स्वागत कक्ष का नवनिर्माण।
- पूरे परिसर का सौन्दर्यीकरण, आवश्यक मरम्मत कार्य, पूरे भवनों का एक समान रंग - रोगन कार्य एवं एक तरह के साइनबोर्डो के द्वारा सुसज्जित किया गया।
- बगीचों का सौन्दर्यीकरण।
- पूरे परिसर की बिजली व्यवस्था का दुरस्तीकरण एवं नई लाइटों की व्यवस्था। 125 के. वी. ए. क्षमता वाले नए जनरेटर की व्यवस्था।
- पीने के पानी की सुलभता हेतु 2000 लीटर प्रति घंटे की क्षमता वाले आर ओ प्लांट की स्थापना।
- विशेषज्ञों की टीम द्वारा जैन विश्व भारती का मास्टर प्लान तैयार।

नई जमीनों की खरीद एवं रजिस्ट्री कार्य

- जयपुर स्थित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल की भूमि को रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से सम्पन्न।
- बीदासर स्थित श्रीमद आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र की लगभग 120000 वर्ग फिट भूमि की रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से सम्पन्न।
- टमकोर में महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल के लिए 60844 वर्ग फिट नई भूमि का क्रय एवं रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से सम्पन्न।
- लाडनूं में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के पास 29504 वर्ग फिट नई भूमि का क्रय एवं रजिस्ट्री जैन विश्व भारती के नाम से सम्पन्न।

छह वर्षों के दौरान उल्लेखनीय अनुदानदाता

रु. 1 करोड़ से अधिक

मैसर्स आकृति सिटी लिमिटेड, मुंबई
(प्रेरणा : श्री गणेश नाईक, पर्यावरण, कामगार एवं उत्पाद शुल्क राज्य मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, मुंबई)
श्री रणजीतसिंह कोठारी, चूरू-टमकोर-कोलकाता
श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया, चाड़वास-कोलकाता
श्री नवरत्नमल बच्छावत, चाड़वास-बैंगलोर

रु. 51 लाख से 1 करोड़ तक

स्व. कन्हैयालाल जी दुधेड़िया, छापर-बैंगलोर
श्री राकेश कुमार कठोतिया, लाडनूं-मुंबई
श्री चंदनमल रायजादा, फतेहपुर-कोलकाता
श्री मंगलचंद मनोज कुमार लुनिया, चाड़वास-शिलौंग
श्री गोविन्दलाल सरावगी, कोलकाता

रु. 21 लाख से 51 लाख तक

समाजभूषण स्व. प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल परिवार, कोलकाता
श्री संजय दानचंद घोड़ावत, डीडवाना-सांगली-जयसिंगपुर
श्री पन्नालाल बैद, चाड़वास-दिल्ली
श्री भीखमचंद पुगलिया, श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता
श्री विनोद कुमार बैद, चाड़वास-दिल्ली

जैन विश्व भारती : आंकड़ों में

Particulars	As on 31/03/2006 (in Lakhs)	As on 31/03/2012 Rs. (in Lakhs)
Corpus Fund	284.22	596.94
Investment	245.28	653.62
Bank Balances	18.80	76.55
Fixed Assets *includes Revaluation Reserves	418.67	5027.58*
Totals of Balance Sheet	751.26	5919.98

Particulars	Rs. (in Lakhs) Frpm F.Y 2006-07 to 2011-12
Revenue Receipts	1122.25
Operational Expenditure	2084.31
General Donation	1637.98
Capital Assets Created	1539.25

Note : Above figures excludes Revaluation Reserves, Depreciation & Increase / Decrease in Stock of Sahitya

CORPUS FUND

INVESTMENT

BANK BALANCES

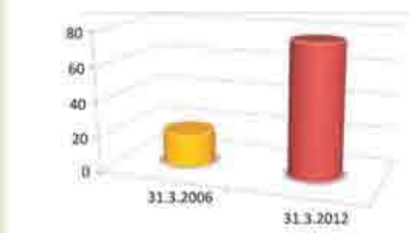

FIXED ASSETS

TOTALS OF BALANCE SHEET

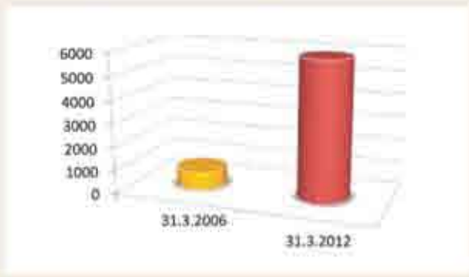

सहयोगी संस्थान

हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इण्डिया लि., दिल्ली

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रकाशन इकाई हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इण्डिया लि. का जैन विश्व भारती के साथ जुड़ाव वर्ष 2008 में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की संयुक्त कृति The family and the nation के प्रकाशन के साथ हुआ। उसके पश्चात प्रकाशन इकाई के स्वयं के निवेदन पर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृति The happy & harmonious family का प्रकाशन किया गया। हाल ही में Transform Your Self पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। इन सभी पुस्तकों के प्रकाशन में हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इण्डिया लि. के श्री कृष्ण चौपड़ा की विशेष भूमिका रही। उन्होंने जिस प्रकार अपने व्यावसायिक संबंधों से हटकर संस्था का सहयोग किया, वह वास्तव में उल्लेखनीय है।

पायोराइट प्रिंट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

पायोराइट प्रिंट मीडिया प्रा. लि. से जैन विश्व भारती का जुड़ाव पूज्यवरों के वर्ष 2007 में उदयपुर चातुर्मास में हुआ एवं सर्वप्रथम 'परिवार के साथ कैसे रहें' पुस्तक का प्रकाशन किया गया। प्रकाशन का जो सिलसिला इस एक पुस्तक के साथ प्रारंभ हुआ, वह अनवरत आज तक जारी है। इन छह वर्षों में इस प्रकाशन इकाई द्वारा पूज्यवरों एवं चारित्रात्माओं की सैकड़ों शीर्षकों से संबंधित लाखों की संख्या में पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। संस्थान के श्री संजय कोठारी तेरापंथ धर्मसंघ के समर्पित श्रावक हैं। पूर्व में श्री मनीष इन्द्रावत भी इनके साथ जुड़े हुए थे, जिनका वर्ष 2010 में सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। श्री इन्द्रावत भी समर्पित श्रावक थे। दोनों ही युवा साथी बड़ी निष्ठा एवं समर्पण भाव से जैन विश्व भारती के प्रकाशन कार्य में सहयोगी रहे। प्रकाशन कार्य के साथ साहित्य की वितरण व्यवस्था में भी इनका काफी सहयोग रहा। अन्य प्रकाशन कार्यों को गौण कर जैन विश्व भारती के कार्य को प्राथमिकता देते हुए तथा व्यक्तिगत रूप से उस कार्य में ध्यान देकर आपने व्यावसायिक संबंधों के साथ कुशलतापूर्वक एक श्रावक का दायित्व भी बखूबी निभाया है।

सेम मूविज इंटरनेटमेंट प्रा.लि., जयपुर

सेम मूविज इंटरनेटमेंट प्रा. लि., जयपुर के साथ जैन विश्व भारती का जुड़ाव वर्ष 2008 में पूज्यवरों के जयपुर चातुर्मास में हुआ। जैन विश्व भारती की जयपुर में आयोजित 37वीं वार्षिक साधारण सभा की संपूर्ण व्यवस्थाओं का कार्य व्यावसायिक रूप से इस संस्थान को दिया गया। संस्थान के श्री समीर बाबेल ने निष्ठा के साथ उस आयोजन की व्यवस्थाओं को अंजाम देकर इसे सफल बनाया। उसके बाद जैन विश्व भारती के प्रायः सभी प्रमुख आयोजनों की व्यवस्थाओं तथा बैक-ड्रॉप, बैनर, मोमेंटो आदि बनाने का कार्य इस संस्थान द्वारा ही किया जाता रहा। श्री समीर बाबेल एवं उनकी टीम पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग के साथ प्रदत्त कार्य दायित्व को कुशलतापूर्वक निर्वहन कर अनेक आयोजनों की सफलता में योगभूत बने हैं। व्यावसायिक संबंधों से हटकर उन्होंने श्रावक के रूप में जैन विश्व भारती के साथ कार्य किया है।

महेश्वरी एण्ड ऐसोसिएट्स, कोलकाता

महेश्वरी एण्ड ऐसोसिएट्स का जुड़ाव जैन विश्व भारती से वर्ष 2007 से प्रारंभ हुआ। प्रतिष्ठान के श्री कमल पेरिवाल का जैन विश्व भारती को विशेष सहयोग रहा। जैन विश्व भारती के विभिन्न निर्माण कार्यों -- जय भिक्षु निलयम, अहिंसा भवन, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर में अपना महत्वपूर्ण निर्देशन प्रदान किया है। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के लिए आपने रु. 5 लाख की राशि अनुदान स्वरूप प्रदान कर शिक्षा के प्रति आपनी जागरूकता एवं सेवाभावना का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। आपने एक श्रावक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर उल्लेखनीय कार्य किया है।

श्री सीमेन्ट, ब्यावर

श्री सीमेन्ट के साथ जैन विश्व भारती जुड़ाव वर्ष 2008 से हुआ। जय भिक्षु निलयम के निर्माण के प्रारंभ के साथ ही सीमेन्ट की आपूर्ति हेतु श्री सीमेन्ट के साथ संपर्क स्थापित किया गया। कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री हरि मोहन बांगड़ ने जैन विश्व भारती के एक निवेदन को दृष्टिगत रखते हुए सुलभ मूल्य पर सीमेन्ट की आपूर्ति का अनुबंध कर विशिष्ट सहयोग प्रदान किया। जय भिक्षु निलयम, अहिंसा भवन, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर आदि के निर्माण में प्रयुक्त सीमेन्ट की समयबद्ध आपूर्ति कंपनी द्वारा की गई। वर्तमान में निर्माणाधीन आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर के लिए भी सीमेन्ट इसी कंपनी द्वारा आपूर्ति की जा रही है।

दस्तावेज

अतीत के झरोखे से

गतांक से आगे ....

जैन विश्व भारती की स्थापना के लिए लाडनूं में अनुकूल स्थान की खोज चलती रही। इसी खोज के दौरान एक स्थान की चर्चा चली, जो शहर के निकट था, किंतु पूर्णतः उपेक्षित और दूर तक बालू के टीलों से आच्छादित था। इस स्थान की विशेषता यह थी कि प्रकृति की दृष्टि से क्षेत्र प्रदूषणमुक्त था। इस स्थान की इस महत्वपूर्ण विशेषता ने विशेष रूप से आकर्षित किया। यह स्थान स्वास्थ्य निकेतन के नाम से जाना जाता था।

प्रकृति के अनुकूल इस स्थान का इतिहास था कि लाडनूं नगर के दक्षिणी भूभाग में नगरीय सीमा के सन्निकट स्वास्थ्य निकेतन सोसाइटी नामक संस्था के संचालकत्व में स्वास्थ्य निकेतन भवन की रजिस्ट्री 17 मार्च, 1965 में हुई थी। प्रारंभ में इस उपक्रम के साथ कई लोग जुड़े और खेल तथा मनोरंजन की प्रवृत्तियाँ भी कुछ समय तक चलीं। किंतु धीरे-धीरे प्रवृत्तियों का क्रम टूटने लगा और इस संस्था से लोग भी धीरे-धीरे टूटने लगे। परिणामस्वरूप स्वास्थ्य निकेतन का भवन तथा परिसर उपेक्षित होने लगा। ऐसी स्थिति में इसकी सुरक्षा, विकास तथा संरक्षण पर तो प्रश्नचिह्न लगा ही साथ ही परिसर में अवांछनीय गतिविधियाँ भी पनपने लगीं। इन सब परिस्थितियों से स्वास्थ्य निकेतन सोसाइटी के अधिकारी चिंतित हुए और इसके पुनर्विकास एवं पुनरुत्थान का चिंतन करने लगे, जो कालान्तर में जैन विश्व भारती की योजना और विकास का मूल बना।

लाडनूं प्रवास के दौरान आचार्य तुलसी एक बार भ्रमण करते हुए अपने सहवर्ती साधुओं और श्रावकों के साथ इस स्थान पर पधारे। उन्होंने कुछ देर रुक कर नेहरू बालोद्यान का निरीक्षण किया और दूर तक फैले रेत के साम्राज्य को निहारा। यद्यपि लाडनूं का श्रावक समाज स्वास्थ्य निकेतन की इस बाह्य हालत से सुपरिचित था, किंतु आचार्य तुलसी का ध्यान इस भूमि की आंतरिक सुदृढ़ता की स्थिति पर गया। आचार्य तुलसी की दृष्टि क्या टिकी मानो इस क्षेत्र और परिसर का भाग्य जाग उठा। आचार्यश्री के इस भ्रमण के दौरान स्वास्थ्य निकेतन सोसाइटी के प्रमुख अधिकारियों ने आचार्य तुलसी को स्वास्थ्य निकेतन भवन में रात्रि प्रवास हेतु अनुरोध किया। पूज्य गुरुदेव ने अधिकारियों की मनोभावना तथा प्रवास की उपयोगिता की कल्पना करके रात्रि में प्रवास की स्वीकृति प्रदान की।

अंततः आचार्यप्रवर प्रवास हेतु स्वास्थ्य निकेतन सोसाइटी के परिसर में पधारे। इस प्रवास का सफल परिणाम वही हुआ जो नियति को मंजूर था। एक रात्रि के आचार्यप्रवर के इस प्रवास के दौरान स्वास्थ्य निकेतन के अधिकारियों के साथ गहन विचार-विमर्श हुआ, चिंतन-मंथन हुआ और विचारों का आदान-प्रदान हुआ। इस बातों ने स्वास्थ्य निकेतन के अधिकारियों के मानस को बदला जिसके सुपरिणामस्वरूप सन् 1971 में यह भवन स्वास्थ्य निकेतन सोसाइटी द्वारा जैन विश्व भारती को उपहारस्वरूप प्रदान कर दिया गया। इसका प्रमाण इस भवन में लगा शिलापट्ट है। कालांतर में यह भवन संतों का प्रवास स्थल बन गया। वहीं से प्रारंभ हुआ जैन विश्व भारती का अभ्युदय एवं विकास .....।

(मुनिश्री मोहजीतकुमारजी द्वारा लिखित जैन विश्व भारती का इतिहास से उद्धृत)

अगले अंक में जारी .....

आधार स्तंभ

जैन विश्व भारती परिसर में अनेक ऐसे स्मारक और भवन हैं, जो इस संस्था के आधार स्तंभ के रूप में विद्यमान हैं। इन भवनों और स्मारकों की श्रृंखला में है — तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों और साध्वियों के समाधि स्मारक। जैन विश्व भारती परिसर में अवस्थित आचार्य तुलसी स्मारक, सेवाभावी समाधि स्थल और साध्वी मालूजी समाधि स्थल ऐसे धार्मिक आस्था के केन्द्र हैं जहाँ श्रद्धालु श्रद्धा से दर्शनार्थ आते हैं।

आचार्य तुलसी स्मारक

जैन विश्व भारती के मूल कल्पनाकार आचार्य तुलसी का महाप्रयाण यद्यपि गंगाशहर में हुआ, किंतु जैन विश्व भारती गुरुदेव की स्मृतियों एवं कार्यों का मूल केन्द्र रहा है। इसी तथ्य को केन्द्र में रखते हुए पूज्यवरों के निर्देशानुसार अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा आचार्य तुलसी का एक अस्थिकलश यहाँ भी स्थापित किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की तत्कालीन अध्यक्ष श्रीमती तारा सुराणा के नेतृत्व में 7 सितंबर, 2000 को इस स्मारक में आचार्य तुलसी की अस्थियों का कलश स्थापित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस स्मारक के निर्माण में श्री हंसराज बैद एवं श्री ताराचंद रामपुरिया का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

आचार्य तुलसी स्मारक श्रद्धा के रूप में महिला शक्ति के समर्पण का बेजोड़ उदाहरण है। क्रांति के पुरोधा पुरुष आचार्य तुलसी ने महिलाओं की सोई शक्ति को जगाकर, महिलाओं की अस्मिता को ऊँचा आकाश दिखाकर महिलाओं के अस्तित्व को विस्तार दिया। तेरापंथ समाज की महिला शक्ति का उस क्रांतिकारी महापुरुष के प्रति समर्पण का जीवंत प्रतिरूप यह स्मारक है। कालान्तर में महिला मंडल ने इस स्मारक का जीर्णोद्धार एक डोमनुमा आकृति के सफेद चमकते संगमरमर में करवाकर इस स्मारक को तेरापंथ धर्मसंघ के एक आकर्षक दर्शनीय स्थल के रूप में स्थापित कर दिया है। आचार्य तुलसी स्मारक के पुनर्निर्माण के बाद इसका लोकार्पण 6 अक्तूबर, 2009 को पूज्यवरों की सन्निधि में हुआ। रात्रि के समय दुधिया रोशनी और चंद्रमा की चांदनी में इस स्मारक का रूप अत्यंत भव्यता और दिव्यता लिए होता है। आस्था के इस घटकुंभ के नवनिर्माण में तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक-श्राविकाओं तथा तेरापंथ महिला मंडल के शाखा मंडलों का अनवरत सहयोग योगभूत बना है। गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति अगाध श्रद्धा और निष्ठा भाव का प्रतीक यह स्मारक शताब्दियों तक आचार्य तुलसी का स्मरण कराता रहेगा। चारों ओर रमणीय उद्यानों से घिरे हुए इस स्मारक स्थल की छटा अत्यंत मनोरम है। जैन विश्व भारती के एक शांति प्रदायक केन्द्र के रूप में इस स्मारक स्थल को माना जा सकता है।

सेवाभावी समाधि स्थल

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी के ज्येष्ठ भ्राता सेवाभावी संत मुनिश्री चंपालालजी की यह अंतिम संस्कार भूमि है। चूंकि मुनिश्री का जीवन सेवा भावना से आपूरित था, अतएव उनकी इस समाधि पर आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु को सेवा, सहिष्णुता, सहृदयता एवं कर्तव्य निर्वाह की प्रेरणा प्राप्त होती है।

इस समाधि स्थल परिसर के मध्य जहाँ मुनिश्री का अंतिम संस्कार हुआ था, उस स्थल पर एक बड़ा चबूतरा है। समाधि स्थल के प्रवेश द्वार से लेकर समाधि तक चारों ओर लगभग चार-चार फीट का संगमरमर का फर्श है। समाधि स्थल की चारदीवारी के भीतर आदमकद पेड़-पौधों का रमणीय साम्राज्य है। नैसर्गिक सौंदर्य और प्राकृतिक हरीतिमा से आपूरित इस सुरम्य परिवेश में पुण्यात्मा की समाधि पर आकर प्रत्येक श्रद्धालु स्फूर्तिमय प्रेरणा प्राप्त कर स्वयं को धन्य महसूस करता है।

साध्वी मालूजी समाधि स्थल

साध्वीश्री मालूजी तेरापंथ धर्मसंघ की दिग्दर्शक साध्वी थी। साध्वीश्री मालूजी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की संसारपक्षीय बहिन थी। उनका स्वर्गवास लाडनूं में हुआ। जैन विश्व भारती परिसर में जिस स्थान पर उनका अंतिम संस्कार किया गया, उस स्थान पर उनकी स्मृति स्वरूप समाधि स्थल का निर्माण कराया गया है। फाल्गुन शुक्ला नवमी, सम्वत् 2052 को उनका देवलोकगमन हुआ। हरियाली से आच्छादित इस समाधि स्थल में आगन्तुक श्रद्धालुओं को अद्भुत शान्ति का अनुभव होता है।

नींव के पत्थर

'भारतीभूषण' श्रीचंदजी बैंगानी

सुजानगढ़ के ख्यातनाम श्रावक श्रीचंदजी बैंगानी प्रारंभिक जीवन से ही धार्मिक और सद्संस्कारों में पल्लवित हुए। अध्ययन एवं अनुभवों की उच्चता के साथ उनमें ऊर्जस्विता और कर्मठता का अनुपम संगम था। उदारचेता, प्रसन्नमना, हँसमुख और मितभाषिता जैसे गुणों से संपन्न बैंगानी जी ने सरल, सहज और सादगीपूर्ण जीवन जीया था। कठिनतर परिस्थितियों में सदैव सकारात्मक और आशावादी चिंतन ने उन्हें जमीन से नित नई ऊँचाइयाँ प्रदान की थीं।

श्रीचंदजी बैंगानी जैन विश्व भारती की प्रारंभिक अवस्था से ही इसके साथ जुड़ गए और जीवन पर्यन्त विभिन्न रूपों में जैन विश्व भारती से जुड़े रहे। उनकी अद्वितीय कार्यशैली, कर्मठता और दूरदर्शिता ने उन्हें संस्था के सर्वोच्च पदों पर प्रतिष्ठित किया तथा जैन विश्व भारती के विकास एवं विस्तार में अध्यक्ष और मंत्री के रूप में लगभग 25 वर्षों तक उन्होंने समर्पण भाव से कार्य किया। जैन विश्व भारती की सामाजिक संजीवनी के रूप में उन्होंने इस संस्था के निर्माण एवं स्थापना का ही नहीं, अपितु सुरक्षा एवं संवर्धन का कार्य भी अत्यंत तन्मयता से किया।

जैन विश्व भारती की विकास श्रृंखला में राजस्थान विश्वविद्यालय तथा केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा शोध केन्द्र की मान्यता प्राप्त करने, ब्राह्मी विद्यापीठ के संचालन, प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता अभियान के रूप में कार्यों की मान्यता प्राप्त करने तथा जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना आदि कार्यों के संपादन में आपकी महनीय एवं उल्लेखनीय भूमिका थी। विश्वविद्यालय के कुलपति के पद को आपने 4 वर्षों तक सुशोभित किया। जैन विश्व भारती को मातृ संस्था के रूप में विकसित एवं प्रतिष्ठित करने के दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर उन्होंने विश्वविद्यालय को आत्मनिर्भर बनाने के सफल प्रयास भी किए।

आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का यह अटूट विश्वास था कि 'श्रीचंदजी बैंगानी यदि जैन विश्व भारती में हैं तो किसी प्रकार की चिंता-चिंतन करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा विश्वसनीय व्यक्ति मिलना संघ, समाज एवं संस्था के लिए सौभाग्य का मानक है।' बैंगानी जी की कार्यक्षमता, अहर्निश प्रयत्नशीलता और संघ एवं संघपति के प्रति अटूट निष्ठा भाव का मूल्यांकन करते हुए उन्हें सन् 1992 में आचार्यश्री तुलसी द्वारा 'भारतीभूषण' और सन् 2004 में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा 'शासनसेवी' के संबोधन से संबोधित किया गया। उनकी विद्वता और विलक्षणता से समाज को अनेक संस्थाओं को लाभ मिला है। जीवन के अंतिम वर्षों में अस्वस्थता के बावजूद उनकी सेवाएँ समाज को निरंतर मिलती रहीं।

जैन विश्व भारती की दीर्घकालीन सेवाओं और उसकी प्रगति के संदर्भ में बैंगानीजी के योगदान को अपनी लेखनी से आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने लिखा है –

"जैन विश्व भारती की प्रगति का, स्वप्न रहा दिन रात
बैंगानी श्रीचंद का, जीवन है अवदान।"

ऐसी विशिष्टताओं के पुंज एवं दुर्लभ व्यक्तित्व प्रति जैन विश्व भारती परिवार की ओर से हार्दिक कृतज्ञता एवं नमन।

दिशा-पथ

हमारा जीवन दिशा सूचक

धर्मचन्द चोपड़ा
पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतम् पीवेत्।

जब तक जीओ सुख से जीओ, कर्ज करो और घी पीओ। यह था हमारी जीवन शैली का एक सूत्र। इसके बाद अनेक शैलियां आई, वैदिक शैली और श्रमण शैली, जिन्होंने हमारी जीवन-पद्धति तथा जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदला। पर प्रथम शैली के प्रभाव को मिटा नहीं पाई। ऋण लेकर ही आज जीवन के मुख्य कार्य किए जाते हैं। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा, जिसने जीवन में कोई ऋण न लिया हो।

ऋण लेकर घी पीएं तो भी कोई बात नहीं। वहां तो ऋण लेकर शराब पी जाती है। जुआ खेला जाता है। विश्व बैंक या अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेकर राष्ट्रीय विकास एवं उत्पादन वृद्धि को जाए तो कोई बात नहीं, लेकिन यहां तो विकास के नाम से 15 प्रतिशत राशि अंतिम छोर तक पहुँचती है, शेष किसी न किसी तरीके से बीच में ही सरकारी कर्मचारियों एवं ठेकेदारों की निजी संपत्ति बन जाती है।

देश का चरित्र बनाना है तथा स्वस्थ समाज की रचना करनी है तो हमें एक ऐसी आचार संहिता को स्वीकार करना होगा जो जीवन में पवित्रता दे। राष्ट्रीय प्रेम एवं स्वस्थ समाज की रचना की दृष्टि दे। कदाचार के इस अंधेरे कुएँ से निकाले। बिना इसके देश का विकास और भौतिक उपलब्धियाँ बेमानी हैं। व्यक्ति, परिवार और राष्ट्रीय स्तर पर हमारे इरादों की शुद्धता महत्व रखती है, जबकि हमने इसका राजनीतिकरण कर परिणाम को महत्व दे दिया। घाटिया उत्पादन के पर्याय के रूप में जाना जाने वाला जापान अपनी जीवन शैली को बदल कर उत्कृष्ट उत्पादन का प्रतीक बन विश्व विख्यात हो गया। यह राष्ट्रीय जीवन शैली की पवित्रता का प्रतीक है।

जीवन में दो ही बिंदु हैं – परिवार और धर्म। 'चेतना लक्षणार्थो धर्मः' यानी जो नियम संहिता समाज को अनुशासित करे, प्रेरित करे, वही धर्म है। परिवार जो शांत सहवास का रूप बने, वह परिवार है अन्यथा व्यक्तियों का एक छोटा समूह बनकर ही रह जाता है।

कार्य करने की शैली कार्य करने से कम महत्वपूर्ण नहीं होती। ठीक इसी तरह जीवन शैलियाँ भी जीवन जितना ही महत्व रखती हैं। सुबह से शाम तक अव्यवस्थित दिनचर्या जीवन नहीं है। घड़ी में सभी के लिए 24 घंटे हैं और कैलेंडर भी कोई अपने लिए अलग से नहीं बना सकता तथा वर्णमाला के अक्षर भी सबके लिए उतने ही हैं। विवेक है उसके सदुपयोग में। महावीर, बुद्ध के पास भी इतना ही समय था। वर्णमाला के वही अक्षर गालों बन जाते हैं और वही प्रार्थना।

हर कार्यकर्ता, हर शिक्षक 'मास मीडिया' होता है यानी जनता तक पहुँचने वाले संचार माध्यम। इसलिए अपनी संस्था या संस्थान के मिशन को आम आदमी तक पहुँचाने में सिर्फ होशियारी ही नहीं दिखाएँ, अपनी नम्रता भी दिखाई जाए – नम्रता शुद्ध जीवन शैली का अंग होती है।

मनुष्य जीवन बड़ी मुश्किल से मिलता है। कल पर कुछ मत छोड़िए। कल जो बीत गया और कल जो आने वाला है दोनों ही हमारी पीठ के समान है, जिसे हम देख नहीं सकते। आज हमारी हथेली है, जिसकी रेखाओं को हम देख सकते हैं।

हमारा जीवन दिशासूचक बने। गिरजे पर लगा दिशासूचक नहीं, वह तो जिधर की हवा होती है उधर ही घूम जाता है। कुतुबनुमा बनें, जो हर स्थिति में सही दिशा बताता है।

संस्मरण

अपने कार्यकाल की सुखद स्मृतियों को कभी नहीं भूल पाऊंगा

भीखमचंद पुगलिया
पूर्व मंत्री, जैन विश्व भारती

आचार्य तुलसी ने एक समृद्ध एवं सुसंस्कृत समाज की कल्पना की। उसी कल्पना, उसी स्वप्न का साकार रूप है जैन विश्व भारती। आचार्य तुलसी ने जैन विश्व भारती को समाज की कामधेनु की उपमा दी। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने इसे अपनी प्रज्ञा से अपनी दृष्टि से संवारा। आचार्यश्री महाश्रमणजी वर्तमान में इस संस्थान को आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते हुए सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

मुझे इस महान संस्थान, आचार्य तुलसी की कृति जैन विश्व भारती का वर्ष 2006 से 2010 तक मंत्री पद पर रह कर काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के वर्ष 2006 के भिवानी चातुर्मास के समय पूज्यवरों के आशीर्वाद से जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया ने मुझे अपनी टीम में मंत्री के रूप में मनोनीत किया। नवनिर्वाचित टीम आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का आशीर्वाद प्राप्त कर लाडनूं अवस्थित जैन विश्व भारती परिसर में प्रथम बार प्रवेश किया एवं जब पूरे परिसर का दौरा कर जानकारी प्राप्त की। तब मैंने अनुभव किया कि पूरा परिसर ही जर्जर है। परिसर में स्थित प्रशासकीय कार्यालय, समस्त भवन, गेस्ट हाउस, प्रवचन पंडाल एवं सारी सड़कें जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। हरियाली का तो कहीं नाम-निशान ही नहीं है। खुली जगह में पूरा जंगल जैसा है एवं सूखा ही सूखा है।

इसी तरह कार्यालय में जैन विश्व भारती के खाते एवं पिछले तुलनपत्र (बैलेंस शीट) का अध्ययन किया गया तो समझ आया कि संस्था की आर्थिक स्थिति भी काफी कमजोर है। स्टाफ के बारे में जानकारी ली गई तो महसूस हुआ कि स्टाफ भी व्यवस्थित एवं अनुशासित नहीं है। एक बार तो ऐसा लगा कि यहां हम कैसे काम कर पाएंगे। लेकिन अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया के साथ पूरी टीम ने दृढ़ता से निर्णय लिया कि हम सभी सुधार करेंगे एवं तय किया गया कि सबसे पहले वास्तु को ध्यान में रखते हुए प्रशासकीय कार्यालय, समस्त भवनों एवं समस्त गेस्ट हाउसों का सुदृढ़ीकरण, नवीनीकरण तथा आधुनिक साज-सज्जा युक्त किया जाए। सड़कों का पुनर्निर्माण और बाग-बगीचों एवं खुले क्षेत्र को हरा-भरा किया जाए। इस तरह पूरी रूपरेखा तय की गई एवं तत्काल पदाधिकारियों की टीम ने इसके लिए आपस में ही आर्थिक संसाधन जुटा लिया। शीघ्र ही कार्य की परिणति शुरू हो गई। देखते ही देखते एक वर्ष के भीतर पूरे परिसर को एक नया आकर्षक रूप दे दिया गया। इसी तरह अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया के तीव्र प्रयासों से जैन विश्व भारती की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ किया गया। इसके लिए देश भर में विभिन्न क्षेत्रों के दौरे किए गए। जगह-जगह समाज की मीटिंग आयोजित की गई एवं समाज को वस्तुस्थिति से अवगत कराया गया। समाज को पूरी बात समझ में आई एवं लोगों ने मुक्त हस्त से सहयोग कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में मदद की।

इस तरह भवनों में चलने वाली विभिन्न प्रवृत्तियों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। मैंने अनुभव किया कि भवनों में आवश्यक सुधार के पश्चात प्रवृत्तियों में भाग लेने वालों एवं परिसर में आगन्तुकों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, समण संस्कृति संकाय, गौतम ज्ञानशाला, विमल विद्या विहार स्कूल, तुलसी कला प्रेक्षा विभाग, हस्त लिखित एवं पांडुलिपि विभाग, पुस्तकालय एवं साहित्य विभाग इत्यादि अनेक विभागों में निरन्तर प्रयास करने से अपेक्षित सुधार हुआ एवं कार्यालयों में कम्प्यूटरीकरण करने से पत्राचार, लेखा एवं अन्य गतिविधियों में सुविधा हुई। इसके साथ ही स्टाफ को व्यवस्थित एवं अनुशासित करने की तरफ भी पूरा ध्यान केन्द्रित किया गया। सभी स्टाफ की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी को कार्यालय समय के लिए एक जैसी ड्रेस दी गई। वेतन को नियमित किया गया। इससे कार्यालय की कार्यप्रणाली में व्यापक सुधार हुआ एवं मैंने अनुभव किया कि स्टाफ अपने-अपने कार्य को जिम्मेदारी से करने के लिए प्रोत्साहित हुए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अहिंसा यात्रा के दौरान प्राप्त स्मृति चिह्न एवं चित्रों एवं अन्य सामग्रियों को एक जगह संजो कर रखने के लिए एक भवन की आवश्यकता महसूस की गई। जैन विश्व भारती के प्रधान न्यासी श्री रणजीत सिंह कोठारी ने तुरंत इस भवन के लिए आर्थिक सौजन्य की स्वीकृति प्रदान की एवं वर्ष 2009 में यह भवन बन कर तैयार हो गया। जिसका नाम 'अहिंसा भवन' रखा गया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं युवाचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में इस भवन का उद्घाटन हुआ। यह भवन भी बहुआयामी भवन बन गया है, जिसकी काफी उपयोगिता है।

मेरे मंत्री पद के कार्यकाल के दौरान जैन विश्व भारती में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का वर्ष 2009 का चातुर्मास सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मैंने अनुभव किया कि इस दौरान जो भी राजनेता, पत्रकार, आफिसर, प्रशासकीय कर्मचारी या यात्रीगण आए वे सब परिसर को देखकर बहुत ही प्रभावित हुए। इसी दौरान स्टेट बैंक आफ इंडिया के चेयरमेन श्री ओ. पी. भट्ट ने भी आचार्य प्रवर के दर्शन किए एवं पूरे परिसर का परिभ्रमण कर इसे बहुत ही अद्भुत एवं मनमोहक बताया।

मंत्री के रूप में अनेक बार काफी दिनों तक मुझे परिसर में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे यहाँ के आध्यात्मिक वातावरण, शुद्ध पर्यावरण एवं सुविधाजनक आवास से नित नई ऊर्जा प्राप्त हुई। पूज्यवरों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

पूरे 4 वर्ष के कार्यकाल के दौरान अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया एवं प्रधान न्यासी श्री रणजीत सिंह कोठारी का मार्गदर्शन, सहयोग एवं स्नेह प्राप्त हुआ। संयुक्त मंत्री श्री बिजयसिंहजी चोरड़िया का परिसर को संवारने में काफी योगदान रहा तथा वे मेरे काम में विशेष सहयोगी रहे। मुझे समस्त पदाधिकारियों एवं स्टाफ का भरपूर सहयोग मिला। मैं जैन विश्व भारती में अपने कार्यकाल की सुखद स्मृतियों को कभी नहीं भूल पाऊंगा।

THE MOST IDEAL PLACE FOR SADHANA IN THE WORLD

I am a 59 years old businessman from Orlando Florida, USA.

I spent one month in Ladnun, Jain Vishva Bharati for learning and practicing Preksha Meditation. I found that Jain Vishva Bharati is not just an excellent place for sadhana but the most ideal place for sadhana in whole world. Its atmosphere is like an Ashram and everyone around me are very cooperative. It is out of this world.

On top of everything my experience of learning and practicing Preksha Meditation has been more than rewarding.

Every morning I was practicing Exercise and Pranayam. In two weeks I had an experience of my life. I was so happy to have this opportunity that is difficult to express by words. The bright light I showed in meditation that can't found in this outer world. It was more glorious than lightening 1000 lights.

My overall experience is so positive, rewarding and fulfilling that I like to recommend everyone to take time out of worldly life and experience one month Sadhana. In Ladnun, Jain Vishva Bharti.

Kamlesh Shah
6 August, 2012

जैन विश्व भारती के पदाधिकारी एवं कार्मिकगण

कृती कर्मी

श्री मूलचंद गुर्जर

किसी भी संस्था और संगठन के समर्पित कर्मी उस संस्था के प्राण होते हैं। समर्पित, सेवाभावी और निष्ठावान कर्मियों का सहयोग संस्था के दीर्घकालीन विकास को सुनिश्चित करता है। जैन विश्व भारती ने भी ऐसे अनेक कर्मठ कर्मियों के सहयोग से निरंतर विकास की ओर कदम बढ़ाए हैं। इस संस्था में कार्यरत एक ऐसे ही समर्पित और निष्ठावान कर्मी हैं : श्री मूलचंद गुर्जर।

श्री मूलचंद गुर्जर 1979 से जैन विश्व भारती में समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं। संस्था से जुड़ने के प्रारंभिक समय में इन्होंने तुलसी अध्यात्म नीडम् में जागरूक कर्मी के रूप में कार्य किया। जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के विभिन्न शिविरों की समायोजना, विहार के दौरान चारित्रात्माओं की सेवा आदि कार्यों में भी उनकी उल्लेखनीय सेवाएँ रहीं हैं। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' को घर-घर पहुँचाने में भी उनका सहयोग रहा। जब भी किसी कार्य के लिए संस्था को उनकी सेवाओं की आवश्यकता हुई, उन्होंने हमेशा तत्परता और समर्पण भाव से निर्देशित कार्यों को संपादित किया। संस्था के प्रति उनकी निष्ठा एवं सेवा भावना प्रशंसनीय है। वर्तमान में वे जैन विश्व भारती के मुख्य भंडारगृह में आदेशपाल के रूप में कार्यरत हैं। जैन विश्व भारती श्री मूलचंद गुर्जर जैसे निष्ठाशील और सेवाभावी कर्मी को पाकर गौरव की अनुभूति करती है।

एक पाठक के हार्दिक उद्गार

'कामधेनु' के हर अंक जी साज-सज्जा, सामग्री, पदाधिकारियों के मंतव्य, जैन विश्व भारती की गतिविधियों की झांकी सभी कुछ मोहक, पठनीय एवं दर्शनीय होता है। मेरी दृष्टि में बहुत कम संस्थाओं की गृह पत्रिका इतनी भव्य, उपयोगी एवं पठनीय होती है। गृह-पत्रिका के रूप में 'कामधेनु' अनुकरणीय एवं विलक्षण उदाहरण है।

आचार्यश्री तुलसी के सपनों को इस कामधेनु संस्था के लिए ऐसी उत्कृष्ट एवं मनोरम पत्रिका की उपयोगिता दिनोंदिन बढ़ती रहे और इसके माध्यम से जैन विश्व भारती के इतिहास, इसके व्यापक आयाम, इसकी संसाधन-शक्ति, इसकी मनोरम छटा आदि को पत्रिका ज्यादा खूबसूरती से प्रस्तुत करती रहे, यही अपेक्षा है।

पत्रिका में किसी एक भवन, किसी एक प्रवृत्ति, किसी एक कर्मचारी के बारे में विस्तृत सामग्री दी जाए ताकि जन-जन को पता लगे कि यह संस्था आज जिस मुकाम पर पहुंची है उसमें किन-किन का योगदान रहा है।

पत्रिका निश्चित ही छपाई, कलेवर, सामग्री, चित्र, संपादकीय कौशल की दृष्टि से अनूठी है, उत्कृष्ट है, पठनीय है एवं संग्रहणीय है।

- पुखराज सेठिया, दिल्ली

भविष्य की हास्य मुद्रा

JAIN VISHVA BHARATI
an institute dedicated to human values

Ladnun Office : Post Box No. 8, Post - Ladnun - 341 306, Dist. Nagaur, Rajasthan (India)
Phone : +91-1581-222025/080/977, Fax : +91-1581-223280
Email : secretariatldn@jvbharati.org
Website : www.jvbharati.org

Kolkata Office : Mahasabha Bhawan, 3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001
Phone : +91-33-2235 9800, Fax : +91-33-2235 9799
Email : secretariatkol@jvbharati.org